[illegible] अमइ सकल
चराचरपदार्थनी प्ररू
पणा टालइ तद्भेम।
कहीइ तदनाकारक पवि
त्राहिंकरी जगनाथ कहा।
हीइ तथा थावरजंगम
नइराख व इकरीना
थज ग बं ०सक
लप्राणी प क्रीडीआ
दिकनेह नीरख्यानाप
लणहार उपदेशक भगवं
ततणइ कारणि जगबंधु
तथा सव्यजीवनी रक्षाध
र्मकहइ ते भणी तथा दुः
कर्मीजीवनइ मार्गलगा

ए०॥ श्रीवीतरागाय नमः॥ अथ नंदिः इति कः शब्दार्थः उच्यते । नंदनं नंदिः प्रमोदो हर्ष इत्यर्थः ।
नंदिहेतुत्वात् ज्ञानपंचकाभिधायकं अध्ययनं अपि नंदिः इति प्राणिनः अनेन अस्मिन् वा इ
ति नंदिः । जयउ इंद्रीयविषयकषाय तथा घातिककर्मशत्रु पराजयात् । जगजी० जगमांहि
जीवनी योनिना । वियाण० विज्ञायक जाण तथा धर्मास्तिकायादिक जीवोत्पत्ति तथा स्वभावादि तथा
प्रश्रवनादिकनां नाम जाणता । जगगु० जगशब्दइं षट्‌द्रव्य विचारक रूप इति भणी तथा यथाव

ए०॥ ॐ नमो श्रीवीतरागाय । जयइ जगजीवजोणी । वियाणओ जगगुरू ज
गाणंदो । जगनाहो जगबंधू ज[•]यइ जगप्पियामहो भयवं १ जय
इ सुयाणं पभवो । तित्थयराणं अप[•]च्छिमो जयइ । जयइ गुरू लोगाणं ज

उइ ते भणी जगबंधु कहीइ जगमां सर्वउत्कृष्टपणइ प्रवर्त्तइ । जग० नव्यलोकनइ पालवा थकी
पिता । तथा पियाम० पितामहो कहीइ ज्यां ते सव्वसत्ताणं अहिंसालक्षणो पितारक्षणतो भोय
धर्मो भगवया पणीओ तो भगवंत धर्मपिता । धर्म ते हनउ उत्पादनहार भगवंत पितामहो प
वं सव्वसत्ताणं भगवंत पितामहो भवंति । तस्मात् भगवंत जगनउ पितामह कहीइ । १ जयइ०
सर्ववत सूया० श्रुतानां आचारांगादि सिद्धांतनां प्रभव तत्व अर्थ थकी तीर्थंकर थकी । सास्त्रना प्रभ०

स्थितसकलपदार्थ त्रिकाल
आगलिकहइ । तथा परव
हा आगलि कहइ तणि का
रणि जगगुरु कहीइ । जगा
णं० जगशब्दइं संज्ञी पंचें
द्रीयत इल गवंत इंद्रप
दी उइत था दर्शनादि
इतेसां न[•]ल वइस्करी
निसंज्ञी पं चेंद्रियजी
वनइ आणंद ऊपजइ । त
णइ कारणि जगाणंदो क
हीइ । जगना० जे जगद्धिमन
करणहार । तथा जगशब्द
न सचराचरपदार्थनी म
वीपरूप १ णाकरइ ते।

संघनगर । दंस० सम
कित विशुद्ध निर्मल ते रू
प निर्मल । रथ्या० सेरडी
वाट बइ जे संघनगरनइ
संघ माहि संघनगर था
यउ भ्रूनइ । भद्दं० क
ल्याण हउ अखंड
०नग र[•] चा रित्र
रूपश्रा का रगढ
बइ जे सं घनगरन
इ ध । हवइ कर्मरूप व
इरी हणवा वक्षाय ते
भणी चक्रनी उपमाइ
[illegible] नो वर्णवीइ बइ।
[illegible] पउम [illegible] यमतउ रूप

उत्पत्तिस्थानक । तित्थ० तीर्थंकरमांहि चर्मतीर्थंकर । जयउ पूर्ववत । गुरु० हलुकर्मीजीवनइ मार्गि
इलगाडइ ते भणी जगगुरु कहीइ । महप्पा० अत्यंत सकतिवंत बलवान । महा० कर्मस्फोटन शा
त २ भद्दं० कल्याण हउ वर्द्धमाननइ । सव्वज० सर्वलोकालोक आत्मकनइ केवलज्ञानइ करीन
इ उद्योतकरइ । तेहनइ जण इ कर्मरज धोइ फाटकी तेहनइ । भद्दं० भद्र कल्याण होउ जिण वीरन

यइ महप्पा महावीरो २ भद्दं सव्वज गुज्जोयगस्स । भद्दं जिणस्स वीरस्स । भद्दं सु
रासुरनमंसियस्स । भद्दं धुयरयस्स। स्स ३ गुणभवणगहण । सुयरयण
भरियदंसणविसुद्धरत्थागा । सं[•]घनगर भद्दं ते । अखंडचारित्तपागा
रा ४ संजमतवतुंबारयस्स । नमो सम्मत्तपारियल्लस्स । अप्पडिचक्कस्स ज
ओ होउ सया संघचक्कस्स । ५ भद्दं सी लपडागूसियस्स । तवनियमतुरयजुत्तस्स

चक्रना तुंबा० तुंबानी आरा । नमो० नमस्कार हउ जेहनइ सम्मकितरूप पारि० परिधि बइ । जे संघरू
प चक्रनइ । अप्प० अप्रतिहत चक्र नहीं अनेरु संसारमांहि । जओ० जय हज्यो । सया० सदा काल । संघ० सं
घरूपीया चक्रनइ ५ पहवइ सिंघत उमार्ग इस्वालइ ते भणी संघनइ रथरूप वर्णवीइ बइ । भद्दं० कल्या
ण हउ सील० अढारसहस्स सीलांग रथरूप पडाग० उंची कीधी बइ शीलरूप पताका धजा तप काल

इ । भद्दं० कल्याण हउ
वीरनइ जे सुरासुरनम
स्करणीय । भद्दं० कल्या
ण हउ । धुय० आठ कर्म
धुणकनइ ० वीर वर्णवि
णकी हवइ जे हनुं
स्थापउ सं घतन
गवंत न[•]उ अन
त्तरसंघ व र्णवीइ
बइ गुण० मूलगुण
उत्तरगुणादिकरूप अ
स्थिरस्थादिक मइ नवन
घर । संघनगर मध्ये ठे
गह० समोद । सुयण० द्वा
दशांगीरूप रत्नइ सरिखे

नेही [illegible] ला
[illegible] डस [illegible] त्रिण्दा
[illegible] का पद्मा मुंडलिका
यप विगरूप गुण०
उत्तरगुणरूपवाधता
पणाम तिरूपमध्यनी
कसरी ७ सा०श्रा
वकजन ध मधुक
रया ज जि ण०
जिनरू प सूर्यनि
इतेजइ करीविक
श्वधर्मदेशनाइंकरीन
इं बुध० जगा घाप्य
कमल संघ०संघपद्म
कमलइलखि तथासं
घरूपकमलनइ नहं
०नइ लवउ समण०सा

नीमात्रीइछानिग्रह नियमजावजी तत्र० तपनियमरूप तिबिडवरंगमघोस संघर० संघरथप्रा[illegible]ति
दनइतइ जउ तगउ भगवंतइ सुस्थितिवइगामीवात तथाई चर्यपणा समस्तयोग्य तिलणीलग ता
सज्झा० सज्झायवावनादि पंचवइ ज्ञार नइजसुहु नंदिघोषवारमा तिनीवाजित्रनानादजेहनइ जेह
लणीमहार खघोगालिसूर्यघोषजेहनइ ६ संघतउ संसारमध्यरहितानिर्लेप तथाक्रमरणाधीनीकल्या

संघरहस्स भगवउ सज्झायसुनंदि घोसस्स ६ कम्मरयजलोहविणिगायस्स
सुयरयणदीहनालस्स पंचम हव्वयथिरकन्नियस्स गुणकेसराल
स्स ७ सावगजणमहुयरिप रिवुडस्स संघपउमस्स जिणसूरतेय
बुद्धस्स संघपउमस्स भद्दं सम णगणसहस्सपत्तस्स ८ तवसंजमम
यलंछण अकिरियराहुमुहदुद्धरि रसनिच्चं जय संघचंद निम्मल सम्मत्तविसु
द्धजोण्हागा ९

धुनागणनासमोद्धातरूपदस्तपणेषडी ८ सिंघश्रीतलगुणिकरीचंद्ररूपवर्ण
वीइवइ तव० तपसंयमरूपमृगलंछण अकि० अक्रियावादीरूपराहुजिनवचननइ अस्तवाग
रमवादी दिपणि सुविश्वासवीनसकइ नित्य जय० जयवंतउ संघनिर्मल बीजी दर्शणमांहिजिम
तारामांहिचंद्रमानिर्मल तिमभिथ्यात्वमलरहित सम्म० समकितचंद्ररूप तेज तथा समकितरूप
विसु० निर्मल जोण्हा० कांति जसंघरूपीयाचंद्रमानइ ९

तिलणीकमलनीउप
माइवषाणीइवइ कम्म
०कर्मरजकर्दमइजन्म
कारणतिजलोघ०द
ढउसंसारतेमाहिथीनी
कल्पउ ए तलनइसम
गुइवी स मयकूपा
मीन इ श्र रुउ
जलसे सा रमाहि
रहितकः दुरहितउ
तिलणीनिर्गतासुय०
श्रुतआचारांगादिकरू
पसिंघकमलनीदीर्घ
नाले पंच० पांचमहा
ताहिथिर 2 निरूपधि
र० स्थिर चितथिर

द मिथ्यात्वअप्रवेसन त
थासम्यगू अविपरीत
दर्शनिपरम मोक्षांग
तिरूपीउत्तरप्रधानथं
उ ताकरवउवइ दढ०
इढनिःप्रकंपमिथ्यात्व
अप्रवेसरूढपदीर्घ
गाढा० च काहपी
चउपणा रहीत वगा
० समर्था पीठ० पीठका
तेउत्तमनमिकायस्य
इहमंदरगिरिपरूव
झ्मयपीरदढादिविशे
षणासहि [illegible] ता सिंघमे
रुगिरि [illegible] म [illegible] मण ग
[illegible] निव [illegible] यपीढ

पर० परतीर्थरूपयहातेहनीमुखकांति तथाकुमतिनमाउइ तव० तपतेजइ करीनइ दीप्तलेश्या
नाणुज ज्ञानजणिलोकमांहि भणानिकरीउद्योतकरीनइ भद्दं० कल्याणहोउपशमवंतसिंघस्य
यनइ तेजवंतनइ १० हवइसंघनइ समुद्रनीउपमाकरीवर्णवीइवइ धिइ० धृतिअंह्यात्मस्व
लरगुणउत्तरगुणनइ विषइ वेला० आत्मपरिणामविशुद्धवधता तेरूपणीवेलिष्टवृद्धिलक्षण
परिणतिणइकरीसहित सज्झा० स्वाध्यायादिरूप एवंकर्मविदारणलक्षणक्षमसमर्थ ते

परतित्थियगहपहनासगस्स तव तेयदित्तलेसस्स नाणुज्जोयस्स जए भ
द्दं दमसंघसूरस्स १० भद्दं धिइवेल २ परिगयस्स सज्झायजोगमगरस्स
अक्खोहस्स भगवउ संघसमुद्दस्स। रुद्दस्स ११ सम्मद्दंसणवरवइर दढरू
ढगाढावगाढपेढस्स धम्मवररयणमंडिय चामीयरमेहलागस्स १२ नियमूसिय
कणयसिलायलुज्जलजले

इढसंकादिदोषरहित तथापरतीर्थिकवासनाप्रवेशकाइथा
हि धम्म० विशिष्टधर्मप्रधानरत्नइकरीनइमंडित धर्मेहिध्यान मूलगुणउत्तरगुणा इहांमूलगुणाते
सुवर्णमियामेखलाकडणजेहनइ ऐवउ प्रधानरत्नतेउत्तरगुणजाणिवउं १२ मेरुनीशिलातिम नियम
०इ सिंचवीनियम० पच्चखाणादिक त[illegible] इंद्रियदमरूप जेसोवननीकसिलाप्राय उज्वल० उज्जलजा

रूपमगरमश्रादिउत्त
रवइ अक्खो० परीस
हआदिकपनइ जनइ
अक्षोभ्यअकंपित न
ग० ईश्वर्यादिकगुण
इकरीनइ सुजनीक
संघ० संघ समुद्रव
तु रुद्द० वि स्तीर्ण
११ हवइ सिंघनइ
मेरुनीउपमाइंकरी
कहीइवइ जिनणीध
र्मनइ विषइ अकंप
णी मेरुपर्वतनीउप
मादीजइवइ सम्म०
सम्यग्दृष्टीवज्रवतइ

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

[illegible]वाला
[illegible]इऊरइ
वइ [illegible] गुफाइजि
मरत्नमितिमषेलोमहि
आदिलछितरत्न दया
मइगुफाइ १४ संवर०
प्रधानसंवरकूपजले
करीका। मेरूपमइल
पछाल ५ नाकरइ
पगा०श्र वइजिममे
रुनइविषइतीऊरणा
विराजमानधरा सा
वग०श्रमणादिश्रावक
घणा स्वाध्यायपंचविध
इत्याइकरइ मोरूपमे
रुविषयजिममोरना

लमानविवरण कूटजेहनइविषइ जिमइहमेरुपर्वतइं कूटनंतेतेचपणइं उजलापणइंताखुरपणुं
दीप्तापणउ तिमसंघतमेरुं विवरण कूटतेवातश्रुतनअध्यवसायनीहरण श्रुतअध्यवसायस्थागाने ब्रह्म
लपतसमयरकर्ममलटालवाथकी जलेतउजरीत्तरस्तगार्थसंतारवइकरीतासुरदेदीपमान नंदन०
सुरासुरविद्याधरादिप्रमोदपामइ वण०अशोकादिवृक्षनवसमूह लतानउविस्तार तिहांपुष्पफला

तचित्तकूडस्स नंदणवणमणहरसुरभिसील गंधुद्धमायस्स १३ जीवदयासुंद
र कंदरुद्दरियमुणिवरमइंदइन्न स्स हेउसयधाउपगलंत रयणदित्तोस
हियुहस्स १४ संवरवरजलपगा लय वज्ञरपरिरायमाणहारस्स साव
गजणपउररवंत मोरनचंतकुहरा। स्स १५ विणयनयपवरमुणिवर फुरंतवि
ज्जुज्जलंतसिहरस्स विविहगुणकप्परुक्खग फलभरकुसुमाउलवणस्स १६ नाण
वररयण।

वइतिमदयानाक्लोनकसांभली श्रावकनं श्रउवक्तोडिरामअच्छमइ १५ विणय० विन
यकरीनइनम्रीभूतप्रधानरूडेंइ फुरंत० दीपमानवीजलीवत दीप्इवीजलीजिमतिम सिह०साधुमां
हिशिष्यरहूत विवह०बीजासाधुतहनइंवांछितवस्तुनापमाडवउ तथाकिंतूतांफल फल०लब्धवा
नजिमवनतिम १६ नाण० ज्ञान वर०प्रधानदीप्तरत्नेकरी॥

हितमनोहर सुरभिस
ताव्जेगंधात उद्धमा।
यप०आपूर्ण संघमेरुनि
हां नंदनातसंतोषतिहां
रहियां साधुवारित्रीया
आणंदप्रमोदपामइवइ
आमोसहि साहिल
छितम नो हरसु
यशील तहजगं
धिवाप्त १३ जीवप०जीव
दयारूपमनोज्ञगुहा
बोहगुफातहनइविष
इ मुणि०ऋद्धिरूपसं
घआकीर्णहिउस०गु
फामहि 3 हेतुनांस

वेयमाइंवर्षवीइ सय
यपनिरंतर १९ पढिम
गाथानउअर्थहिवेमध्य
फलाश्रुनथी सिघनइ
भ्रुमिइ तउआतीर्थंकर
हेवतिहांणी तीर्थंकर
नुंनामली जइ अनइं
वांदीइ ब इ २०
२१ मात्री प हतीर्थ
करहवज्ञा पइ अन
इगणधरातग्रंथजोडइ
गणधरातहांणी जेह
हेंशासनातहनागण
धर [illegible] उधार
[illegible] २३॥

कंत०कांतिविरूजिरिन्नमइ विम० निर्मलस्फटिकायुग वंदा०तहनइवांउ विण० विनयनेंनमी

हिपतंतकंतावरुलियविमलचूलस्स वंदामिविणयपणउ संघमहामंदरगिरि
स्स १७ गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुगंधितवमंडिउद्देसं सुयबारसंगसि
हरं संघमहामंदरंवंदे १८ नगररहचक्कपउम चंदसूरसमुद्दमरुंमि।
जोउवमिज्जइसययं तंसंघगुणा यरंवंदे १९ वंदेउसभंअजियं संभव
मभिनंदणंसुमइसुप्पभसुपा। सं ससिपुष्पदंतसियलं सिज्जंसंवा
सुपुज्जंच २० विमलमणंतयधम्मं संतिंकुंथुंअरंचमल्लिंच मुणिसुव्वयन
मिनेमिं पासंतहवद्धमाणंच २१ पढमित्थइंदभूइ बीएपुणहोइअग्गिभूइत्ति
तइएयवाउभूइ तउवियत्तेसुहम्मेय २२ मंडियमोरियपुत्ते अकंपिएचे
वअयलभायाय मेअज्जेयपहासेय गणहराहुंतिवीरस्स २३ निव्वुइपहसा
सणयं

निव्वु० सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रमोक्षमार्गतहजनिश्चत्ति [illegible]एकहीज प्रवचनशासनआगलिकहिवउ॥

नइं संघम० सिंघवा
उवर्षाआश्रमणादिक म
हा०महामंदरभूत १७
गाथा१८मी तथा१९मी
नाअर्थनथी संघ०जि
ममेरुनइं कंउतिम
गुण०व त्न रगुण
हिउ ल क उमी
ल०श्री। ल काल
प्रतिलेखण दिनसूत्र
पठणआद्यस्वाध्यायते
सुय०द्वादशांगीरूपशि
षर संघणतसिंघमहा
मंदिरथतिनेवांदुं १८
जंउवमेजइ [illegible]

नंदीसूत्रबाला

[illegible]आसामिथआ
[illegible]तेलि०कोसीगोत्रसं
डिल्लआर्यसामाचारीउ
वन्नविकनइ २८ तिसमु
०पूर्वदिशादक्षिणपश्चिम
एत्रणिदिशि समुद्रता
ध आनइ उ त्तरइ
विताढ्य ल गि वा
स्तारीको त्तिं दीव०
द्वीपसमुद्र नांग्रहमांण
यस्वोजिणइवंद०वांदु
आर्यसमुद्र अक्खु०ऊ
अक्षोभसमुद्रवतगंभी
रबुद्धिवंत २९ भणग०
भास्रपाठककथकः क

जयइ० जइवंतवर्त्तो सया० सदाजिमध्ये सव्व० सर्वभावउपदेशपा कुसम० परतीर्थकप्रवचनातास्तषां

जयइसयासव्वभावदेसणायं कुसमयमयनासणायं जिणिंदवरवीर
सासणायं २४ सुहम्मंअग्गिवेसाणं जंबूनामंचकासवं पभवंकच्चायणं
वंदे वच्छंसिज्जंभवंतहा २५ जसभद्दंतुंगियंवंदे संभूयंचेवमाढरं भद्द
बाहुंचपाइन्नं थूलभद्दंचगोयमं २६ एलावच्छसगोत्तं वंदामिमहागिरिं
सुहत्थिंच तत्तोकोसियगुत्तं बहुलस्ससरिव्वयंवंदे २७ हारियगुत्तं
साइंच वंदिमोहारियंचसामज्जं वंदेकोसियगोत्तं संडिल्लंअज्जजीय
धरं २८ तिसमुद्दखायकित्तिं दीवसमुद्देसुगहियपेयालं वंदेअज्जसमुद्दं
अक्खुभियसमुद्दगंभीरं २९ भणगंकरगंझरगं पभावगंणाणदंसणगुणा
णं वंदामिअज्जमंगुं सुयसागरपारगंधीरं ३०

रगं० क्रीडाकलापकारी झर० ध्यानवं
त पभा० दीपावकप्रवचन णाण० ज्ञानादिगुणवान मंगु० मंगूआर्य सुय० सूत्रपारगामी धीरं० साहसी
क ३०

मदेनाशनं जिण० जिन
श्रीवीरस्वामीनुंएशासन २४
सुह० सुधर्मस्वामि २५
संभू० संभूतमाढरगोत्रे
भद्द० भद्रबाहुप्रावी
नगोत्र थूल भद्रगो
तमगोत्र २६ एलाव
०एला व छ गोत्र
महागि रि सुहस्ति
चं वासिष्ट गोत्र तद
नंतरकोशीयागोत्रब
हुलशिरिवयं सरि
वयं० सरीखुवयस्तुग
लनाईबलिस्सह २७
हारि० हा ध्रु रियगोत्र

पडिलेहणा २५ गुति३
३ अतियहा४ विवक
रणां३ भंगियभंगा नं
गवजाले कम्म० कर्म
प्रकृतिभेदवाउधनिन
कर्मप्रकृतिनाभेदप
तप्रस्व० पर्णम
धप्रकृथ ५ धाना
नो ध्रु जा। ज्जु०नवु
अंजनतस्यवर्णअति
कृष्णनही धा३० तद
नाधातुसरीषी दह
नीऽयलाकांति पुणत
[illegible]वो मुद्दि० जिद्दवी
[illegible]लापवयपनी

वइरं० वइरस्वामीनइ तव० तपादिगुणेकरीवज्रवतदृढ ३१ रक्ख० समर्थक्षमावंतरिख० आस
नरक्षक चरि० सर्वचारित्रवंत अणु० अर्थशरणादिप्रवर्तिशाषी ३२ णिच्च० नित्यसदाकालदूर्वली
वानांनइविषइउद्यमपर खम० क्षमावंतसरि० मस्तकइकरीनइवांदु पसण्ण० जदुर्ग्रंथसनमन

वंदामिअज्जधम्मं तत्तोवंदेयभद्दगुत्तंच तत्तोयअज्जवइरं तवनियमगुणे
हिंवइरसमं ३१ वंदामिअज्जर क्खिय खमणेरक्खियचरित्तसव्वस्से
रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओजेहिं ३२ नाणंमिदंसणंमिय
तवविणएणिच्चकालमुज्जु त्तं अज्जानंदिलखमणं सिरसावं
देपसन्नमणं ३३ वड्ढउवायग वंसो जसवंसोअज्जनागहत्थीणं
वागरणकरणभंगियकम्मप यडीपहाणाणं ३४ जच्चंजणधाउसमप्प
हाणमुद्दियकुवलयनिहाणं वड्ढउवायगवंसो रेवइनक्खत्तनामाणं ३५
अयलपुराणिक्खंते कालियसुयआणु

लोत्पलकमलतेहसरीषीशरीरनीकांति त
धारनआरीषीकांति निहा० निभ तथारनइरेवतीनक्षत्रनाम ३५ अयल० अचलपुरिथकीनीकली

३३ वड्ढ० वर्द्धिवो
विकनउवंस जसव०
किंत्तीवंशआजनुंवं
सनउजसविस्तार्यउ
वइ नागह० नंदिल
क्षमाश्रमणनउशिष्य
आर्यनाग हस्तिके
हवउ ६ वाग०
संस्कृतशब्दव्याक
रणंच प्रश्नव्याकरण
सात करण० पिंडवि
शुद्ध्यादिककरणसत्री
वतू पिंडविशोधीधम
मई पभावणा १२ पडि
मा १२ इंदियप निरोहो

धे। कालि० द्वादशांगीनाअर्थधरा। बंभ० ब्रह्मद्वीपिकशाखा अनइ सिंह० इसेनामइं आचार्य जाणीनइं। वाच० वाचकपदइ ऊतिमइ पहुता ३६। जेसिमा० जेहनाकीआजताइ। अणु० अनुयोग अर्थादि

ओगिय धीरे बंभद्दीवगसीहे। वायगपयमुत्तमं पत्ते ३६ जेसिमो अणुओगो
पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि। बहुनयरनिग्गयजसे। ते वंदे खंदिला
यरिए ३७ तत्तो हिमवंतविक्क म धिइपरक्कममणंते। सज्झायमणंत
धरे। हिमवंत वंदिमा सिर सा ३८ कालियसुयअणुओगस्स ध
रए धारए अ पुव्वाणं। हिमवंत। खमासमणे वंदे णागज्जुणायरिए ३९
मिउमद्दवसंपन्ने। अणुपुव्विं वायग त्तणं पत्ते। ओहसुयसमायारे। नागज्जुण
वायए वंदे ४० गोविंदाणंपि नमो। अणुओगे विउलधारणिंदाणं। निच्चं खंतिदया
णं परूवणे दुल्लभिंदाणं ४१ तत्तोय भूयदिन्नं निच्चं तवसंजमे अनिव्विन्नं पंडियज
णसामन्नं वंदामि संजमविहिन्नू ४२

परूव० परूपक बीजाउ जयि इस्युइंद ४१
निर्विण० थाकइ नही। सामा० संयम विधिनो जाण ४२।।

कालि० आचारांगादि
कनाअर्थधारक। धा
रए य पु० द्वादशपूर्व ३०।
धारक। ३९ मिउ० अ
ह्लादिकरइ। अणु० अ
नुक्रमइ। वाय० वाचक
प्रामरुश्र २ ओह० ओ
घ आगमि० व कनाग
० नागार्जु नवांचि
कनइं वांदु ४० एकता
लीसमीगाथानो अर्थ
फलावी नथी वृत्तिम
ध्ये तथापि। अणुओ०
अर्थ विपुल विस्तीर्ण
नोधारक तेहनाइंद्र

कप्पय० प्रवर्तइ छइ।
अज्जा० आजलगइ।
अड्ढ० दक्षिणार्द्धभरत
क्षेत्रनइं विषइ बहु
नय० घणानगरनि
ग्ग० विस्तरिउ जस
पउमान वांदु० त
हनइ वां छुवं
दि० खंदि लाचार्य
नइ ३७ विक्क० विदा
रवंत धिइ० धीर्यप्रा
क्रमसामाचारीइं न
माअपरिमनबलनउ
धणी सज्झा० स्वाध्याइ
बहुली ५ करइ ३८

वर० उत्तम। कण० सोवर्ण। तव० तापविउत्तम उत्तम वर्ण तिसा चंपक वर्ण। विउ० विकसित। वर० उत्तम

वरकणगतवियचंपग। विउलवरकमलगब्भसरिवन्ने। भवियजणहिय
यदइय दयागुणविसारयधीरे ४३ अड्ढभरहप्पहाणे। बहुविहसज्झाय
सुमुणियपहाणे। अणुओगियवरवसभे। नाइलकुलवंसनंदिकरे ४४
भूयहियअप्पगब्भे। वंदेहंभूय दिन्नमायरिए। भवभयवुच्छेयकरे सी
से नागज्जुणरिसीणं ४५ सु मुणियनिच्चानिच्चं। सुमुणियसुत्तत्थ
धारयं निच्चं। वंदेहं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणा तच्चं ४६ अत्थमहत्थक्खाणिं
सुसमणवक्खाणकहणनिव्वाणिं। पयईए महुरवाणिं। पयओ पणमामि दूसग
णिं ४७ तवनियमसच्चसंजमविणयज्जवखंतिमद्दवरयाणं। सीलगुणग
द्दियाणं। अणुओगजुगप्पहाणाणं ४८ सुकुमालकोमलतले। तेसिं पणमामि

णावि। महु० माधुरवाणी। पयओ० प्रयत्न संपूर्ण। प्रण० सुवांदुं छुं ४७ सील० सीलगुणे करीनइ व्या
प्त तथा सील० अढार सहस्रशीलगुणे करी। गद्दि० व्याख्यात। अणु० अर्थवान जुगप्रधान ४८ सुकु० म

उअभ्यास्यउ सज्झा० घना
पदार्थ कहइ। नंदि० सदा
इ ४४ भूअ० जाथाइबा
लाइं तेअर्थ मह० वाणी
इं विशेषइ बोलाइं तेम
हा अर्थ रखा णिं पात हनी
खाणि सु स म० विद्वा
ह्याया गप० म्हू लाह
र गुणा सं यु क्त। वरका०
अर्थ पूर्वइं। स्वर्न उक्ता।
रव्यानक हि कह० इष्टार्थ
कथनं तेहना जेहनइ
निव्वा० समाधिरूप। पय
ओ० प्रयत्नइ प्रणमुं तमुं
दूस० दूसगणी आचार्य
[illegible] नथा पइ० प्रकृतिस्व

न [illegible] पमनउ
गलित [illegible] आरण
[illegible] ४३ गाथा ४४
मानु अर्थ [illegible] लाव्या नथी
वृत्तिमध्ये [illegible] पि [illegible] ६०
अर्थविस्तरक प्रमाणमध्य
[illegible] सुमु०
सुष्ठु ज्ञान अणु
० अर्थ। [illegible] क्रम
[illegible] रन समण
वृक्षलक्षणइ ४४ भूयहि
० जीवनइं हितप्रदरूप
वा समर्थ। सीसनाण० ज्ञा
ननागार्जुनरषिनउ ४
५ सुमु० सुष्टुरूडउ जा
णवउ। निच्चानिच्चं पदार्थ

ऊप्पनउ । कुमार ते सुकुमाल
वर्नरोंकबायपडोजुगप्रमा
णधराइं सानरा निवर
मिउ तउ हिइ सुग्रनइ कि
चिन्नतिल मात्र नालदोइ
इमसांलल १ तइ नारद
सुकुमाल सं वर्नमेघ
समी पि इ गयउ
जिमसु ग सेलीइं
कहिउ ति सकहिउन
दा सुकमला वर्नमिघनइ
अहंकारी कोधउ तउरूं
सुकमला वर्नमिघजउसुग
सेलीया नइ विस्तउं नवा
उउं तउरूं पछनइ लइ इ

ना सुकोमलतेनलो तल । पाणय पग था प्रवचनीना पडिछग तिगछ्यांतरना ते अनेरा गछ थकी सूत्रार्थनइ
लेवा आवइ तेहना सइ जेहना पगवणम्या ४६ तथा जो बाकरइ सुगछ तथा परिगछना साधु
ना सइ नमरूं ४९ कालि॰ आचारांगादि अर्थ सेप्या धारणा सनवान् । णाण॰ ह वइ ज्ञानस्वरूप
कहउं बउं ५० इति श्री स्थिविरावली संपूर्ण ३ । तज्ज्ञानस्वरूप सुशिष्यनइ कहिइं । पण कुशिष्यन
इ नकहिइं । ते कुपरिक्षा घडांनूं दृष्टांत ते अल्पपरिक्षनइ नकहिवउं ते सणी श्रोतार १४ कहीइ छ
इ । सेलघण॰ गाथा इ पकशिष्य आश्री योग्य अयोग्य कहिया छ्वइ सामान्य थकी परषदा योग्य

लक्खणपसत्थे । पाए पावयणीणं । पडिछगसएहिं पणिवइए ४९ जे अन्ने
भगवंते कालियसुयआणु- ओगिए धीरे । ते पणमिऊण सिरसा ।
नाणस्स परूवणं वोच्छं ५० थिरा- वलियासम्मत्ता । ३ सेलघण १

इ स्वाति वीवादल करी गाजइ वीजइ वर्षवा लागउ सात दिन लगि पणि सुगसेलीउ ते मेघउ नही पवइ ।
निवर्ष्य ते सुकमला वर्नमेघ पवइ सुकमला वर्नमेघ अनइ नारद ऋषि बक्षइ तेणा सुगासेली नी शिष्या
या कार सुगसेली न भेदउ सात्मा भलदल वाला गउ तत्र लक्षमानी हो ते बिस्तला ज्या तेणइ दृष्टां
तइं कुशिष्यनइ कुणइ एक आचार्यइ अनेक प्रकारी जणाव्या पणि ते शिष्यनइ पकुपद नागउ तदा
आचार्य थाक्या तदा अनेरउ आचार्य अभिमान वहइ किस्युं एउ जाति बइरूं पदनइ सीखवी मिउ होकरि

श्योग्य कहिवइ सेल
पसेलसुगासेली ३ सं
गा जि वरउ अलद्य । घ
णपसुकमा वर्नमिघन
ते अमरद कल्पनाइ । ते
सूगासेलनी रइ नारद
ऋषिकल दष्ट्यआ
वउसुक ला वर्नमि
घना सु ण गा।
या जिमे घ इमक
हइबइरूं साथरन
इ । विषमहंकहगरनइ
उदकइकरीनइ लदउ
नउबापउ उसुगासेली
उतिऊण मात्र इम
सांभली सू गमेला।

कांगरहितउ । एक आष
उसंपूर्णविघटधा तम
धिहिकाणउ । तजिहां
भूमिकाइं बाप्प उदोइ।
याहां लगइ श्रवइ नदी
उपायउ तितलइ श्रवइ
पाणीवहीं जाइ । तिम
श्रोतार व्या ख्यान
जांहां ल ग इ सां
भलइ तां ल गइ सं
बंधामला। नजांणइ
व्याख्यान छकीउठइ ते
तलइ सर्व वीसरी जा
इ । ते सांगा सर्वथा अ
जोग्य १ एक पाषती।
कांणउ घडो तेणइ अ
ढजल नपाखिलागउ

मि । तणि आपपमोढिउ निरंतर तणावइ । तउ दिन तसपउहज । तदा सुकमला वर्नमि परिते आचार्यनिं मां
नगलिउ । पणि ते अयोग्य ऊशिष्य लदाइ नदी गुरु वचन इकरीनइ द्वइ सुशिष्य कणइ दृष्टांत तिम
काली भूमिकाइं मेघ दृष्टइ वोउइ तथा घणइ लीजइ पांणी राषी रहइ ते पाणी राषी गोष्पमादिक निःपत्ति
करइ । तिम सुशिष्य गुरुनइ घणउ श्रमन करावइ अनइं जे अर्थादिक कहइ ते धारि । तेणइ धर्मइ प्रवर्त्ता
वइ १ कुडगण घडानइ दृष्टांतइ श्रोतार घडा बइ एक नवउ अनइ एक जीर्ण जे नउ पवेघडा २ बइ ते
मध्ये नवउ तलउ अनइ जीर्ण घडाना तेह हत कहीइ बइ वासपउ १ अणवासिउ २ तलि इवी १ पाडुइ
इव्यउ २ वसु १ अणवसु २ पालद ६ इम शिष्य नालद २ नव उ नवदीक्षित अज्ञात प्रवर्षनउत

कुडग चालणि ३ परिपूणग ४

लय इहि तथा रहइ तिम सांभल्या मध्ये अर्द्ध तथा अल्प विचारणा कहीस कइ तथा धरइ २ बीषउ
घडउ तसरीषा सांभली मध्ये चउथउ भाग वीसारइ अनइं घणं सांभरइ ३ आधउ घडउ सर्व जल गहो
रहइ जिम तिम जे सांभलइ ते सर्व सांभरइ पण वीसारइ नही एवंध घडा सरीषा शिष्य जांणिवा २ चाल
णी जिम चालणी मांहि पांणी घातनां वेगि नीकली जाइ तिम सांभलतउ जाइ अनइ वीसारतउ जाइ
गहिनपणइ तथा सांभलवा आवइ अनइं तिहां जमांहि जाइ । ते अजोग्य शिष्य तथा प्रथदा जाणवी व्रव
इ जोग्य प्रथदा कहीइ बइ तथा तापसनी नाजन वंसनानी परइ बिंदुमात्र श्रवइ नहीं तिम सर्व अर्थादि
क ग्रहइ धरइ ४ परिपूणग॰ सूघरीनउ मालउ चालनां काष्ट अणं कीटकादिकनइ राषइ अनइ घृतस
र्व गरी जाइ । तिम श्रोतार आचार्यादिकना अवगुण ग्रहण करइ घीउ पनउ लिइ जांणी नइ बिहु दइ अ

दनइ नंदीसूत्र आदिना
अर्थ कहिवा जीर्णदीर्घ
कालना दीक्षित नइ तथा
बुधा तेहना २ बइ प्रकार
वासु अवासु । तेहा वा
स्या २ लद । सुमति इवा
स पउ ऊम तिइ वासउ
प वंवा स्या नालद
२ जां णि वा तेह
नामलद २ ४ वस्पउ
अणवस्य ३ । तमध्ये ऊ
मति वस्या बइ सुमति अ
वस्यानइ यथायोग्य जां
णानइ अर्थ कहिवउ तथा
घडा २ तेहनाध ल द प
कहिवइ कांणउ २ एक पा
षती कांणउ २ एक बोषउ

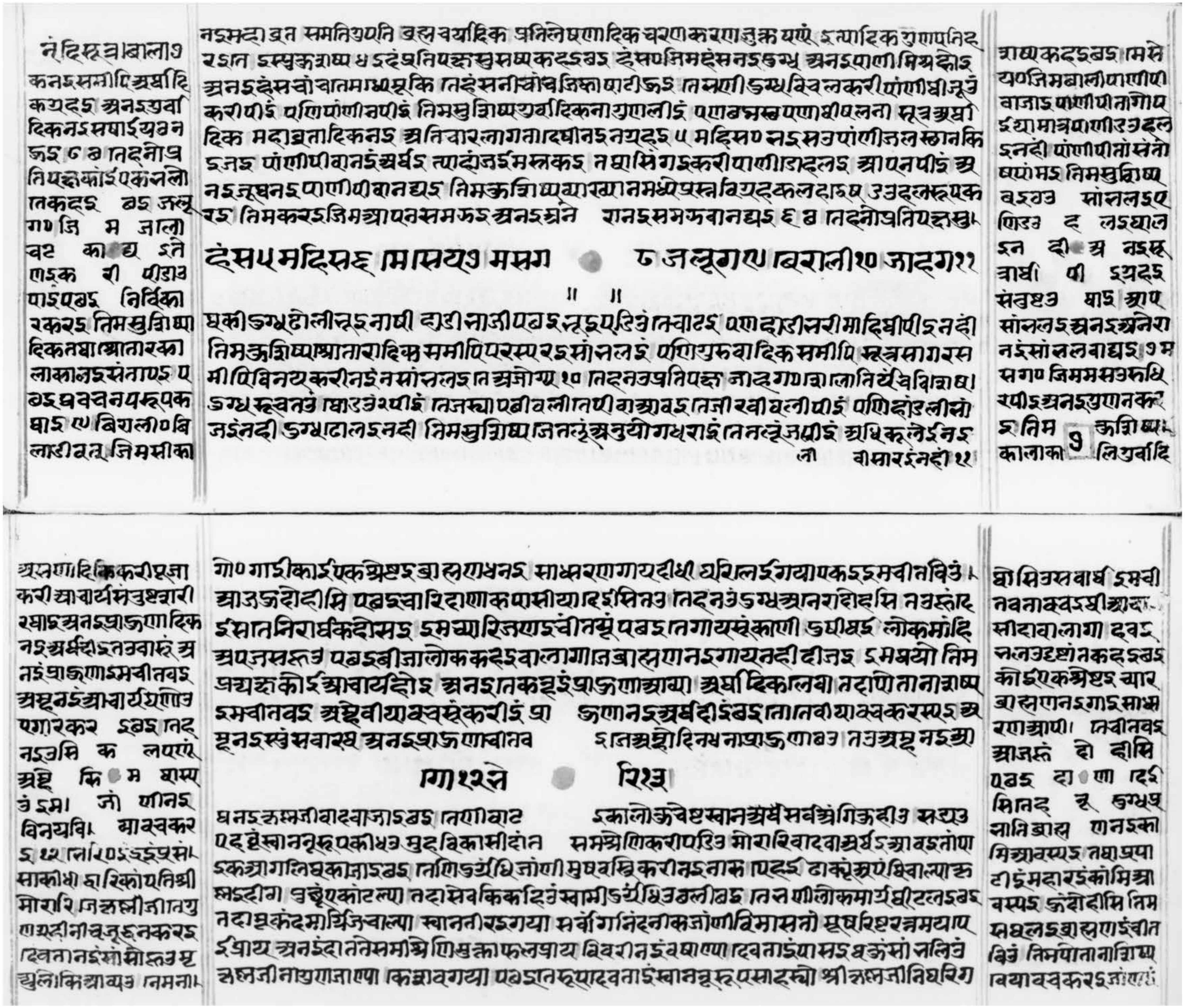

नं दिस त्राबालाउ
कनइ समीपि अर्थादि
कउदइ अनइ गुर्वा
दिकनइ सघाई यउ न
कइ ८ ७ तद्नोप्र
तिपक्ष कोई एक नलो
तकदइ ७इ जंबू
गा० जि म जाली
वट का य इते
णइक री पीडाउ
पाइ एवइ निर्विका
रकरइ तिम सुशिष्य
दिकतथा आतारका
लाकालइ संताएइ प
छइ प्रवचनयक्षपक
घाइ ए विराली० वि
लाडी वत् जिम सीका

नइ महाव्रत समिति गुप्ति वस्त्र वय्यादिक प्रतिलेषणादिक चरणकरणानुक्रम यणं इत्यादिक गुणप्रतिद्द
रइन इस्युक्रशिष्य धइदं प्रतिपक्ष सुसण्य कहइछइ हंसण जिम हंस नइ छग्ध अनइ पाणी मिश्र होइ
अनइ हंस चांचमाहि मूकि तइं सनी चांचजिह्वा खाटी हुइ तमणी छग्ध विवलकरी पांणी थीजूउं
करी पीइं पणि पांणी नपीइं तिम सुशिष्य गुर्वादिकना गुणलीइं पणअवगुण पणीवपलनो सूत्र अर्था
दिक महाव्रतादिकनइ अतिचार लागताद षानइ नयहइ ५ महिस० नइ सउ पांणी जलस्थान कि
हजइ पांणी पीवा नइं अर्घइ त्यादांजइ ईम स्तकइ नघामिंग इकरी पाणी डोहलइ आपनपीइं अ
नइ जूघनइ पाणी पीवा न घइ तिम कुशिष्य व्याख्यानमध्ये प्रश्न वियहकलहारुप उउहतकूयक
रइ तिम करइ जिम आपनसमझइ अनइ अने रानइ समझवा न घइ ६ ७ तद्नोप्रतिपक्ष सु।

हंस५ महिस६ मासय७ मसग ● ८ जलूग९ बिराली१० जाहग११

॥ ॥

घकी छग्ध दोलीइ नाषी हाडी नाऊी पछइ स्पृहइ पडिउं त्विं चाटइ पण हाडी नरीमाहि थी पीइ नहीं
तिम कुशिष्य आतारादिक समीपि परस्पर रइ सांभलइं पणि गुरुवादिक समीपि सूत्र सागरस
मीपि विनय करीनइं न सांभलइ त अजोग्य १० तद्नउप्रतिपक्ष नाहगपा घा त्वानियें विहिराघा।
छग्ध स्हवतउं षाउडे रपीइं तिजस्या पछी वली तणीवा आवइ तजीरवी वली पीइं पणि हांडली सी
जइं नहीं छग्ध ढोलइ नहीं तिम सुशिष्य जितलूं अनुयोगधराइं तितलूं उपाइं अधिकूलेई नइ
नी वीसारइं नहीं ११

त्राष्य कहइछइ मसे
य० जिम बाली पाणी पी
वाजाइ पाणी पीता गोप
ई था मात्र पाणी उञ्हल
इ नहीं पांणी पीता सं तो
षपांमइ तिम सुशिष्य
वइ ७उ सांभलइए
णिउउ ह लइ घाल
इन ही अ नइ सू
त्रार्थ पी इ अहइ
संतुष्ट उ थाइ आप
सांभलइ अनइ अने रा
नइं सांभलवा घइ ७ म
सग० जिम मसउ रुधि
रपीइ अनइ गुणन कर
इ तिम कुशिष्य
कालाका लिगुर्वादि

असणादिक करी पूजा
करी आचार्य संतुष्टकारी
रषाइ अनइ ब्राह्मणादिक
नइ अर्थ दीइ तव वाहं अ
नइ ब्राह्मण इम बीनवइ
अम्हनइं आचार्य घणाउ
पगारकर इछइ तद
नउमि क लपणं
अम्हे कि म वाम्य
उं इम। जो घीनइ
विनयवि। आस्वकर
इ १२ ला२० इ जइ प्रसं।
साकीधा हारिकोयति श्री
मोरारि जिन स्वामीजीन यु
ण अम्हीनीच जूहनकरइ
दिवतानइं सां सोहूतमू
र्युलिकि आवयउ नमना।

गो० गाई कोई एक श्रेष्ठि ब्राह्मणधनइ साधारणगाय दीधी घरिलई गया एक इइ सबीनविउं।
आउजदोहासि पछइ ब्राह्मणा कयासी या दइसितउ तद्नतंइ छग्ध आनराहो हसि नतस्कांद
इसात निराधक दोसइ इम आरिजणइ चीतव्यूं पछइ तेगायसंकाणी छघीवइ लोकमांहि
अपजसहूउ पछइ बीजालोककहइ वालागा तेब्राह्मणनइ गायनदीहीजइ इमवयो तिम
प्रत्यक्षकोई आचार्य होइ अनइ तेकहइं ब्राह्मणआव्या अर्थादिकलया नहीपोतानाशिष्य
इमचीनवइ अम्हे वीयाक्ष सं करीइं ब्रा ह्मणानइ अर्थदीइंछइ तोतेवीयाक्षकरस्यइ अ
म्हनइ संसवारय अनइ ब्राह्मणाचीतव इतेअम्हे दिनधनाब्राह्मणछउ तेअम्हनइ आ

गा१२ने ● रि१३

घनइ कृष्णजी वाहवाजाइछइ तेणीवाट इकालोकचेष्टस्थानअर्थसवंग्रीगिकहीउ सयउ
एद हंस्थाननूरूपकी धउ मुहविकामीहोतं समग्रे णिकरापडिउ मोरारि वादवा अर्थइ आवइतोण
इक आगलि घकाजाइछइ तेणिईर्प्ये धिजोंणी मुषवस्ति करीनइ नाक पइइ हाकूं आपं विवाल्या कृ
ष्णइहीगा उत्कृष्टएक दोटल्या तदासेवक किकहिउं स्वामी इर्य्य धिउ ठलीछइ तेस णीलोकमार्य्य वीटलइछइ
नदाष्णकं दमार्थ्य जिवाल्या स्वाननी रहगया सर्वागनिंदनाकजोंणी विमासनो सूघविष्टरन्नमयाए
ईप्राय अनइंदा तेते समाश्रेणि सुक्का फलपाय विवरी नइं वषाण्या देवताइं या सइ प्रकृं सो चलितउं
कृष्णजी ना गुणजाण्या किन्नावगया पछइतेदपादेवताइं स्वानत्रू रूपसाहस्यो श्री कृष्णजी निघरिग

घोमितउसवार्य इसवी
नवता क्ष वइषीआदा-
सीहोवा लागा हवइ
चलउद्दष्टां तकहइछइ
कोइएक श्रेष्ठइ च्यार
ब्राह्मणनइगाइ साधा
रणआपी। तेचीनवइ
आजरूं दो हीसि
पछइ दा ण दइ
सितइ रू छग्धइ
जाति ब्राह्म णनइका
मिआवस्यइ तथा प्रा
टीइं महारइं कांमिआ
वस्यइ कुंदोहीसि तिम
सघलइ ब्राह्मणइं चीत
विउं तिमपोतानाशिष्य
वियावचकरइ जांणइं

जावक्कन[illegible]मादेईनइंषं
तुल्लीधउ [illegible]मघरणइमाण
स्यइ इच्छआपीषंउ२लीधु
भेरीकभावतलेइ पछ
इ छइसभवाडइभेरी
वजाडी भे रीशाहलेला
करइ प णि रोगनजा
इ प छ इ श्रीकृ
ष्णजीने री तोरिग
या कृष्ण जीइ सला
ष्ठानकइ आवीभेरीवजा
वी भेरी लेला शाहकरइ
पछइ आपण पइ वजावी
तउ ढिंभेरी लेला शाह
करइ पणिरोगनजाइं
तदाश्रीकृष्णजीकोप्या थु

यादेवताइं देउ तां नरी अश्वरत्न लोक देषतां अपहरयउ लोकपछाडि केलेई समाद यदिरीनीकल्पा तउ
लितांधायां अश्व वइरउ लोक लीध्या कृष्णजीनइं कोपचडिउ यारि कृष्णजी धाया कृष्णआ विवाद
लूडइ रजा इरउइ कृष्णजीइ बोलाविउ देअश्वकांइं लेई जाइं सालालइ जाउ सुरइ जाणीकाननि
उ थाहारि कृष्णजी दरष्यालघुं कहिउं कृष्णजी ललां युद्धनां नामलीधां युद्ध बुद्धादि तनमांन
इ तउ ढंकइ इ नहाताणइं कहिउं पछीकडइ रलडाव्यां तदाकृष्णजीलाज्या अश्व लेई जाउ पणि
इसिउंनी वयुद्धनहीकरूं त्याहारइ देव ताष्ट्रषिउ मूलगू देवमाहिं रूपकरीनइ कृष्णजी।
तीरइ आविउ देवदर्शन लोककहइजे घादइ निःफल नहुइ तादेवताइं कृष्ण निउषमा

आभी री२४

बुकारेइ मंभेरी लइ नहा सवैबोलिउ। तदनइं श्रीकृष्णजीइं विणासुं भेरी अठमलक
गपाषधलीधउ तेदेवता आराधवउ त्यारि तदेवता आविउ भेरी भेरीआपी तेभेरीनइ वजाव्या
आपी कहिउं जउ भेरीनइ घीगउ ढंढेइ सितउ पूर्व उत्पन्न रोगवतनी पउजस्यइ तणइं भेरी परइं
राषी उत्तस्थान सुघनी घाड्य तउ तिमअर्थदिसानइ लीनइ तमध्यें विरुध प्ररूपणा करसइ तदा
इस्यंउ बुषवतनी पडस्यइ कृष्ण जिनतउपमा अनइ भेरी ते जिनवचन सागतिअष्टकर्म
लोकातस्यजीव द्वारिकां ते आर्यक्षेत्र वजावका ते साधु भेरीना आपक ते केवलज्ञानी १
इ आभारी ० आहार जातिघीउ गाउलइ घाती क्षवया पारणि आव्या वजरगाडलें बोडिउ वि

नघयो कृष्णजी इवस्मा
ग्यो द्वारिकानगरी रा
गइंकरी व्याप्तजांणीम
इ भेरी १ चंदयानी आपी
गिउ पछइ छइ मासि
एक पुरुष वजावइ रो
गथाढि ल्या। जाइं अ
नइ आ गि लाउ
पडामा व इ वजा
वक मद्दा ईकषणउ
पुरुतउ परदेसी रोगी
आआव्या भेरी वाजारही
तणइ विमास्से रागवा
धस्यइं इमजांणीनइ विमा
संलघ ८ सीनइ पी
उइनउरो गजाइं वे

घीउलूहीलीधउ विवा
दनकरयउ साधसंघा
तइ घरिआव्या सुखी
थया तिमआचार्यइ
जअर्थदीध शिष्यव्या
ख्यानकरतो विस्मृतइं
घोटउं कहिउं पछइ
परिष दा उभिगइ
एकां ति रू इप
छइश्री गु रू वा
ल्याहादव रणुपीया
व्याख्यानकरतांजेउ
दिष्टअर्थ कहिउ तेम इउ
दष्टनइ विस्मृति इघो
टउंकहि[illegible]उछइत
घाडिपर[illegible]कहिवाउ

चवाउतारतांनादनी घडीहाघीपडी उदरषबोल्यउ अन्यतमाणनरसाहसंतोती हर्दइ न्यहिउ त्याहा
रिस्त्रीपणिकोपी आरंउ अनरी उरणी स्त्री साहसजाततउ तइहडी परइं नय्यहिउं त्याहारि बकाइजणवं
ढ्यो झटीइं वलगतां बकाइजणपंथां त्याहारि सर्वघाडघीइ गउं लागी बईबइवां संघातलतउ तगयो
घीउ घाकइ ललइ तलूटी वधुं लोकमाहिं अपजसथयुं सांजपडी घरिआवतां वाटइं अनेरा लिलूटाण
सर्वइव्यगयुं दुखीथया तिमआचार्यइ अर्थदीधउ व्याख्यानकरतां विपरीतअर्थ कह्यउ त्याहारिय
रिषदामध्ये गुरिकहिउं कां रइमविपरीतअर्थ कहइ त्याहारिशिष्यकहइ उहीज इस्यउ अर्थ

सासमासउ तिविहा पण्णत्ता तंज हा जाणिया अजाणिया दुविअढा
जाणियाजहा खीरमिवजहा हंसा

बइ आजपछीइम मकहिसु तदा
शिष्यबोल्या नाथ आमीपूज्यनी कइ सूंतउहइ उउजकहूंकूमि पणिमइ विपरीतपणइ भारि
उझसइ पमविज्जनइ क्रोधनचडिउं वाढवह रविपरीतस्तउ लसमउकीधउ धर्मअर्थयहणा।
दिकइ हिवंनाजया पहवा शिष्यकह्या दइवइसामान्यपक्षी परषदायो अयोग्यपणिकहइ वइ १४
जाणियाउ जाण उपंषयाषंडीनइ मनइ करी अदगघअंतःकरण गुणादोषविज्ञाप्रज्ञाणावाधीकृत्राल
वतोइदाषपरहरइ केवलगुणनइ विषइ यत्नकरइ उकंव गुणदोसविसेसण्णू अणभिग्गहियाइ
कुसमुइमएसुयसाजाणगपरिसा गुण तिलिल्ला अगुणवज्जा १ इहा गुणमिति लल्लाउ गुण आदी खीरउ

कहिउ अनइ हंवइ मु
कनइउमकहइ छइ प
हइलंकाइं घोट अर्थक
हिया त्याहारइ बकाइ
जणवठ्या लोकि विरुद्ध
याकस्यां धर्महाणिथइ
नयादिग मनकृया
हवइ उ ति पहरु
उउ ह त्ता नक
हइछइ ति मजव
ली बीजा। आहीरवी
क्षिवाषाटपि आव्या।
विक्रइ गाडलूं बोडि
उ घीउ वेचवा उतार
ताघइ उलामउ त्याहा
रइहलहलकरीनइ

उं बिनादि गुणवंत पा
मइ ।कतला इएक
पदस्थीधानइं पंडिता
भिमानिनी कांइएक
मात्रा छ। धीपदसं
साररू ह्स वमात्र
वा। ति वा २रू
बीश्रा प णीपंडि
ताइ उण २वइ घणुं
जांणपणुं जणावीन
इं आगलि थाउ ता वल्गु
लणइ तेउ विदग्धा
कहीइं तथा दुरि०दु
विदग्ध मिथ्यावीछं
हेंकारादिकइ विडं

दुग्ध जिम पांणीस्युं मिश्र छइ अनइं हंसनी जिह्वा खाटी छइ तेहणी जि तत्लइं चांचे बोलइ कालाइ
न रहइ दुग्ध वीरउइ बलघाघाइ तेहं सपांणी बोडी नइं दुग्धना बलघाणइ तिम इह० इद्र ववति
गुरुना जे गुण ग्रहइ अल्पइ दोस प अनइ दोष अपवादादिक नल्यइ जइ स्वं तेजाण सुहि ज्ञातापुरु
षम्ह तेसम जावती सोहिली १ अजाणिया० दुवइ अज्ञानस्वरूप माह अजा० सम्यग्ज्ञानरहित ज
होइ० प्रकृइ स्वकृति मुग्ध स्वभाव सइलोलालो ककहइ वइ बवयम बालिकमृग संदवाघ कुक्कु

जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा । दो- सेय विवज्जंति तं जाणसु जाणियं परि-
सं १ अजाणिया जहा जा होइ प- गइमहुरा मियछावयसीहकुक्कु-
डयभूया रयणमिव असंठविया अ- जाणिया सा भवे परिसा २ दुव्विअड्ढा ज-
हा न इ कत्थइ निम्माउ न य पुच्छइ परि- भवस्स दोसेण वत्थिव्व वायपुन्नो फुट्टइ गा-
मिल्लय दुव्वियड्ढा ३

बितइ अर्थः । जहा० यथा दृष्टांत इ नय० कोइ गुरुना घांप्या नथी पं
डथं रिश्रुपणुं डितं इस्य विकृ पंडिताभिमानी मिथ्या अहंकारइ दहि मिउ रूतउ पणि बइकस्यउ बस्तिवत्
मसकनी परइ वायइ करी पूरी जमी दोमइ बाहिरि माहि निःसार तिम ते दुवि० दुदग्धवी जज्ञाणि
वउ फूटइ० आस्फोटा करइ अस्माकं अस्माकं इत्यादिकइ गामितलोकतोला तेमध्ये बइवउरीज
वइ पणि यदा पंडितकोइ बोलावइ तदा निःसार तपरिषद विदग्ध कहीइ ३ कंच किंचिम्म नथादी

उनारवइ वराद्या उआव
पबालमृतइ थथ पत
लइ बालवेलाइ जेहहं
वणि सोपवइ तेहह
सोपइ २ यणा० रत्न
नीपरइ अ संस्का
रथा सु ख इप
ज्ञापनी या तथा अ
समासथोर त्नवत् कच
राटालया पछी जिमदहि
दीपमान होइ तिम ते
सोली परषदा समजा
वितां सोहिली २ दुविय
ढा० दु विदग्धा
मिथ्या हंकारवि

जांणीयइ पणइ करी
नइं जांणीयइ वर्त्तमा
नयादी सुय० स्मृतिक
रानइ रूपी अरूपी मूर्त्त
त्रीकजांणीइं उहि० रू
पीपदार्थ प्रमाणुया आ
दि जाणइ तथा देषा
डइमण ० गर्ल्ज
पंचें डी व यांप
तानी ष उ तिमनो
लाव उपयो २गइ जां
णइ अनइ देषइ के
वल० घातीया कर्मक्ष
यकरीनइ ज्ञान पामइ
सकललोकालोकमा
हि जे द्रव्य छइ ते हनइ

पद्मवगादी यउरियगादीय दुविदढिया उप्पाजणियानि विदानवेपरिसा १ तपरिषदा सर्व
था अयोग्य ३ पत्रिभिपरिषदामाहि पहिलीपरिषदा शतदपति अर्थकहवा योग्य अनइ त्रीजीपर
षदा अयोग्य हवइ जोग्य परषदा आगलि नंदिआदि ज्ञान स्वरूप कहिइं ते ज्ञान पंचविध पांच प्र
कारइ पन्नत्तं० प्रज्ञापितं तेणइ करी पाम्यंती र्थकर गणधरइ एतलइ तीर्थंकरइ अर्थ कह्या
अनइ गणधरइ सूत्र थकी कह्या तथा आपणी प्रज्ञा थकी तीर्थंकरइ अर्थ कहिउ अनइ आपणी

नाणं पंचविहं पन्नत्तं तं जहा आभि- णिबोहियनाणं सुयनाणं ओहिनाणं
मणपज्जवनाणं केवलनाणं तं स- मासओ दुविहं पन्नत्तं तं जहा पच्चक्खं
च परोक्खं च से किं तं पच्चक्खं प- च्चक्खं दुविहं पन्नत्तं तं जहा इंदि-
यपच्चक्खं नोइंदियपच्चक्खं च से- किं तं इंदियपच्चक्खं इंदियपच्चक्खं पं-

जांणइ अनइ देखइ मतिज्ञानादिक चउज्ञान ति: प्रयोजन केवलीनइ च्यारज्ञानउपयोग इअन
इ केवलज्ञाननउ उपयोग वर्त्तइ सप्रमादि वउ परंगदो इज च्यारज्ञान आव्या जाइ केवलज्ञान न
जाइ तं समासउ दुविहं पद्य० प्रत्यक्ष इंद्रिय मननी अपेक्षा रहित आत्मा साक्षात्प्रवर्त्तइ अव
धयादि त्रिणि प्रकार च शब्द थकी तदनात्मकनेद जाणिवा परोक्खं च० अद्रष्यार ज्ञान प्रत्यक्ष
तथा परोक्ष वइ तथा आत्मानइ द्रव्य इंद्रिय द्रव्यमन ते पुद्गलमय आत्मा थकी जुया वर्त्तइ तदथकी

प्रज्ञा थकी गणधर
इ सूत्र रच्यां तंज० त
उ पसासार्थ आभि०
अभिमुख निश्चय बो
ध हुइ ज्ञिवउं नाणं० प्र
णइ करी पदार्थ की०
हनइ वि षइ तेह
नाश्रा व रणन
इरू यो प श्रम
थीकू प नउ ज्ञा
न इंद्रि । यमनो नि
मित्तो त्या ग्यदिपि रही
वस्तु विषइ प्रगट प्र
कास बोध विज्ञाघ न
घामालि० आफणीइं
जांणीइं इंद्रियइ करी

धिज्ञानं भवप्रत्ययात
किम उच्यते परमार्थइ
उ क्षयोपशमिक ज
इ निक्षयोपशमिक
वइ तिहां योपशम
केवल न उप्र
यउ इ अ वस्थ
नावी उ मपंषी
नइ उदवा नील छि
तिमा तिम अवधिज्ञानं भव
प्रत्यय कहीइ मनुष्य
इ कहइ देव० देवनइ दि
व्य भोग तेसणी देव अ
ज्ञ भवा कल्पकी निर्य
ता तथा जम्य उपाइ कर

जिआत्मा नइ ज्ञान उदयात् परोक्षज्ञान पच्चक्खं दु० इंद्री १ नोइंद्री २ प्रत्यक्ष से किं तं० तत्र के ते इंद्रीप्र
त्यक्ष पंचविध श्रोत्रेंद्री आदि पांच प्रकारइ से किं तं नोइं० तत्र कहो नोइंद्रियप्रत्यक्ष इहां नोशब्द सर्व

चविहं पन्नत्तं तंजहा सोइंदियपच्चक्खं चक्खिंदियपच्चक्खं घाणिंदियपच्चक्खं
जिब्भिंदियपच्चक्खं फासिंदियपच्च। क्खं से तं इंदियपच्चक्खं से किं तं नोइं
दियपच्चक्खं नोइंदियपच्चक्खं ति विहं पन्नत्तं तंजहा ओहिनाणपच्च
क्खं मणपज्जवनाणपच्चक्खं के वलनाणपच्चक्खं से किं तं ओहिना
णपच्चक्खं ओहिनाणपच्चक्खं दुवि हं पन्नत्तं तंजहा भवपच्चइयं च ख
ओवसमियं च से किं तं भवपच्चइयं भवपच्चइयं दुण्हं तंजहा देवाण य
नेरइयाण य से किं तं खओवसमियं खओवसमियं दुण्हं तंजहा मणूसाण य
पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य को हेऊ खाओवसमियं खाओवसमियं तयाव

इ उहलो गवइ तेद उपवर्त्तना खओवसमियं दु० भिए० विशेष नइ अवधि क्षयोपशमिक मणू० मनु
ष्यनइ अनइ तिर्यंचनइ कहइ को हेउ० कस्य इदि तक्षायोपशम अवधि नयाव० तत् अवधिज्ञानावरणी

निषेधवाची तेणइ इं
द्री अनइ मननउ नि
मित्त कीधउ ति विहं०
त्रिणि प्रकारइ उहि०
अवधिज्ञानप्रत्यक्ष
मण० मनःपर्यव
ज्ञान प्रत्यक्ष के
वल ज्ञान प्रत्य
क्ष उ हि नाण०
विहं० अवधिज्ञान
द्विविधः भव० भवप्र
त्यय कहइ तदा तेज्ञा
न भवसिद्ध इज तथा
भव० नारकादि भव
अदयि कनाव
इ उइति दोअव

दिखइ अन्यस्थानकि न
देखइ २ वड्ढ० वर्द्धमान
वधवधतरइ दहनहा
लाकल्याण इव हर्व अ
वस्था थकी यथा योग्यप्र
शस्त अध्यवसाय नाव
इ वर्द्धमान तथादिन
२ प्रतइ ३ हि धिधाइ
अध्य व मा यम
पात इ हा य० त
था विध मा मथीनइ
अनावि हाणि पामइ त
था हाणि जामइ दिनरप्र
नइ अशुभ अध्यवसाय
करीनइ ४ पडि० उपनउं
[illegible] कांई एकालरहा

कर्म उदय आव्यां तेहनइ क्षय करीनइ अणु० उदयावलिकाइं अणआव्या उवस० विपाकन
उदय रूंधवइ करीनइ अवधिज्ञान उपजइ एणइ कारणइ क्षयोपशमिक कहीइं अथवा प्र
कारांतर कहइ छइ अह० अथवा गुण० गुण मूलगुण उत्तरगुण तिणइ विराजित अथवा गुणइ क
रीनइ तथा गुणाश्रितो गुणप्रतिपन्नः अणगा० द्रव्य भाव घर रहित तथा गुणवंत अप्रमादी अण

रणिज्जाणं कम्माणं उदिन्नाणं खएणं अणुदिन्नाणं उवसमेणं ओहिनाणं समु
प्पज्जइ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुप्पज्जइ तं
समासओ छव्विहं पन्नत्तं तंजहा २ आणुगामियं १ अणाणुगामियं २
वड्ढमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाइयं ५ अप्पडिवाइयं ६ से
किं तं आणुगामियं ओहिनाणं आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पन्नत्तं तं
जहा अंतगयं च मज्झगयं च से किं तं अंतगयं अंतगयं तिविहं पन्नत्तं तंजहा

नइ दीवानी परइ समस्त जाइ पडइ ५ अप० पडि० आविउं थकुं न टलइ केवलज्ञान आवइ ज्यां इत
अप्रतिवाई ६ से किं तं० ताहक आणुगामियं दुवि० द्विविध अंत० आत्मना प्रदेशानइ पर्यंतिस्थि
त अंतगयं एतलइ जीवनइ प्रदेशांनइ छेहइ देखइ मज्झ० आत्मप्रदेशानइ मध्ये मध्यवर्ति आत्म
प्रदेशानइ विषइ मते० स्थितं एतलइ जीवनइ प्रदेशांइ मध्ये जाणइ अनइ देखइ से किं तं० ताहक

गारनइ उहि० अव
धिज्ञान उपजइ तस
मासउ अप्रकारि कहि
उ आणुगा० पुरुष जि
हां जाइ त्यां हां करइ
जाइ लोचनवतु जाता
काढि जाइ निहां द
षइ जे। अ इसक
तउ आ व इति
हांनइ प इ १ अ
णाणु० सो कलइ वां
धया दीवानी परइ जे के
त्रिन जाइ ते अणाणुगा
मी कहीइ तथा जेणइ
क्षेत्रि अवधिज्ञान उपनउं
त्यां हां आवइ त्यां हारि

लु अंतगत अवधिज्ञान
से ज० से यथा दृष्टांतइ
केइ० कोइ एक पुरुष
पूर्ववत् दीवी आदि पाछ
लि करइ। अनइ षां
चतउ२ जा इ इत्या
दिक जो ण वउ
से किं तं ० ते कुण अं
पासओ० पा षती हे अंत
गत अवधिज्ञान से ज०
यथा दृष्टांतइ कोइ एक
पुरुष पूर्ववत् दीवी आ
दि पासओ० बिहु पासे क
री तथा एके पासइं करी
नइ परिघेला२ ग

अंतगत त्रिविध त्रिणि प्रकारइ पुरउ० आगलि मग्ग० पूठइ पछी पास० बिहु पासइ तथा एक
इं पासइ से किं तं पु० ते कुण आगिला अंत ते कुण प्रकार से जहा० यथा दृष्टांति कोई पुरुष उ

पुरओ अंतगयं मग्गओ अंतगयं पासओ अंतगयं । से किं तं पुरओ अंतगयं पुर
ओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं
वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं । पणोल्लेमाणे२ गच्छेज्जा । से तं पुरओ अंत
गयं । से किं तं मग्गओ अंतगयं म ग्गओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरि
से उक्कं वा चडुलियं वा अल ायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्ग
ओ काउं अणुकड्ढेमाणे२ गच्छिज्जा । से तं मग्गओ अंतगयं । से किं तं पासओ अं
तगयं पासओ अंतगयं से जहाना मए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अला
यं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे२ गच्छिज्जा । से तं पासओ अं
तगयं । से तं अंतगयं । से किं तं मज्झगयं मज्झगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं
वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे२

छिज्जा इत्यादि से किं० ते कुण मज्झ० मध्यगत अवधिज्ञान से ज० ते यथा दृष्टांतइ गच्छेज्जा ।
पूर्ववत् दीवी आदि मत्थए० मस्तक ऊपरि चडावी२ गच्छे० जाइ से तं० ते मध्य मध्यगत अवधिज्ञान कही
इं

छं० दीवी चडु० पर्वत
ज्वालित तृण पूलिक प
तल इ षड नउ पूलनउ बे
ढउ इ बलतउ ढलउ ह
वीत अला० उबाडउ
मणि० म णिरत्न प
ई० दी व उज्जोई०
ज्ञि रा व लाम
धोन ल ती अ
ग्नि पुरउ ०आगलि
करी पणो० हेलतउ
हूतउ गच्छे०जाइ से
तं पु० ते पुरओ अंतग
यं अवधिज्ञान कहीइ
से किं तं १२ ०ते क
कुं मग्ग ०पाछि

मध्यगत अवधिज्ञान नउ ध
णी सव्वउ० सघलइ पासइ दे
षइ संख्याता जोयण तथा अ
संख्याता जोयणतांई देषइ
से तं आ० ते आणुगामियं अ
वधिज्ञान कहीइं से किं तं०
ते कुण अ णाणुगामिउ अ
वधिज्ञान से ज० ते य
था दृष्टां त इ केइ० को
ई एक पु रु ष एगं म०
एक मोटउं जोइ० जोति अ
ग्नि नउं स्थानक ते अंगीठुं क
रइ तस्से० परिपे० ते अग्नि
स्थानक पाषती२ परिघो०
फिरतां२ ते अग्नि नइ पासइ
ज देषइ अन्नत्थ० अनेरइ ठां
णि जाइ तदा पउ देषइ जाछ०

अंतगयस्स मज्झगयस्स को पइविसेसो पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं
पुरओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ म
ग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जा
णि वा जोयणाइं जाणइ पासइ पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ
चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ मज्झग
एणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता सं खिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जो
यणाइं जाणइ पासइ से तं आ णुगामियं ओहिनाणं । से किं तं ।
अणाणुगामियं ओहिनाणं अणाणु गामियं ओहिनाणं से जहानामए
केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं का उं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंत
हिं परिघोलेमाणे२ तमेव जोइट्ठाणं पासइ अन्नत्थगए न पासइ एवामेव
अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखिज्जाणि वा असंखि
ज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ अन्नत्थग
ए ण पासइ । से तं अणाणुगामियं ओहिनाणं२ जिहां उपनूं तिहां आवइ तदा देषइ

अंतगयस्स मज्झ० अंत
गत मध्यगत अवधिज्ञान
नउं कउण आंतरउं तथा अं
तगत मध्यगत तेहनउ
कउण आंतरउ पुरउ० आ
गलु अंतगत ओहि० अव
धिज्ञान पु रउ० आगलि
संख्यात असंख्याता
जोय ण नां देष
इ तिमम ग्ग ० पाछलि
अवधिज्ञा ननइ आन
इ पास० पाषतीं अवधि
ज्ञानइ संख्याता असंख्या
ता जोयणतांई देषइ ए०
अंतगत अवधिज्ञान तिर्यं
च नइ अनइ मनुष्य नइ
पणि हुइ नदोइ मज्झगय०

ढि. [illegible] रपकजीवमूंकतां
रपकलोकबइतेद्रवाअसं
ख्यातालोकसराइं ततलुं
उतकिष्टउअवधिज्ञानीनु
दिषइंतअवधिनारकीत्री
जउघणुंदे षइ सवनप
तिउव्रउ ध गाउदिषइ
तिम वं त रज्योति
कीत्रीउ उ घणउदेष
इ विमाति कनीखउघणूं
दिषइ सउधर्मसारमंदिव
लयाकारवक्त्र१ सर्वआका
रहोइ पणि अवधिज्ञानवल
याकारहोइ २ द्रवइषेत्रन
उतथाकालनउदेषवानउ
विचारकहीइछइअंगुलनें

सेकिंतंवढमा० तिकेहउवर्द्धमानअवधिज्ञान पसछे० भलेअध्यवसायवर्त्तता वढमाणचरि
०चारित्रिवर्त्ततां विसुं० चोषइचारित्रइवर्त्तताति सव्वउ० हसोदिसि अवधिज्ञानवाधइ जाव
इयागाहा जेतलीअवगाहनात्रिणिसमयनाउपनीसूक्ष्मपणगजीवनइहोइ तिमथारीनइउ
पजइ आपणाशरीरनीकलिमाहि तिवारिप्रथमसमयआहारल्यइतिवारिसरीरनाउद

सेकिंतंवढमाणयंउहिनाणं वढमाणयंउहिनाणं पसत्थेसुअज्झवसाण
ठाणेसुवट्टमाणस्स वढमाणचरि त्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण
चरित्तस्स सव्वउसमंताउहीवढ इ१ जावइयातिसमयाहारगस्स
सुहुमस्सपणगजीवस्सउगा हणाजहन्नाउहीखित्तंजहन्नंतु
१ सव्वबहुअगणिजीवा निरंत रंजत्तियंभरिंसु खित्तंसव्वदिसा
गं परमोहीखित्तनिद्दिट्ठो २ अंगुल मावलिआणं भागमसंखिज्जदोसु
संखिज्जा अंगुलमावलिअंतो आवलिआअंगुलपुहत्तं ३ हत्थंमिमुहुत्तं

गुलनउअसंख्यातमउभागदेषइतआवलिनाअसंख्यातमाभागनीवातआगिलापाछि
लीकहइं तिमअंगुलनासंख्यातमाभागलगइदेषइतआवलीनासंख्यातमाभागनीवा
तकहइ अंगुलप्रत्येदेषइतआवलीउवरीनीवातकहइ आवलीनूंस्वरूपकहइ नेअंगुल
पृथकत्वक्षेत्रदेषइ ३ हत्थंमिमुह० हाथक्षेत्रदेषइ तिकालथकीमुहुर्त्तनीवातकहइ॥

३ समयनउजोयणसनातेसं
कोचनां२त्रीजइसमयजेव
डीअवगाहनाहोइतेवडउ
क्षेत्रदेषइ जघन्यअवधि
ज्ञानजां[illegible] १ सव्वबहुअ
गाहासव्वपअग्निकायना
जीवघणा अजितनाथ
निवारि होइ तेसमस्त
बहु क[illegible]दी इतअ
ग्निजीव ५ कइथाद
सइअसं ख्यातानाथ
देसव्याप्तबइताकतला
समइ२ पाककउकाढ
तांअसंख्यातीउत्सर्पिणी
काललगिपुहुचइएत
लाबइत अग्निकाइ
याआका शाबदेसाइ

नजोणइ तिषेत्रथकीअसं
ख्यातातथाअसंख्याता
द्वीपदेषइ ६ काल०
अवधिगोचरकालवाध
तां इव्यषेत्रकालनावा
धइ कालो० षेत्रनीवृद्धि
कालनीभ जनावाध
इअथवा न वाधइवु
द्धीए० र मा णुआ
वर्षादिक व धतांषेत्र
कालवधव स्यानजना
जोणवी वाधितमानवो
धइ ७ सुहुमो० प्रथम
कालसूक्ष्म तेथीसुप
तिहषीषेत्रसूक्ष्मातस्या
नणी[illegible]अंगुल
मात्रअ[illegible]नीश्रेणिक

दिव० क्षेत्रथीगाउलगिदेषइ तकालथकीएकदिननीवातकहइ जोअण० षेत्रथकीजोयणलगि
देषइ तकालथकीप्रथकदिवसनीवातकहइ पक्खंतो० षेत्रथकीपंचवीसजोयणदेषइ त
कालथकीपक्खमाहिलीवातकहइ ४ भरहं० षेत्रथकीभरतक्षेत्रदेषइ तकालथकीअर्द्धमास

दिवसंतोगाउअंमिबोधव्वो जोअणदिवसपुहत्तं पक्खंतोपन्नवीसाउ४ भरहं
मिअद्धमासो जंबुद्दीवंमिसाहिउमा सो वासंचमणुअलोए वासपुहत्तंचरु
अगंमि ५ संखिज्जंमिउकाले दीव समुद्दाविहुंतिसंखिज्जा कालंमिअसं
खिज्जे दीवसमुद्दाउभइयव्वा। ६ कालेचउण्हवुड्ढी कालोभइअव्व
खित्तवुड्ढीए वुड्ढीएदव्वपज्जव भइ यव्वाखित्तकालाउ ७ सुहुमोअहोइ
कालो तत्तोसुहुमयरंहवइखित्तं अंगुलसेढीमित्ते उसप्पिणिउअसंखि
ज्जा ८ सेतंवढमाणयंउहिनाणं २ सेकिंतंहायमाणयंउहिनाणं हायमाणयं
उहिनाणं अप्पसत्थेहिंअज्झवसाणठाणेहिंवट्टमाणस्स वढमाणचरित्तस्स संकि
लिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वउसमंताउहीपरिहायइ सेतंहा
यमाणयंउहिनाणं ४

इतअपद्रतो उसप्पिणि० उत्सर्पिणीअसंख्यातीलागइ तसणी सेतं
व० तवर्द्धमानअवधिज्ञानवउ सेकिंतंहाय० तिकेहउहायमानअवधि वृद्धिथकीविपरीतजाणवउ॥

नीवातकहइ जंबू० षे
त्रथकीजंबूद्वीपनइदे
षइ तकालथकीमास
जाझेरानीवातकहइवा
सं० षेत्रथकीअढीद्वीप
लगिदेषइ तकालथ
कीपृथक्व रसनीवात
कहइ वा सपुह०
षेत्र थ की रुचक
द्वीपल गिं देषइत
कालथ कीपृथक्व
रसनीवातकहइ ५ संखि
ज्ज० षेत्रथकीसंख्याता
द्वीपदेषइ कालथकीसं
ख्याताकालनीवातजाण
इ कालेमि० जकालथ
कीअसंख्याताकालनीवा

कनउ०कुआकारा४दे
खादेखइतिआवउज्जाइ
नदीप्रवहइकवलज्ञा
विजतन। णीअपडि
वाईतेस मा ०तस
मवय वि ज्ञ इका
रिज्ञांणव उ नवृद०
द्रव्यथकी जघन्यअ
नंतारूपीद्रव्यजाणइदे
खइ उत्को०उतकिष्टां
सर्वरूपीद्रव्यदेखइ॥

सेकिंतंपडिवाइउहिनाणं पडिवाइउहिनाणंजण्णंजहन्नेणंअंगुलंअसंखिज्जय
भागंवा संखिज्जयभागंवा वालग्गंवा वालग्गपुहत्तंवा लिक्खंवालिक्खपुहत्तंवा
जूयंवा जूयपुहत्तंवा जवंवा जवपुहत्तंवा अंगुलंवा अंगुलपुहत्तंवा पायंवापा
यपुहत्तंवा विहत्थिंवा विहत्थिपुहत्तंवा रयणिंवारयणिपुहत्तंवा कुच्छिंवा कुच्छि
पुहत्तंवा धणुंवा धणुपुहत्तंवा गाउ यंवा गाउयपुहत्तंवा जोयणंवा जोयण
पुहत्तंवा जोयणसयंवा जोयण सयपुहत्तंवा जोयणसहस्संवा जोयण
सहस्सपुहत्तंवा जोयणलक्खं। वा जोयणलक्खपुहत्तंवा जोयणको
डिंवा जोयणकोडिपुहत्तंवा जोय णकोडाकोडिंवा जोयणकोडाकोडिपु
हत्तंवा उक्कोसेणंलोगंवापासित्ता णंपडिवएज्जा सेत्तंपडिवाइउहिनाणं ५
सेकिंतंअपडिवाइउहिनाणं अपडिवाइउहिनाणं जेणंअलोगस्सएगमविआ
गासपएसंजाणइ पासइ तेणपरंअपडिवाइउहिनाणं सेत्तंअपडिवाइउहिनाणं
६ तंसमासउचउव्विहं पं तं दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउ तत्थदव्वउणंउहिनाणी ज
हन्नेणंअणंताइंरूविदव्वाइंजाणइ पासइ उक्कोसेणंसव्वाइंरूविदव्वाइंजाणइपासइ

सेकिंतंपडिवातीकुंअ
प्रतिपातीअवधिजानेज
द्यो०जघन्यअंगुलनउ
असंख्या तमउभाग
देखइ उ त्कृ०उ
तकि ष्ट उ आप
उलो क देखीनइ
छिणमा। त्रमादिदीव
नीपरिउल्हाइजाइ ५ से
किंतंअपय तीकुंअप्र
तिपातीअवधिजआला।

विनानहोइतेसर्वदिस
इदेखइ बाकीउदारिक
शरीरीदेसइएणिदेखइ
ताकतलाषत्रलगइदे
खइ तलषीइखइ नवाना
रकीनीअवधिज्ञान रतन
प्रभानइ जघन्यगाउ
३उता क ष्टउगाउ४
शाक र प्र भाइज
घन्यगा उ ३उत०गा
उ॥३ वालु काइजघन्य
गा॰२ उत॰१३ पंकप्र
भाइजघन्यगाउ३ उत॰
गाउ२॥धूमप्रभाइजघन्य
१॥ उत॰गाऊ२० तमाइज
घन्यगाऊ१ उत॰गाउ१
तमतमाइजघन्य॰उत॰गा

॥खेत्रथकीजघन्यअंगुलनउअसंख्यातमोभागजाणइ उत्को० उतकिष्टउजेहवउएकलोकतेहवा
असंलोकमांहिअसंख्याताखंडदेखइ कालउ०कालथकीजघन्यआवलीनउअसंख्यातमउभागजाण

खेत्तउणंउहिनाणीजहन्नेणंअंगुलस्सअसंखिज्जइभागंजाणइ पासइ उक्को
सेणंअसंखिज्जाइं अलोगालोगप्पमाणमित्ताइंखंडाइंजाणइ पासइ काल
उणंउहिनाणी जहन्नेणंआवलिआएअसंखिज्जइभागंजाणइ पासइ उक्कोसे
णंअसंखिज्जाउसप्पिणीउ अवस प्पिणीउ अइयमणागयंचकालंजाणइ
पासइ भावउणंउहिनाणी जहन्ने णंअणंतेभावेजाणइपासइ उक्कोसे
णविअणंतेभावेजाणइपास इ सव्वभावाणमणंतभागंजाणइ पा
सइ सव्वभावाणमणंतभागंजा। णइ पासइ उहीभवपच्चइउ गुणपच्चइ
उअवण्णिउदुविहो तस्सयबहूविग प्पा दव्वेखित्तेअकालेअ १ नेरइयदेव
तित्थंकराय उहिस्सअबाहिरा हुंति पासंतिसव्वउखलु सेसादेसेणपासंति २

ऊ॰ असुरकुमारनीजघन्यअवधिजोयण२५ उतकिष्टाअसंख्याताजोयणद्वीपसमुद्रअसंख्यातादेखइ
नागादिकजघन्यजोयण२५ उतकिष्टसंख्याताजोयण व्यंतरजघन्यजोयण२५ उत्त०संख्याताद्वीपसमु
द्र तिमजोतिषीजघन्यअंगुलनउअसंख्यातमउभागतेतलामाहिलिपाछिलानवहूं अवधिज्ञानअप
र्याप्तावस्थाइदोइतिमाटइ पवइनवप्रत्ययदोइ उतकिष्टउसोधर्मादिआनात्रीबीअसंख्याताद्वीपदेखइ

इदेखइ उत्को०उतकि
ष्टउ असंख्यातीउत्सर्पि
णीअवसर्पिणीनीवात
अतीतअनागतजाणइ
भावउ० भावथकीअ
नंतभावजाणइ भावउ
०भावथकी अनंताभा
वजाणइ दे खइ स
र्वभाग ज्ञा ण इद
खइनहि। न वप्रत्य
अवधिविकल्प कारिनव
प्रत्ययवीजागुणप्रत्य
याअध्यवसायरूपव
र्णवी तस्सयपतेहना
देषवानाघणाभेदजा
णवा नेरइयपनारकी
देवता तीर्थंकरअवधि

२५ मनुष्य तिर्यंचनी अ
वधिज्ञानना नाना संस्थान
इ जे संसारमांहि सघला
इं पदार्थनइं आकारइं त
मांहि तीर्थंकरनउ अवधि
सर्वदिसइ देषइ बी
जा देस इ अनइ स
विद इ एका
जीवन इ अवधि र
हइ तउ बा सविभाग
तोपम लगइ रहइ ए अव
धिज्ञान। हवइ मनपर्यव
ज्ञान कहीइ छइ। से किं त
मण० ते केहवउ मनपर्य
वज्ञान मनुष्यनइ ऊपजइ
कि अमणु० मनुष्यवेक

नीचइ रत्नप्रभा पहिला पाथडा लगइ देषइ ऊंचइ ध्वजा लगइ देषइ। त्रीजा चउथा देवलोकना देवता बीजा
नरगना छेहला लगइ देषइ। पांचमा छठा देवलोकना त्रीजा नरग लगइ देषइ। सातमा आठमा देवलोक
ना चउथा नरग लगि देषइ। नवमाथी बारमा देवलोकना देवता पांचमा नरग लगइ देषइ। हेठिली मध्य
ली ग्रीवकना देवता छठा नरग लगइ देषइ। उपिला त्रिणि ग्रीवकना देवता सातमा नरग लगइ देषइ।

से तं उहिनाणं। से किं तं मणपज्जवनाणं। मणपज्जवनाणे णं भंते किं मणुस्साणं
उप्पज्जइ अमणुस्साणं। गोयमा। मणुस्साणं। नो अमणुस्साणं। जइ मणुस्सा
णं किं समुच्छिममणुस्साणं गब्भवक्कंतियमणुस्साणं। गो०। नो समुच्छिम
मणुस्साणं। गब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। जइ गब्भवक्कंतिअमणुस्साणं
किं कम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। अकम्मभूमियगब्भवक्कंतिय
मणुस्साणं। अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। गो०। कम्मभूमिगब्भवक्कंति
यमणुस्साणं। नो अकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। नो अंतरदीवगब्भ
वक्कंतियमणुस्साणं। जइ कम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। किं संखिज्ज

नइ उपजइ। गोतम। मनुष्यनइ उपजइ। अनइ जउ मनुष्यनइ उपजइ। तउ किं समु० किं संमूर्छिम
मनुष्यनइ उपजइ। किं कम्म० कृषि वाणिज्यादिक तथा तप संयम जिहां करीइं ते कर्मभूमि कहीइ ते
हनां मनुष्यनइ उपजइ। अंतर० अंतरद्वीपना मनुष्यनइ उपजइ। एहवानइ न उपजइ। गोतम कर्मभूमि
नानइ उपजइ॥

अनुत्तरविमानना देवता
कांई एक ऊणी लोकना
लि देषइ। अवधि देवता
नारकीनी हवइ अवधि
ज्ञानना आकार कहीइ
छइ नारकीनी अवधि त्रा
पानइ आकारइ अ
सुरनी पालानइ
आकारइ व्यंतर
पडहानइ आकार
इ। जोतिषीनी झालर
नइ आकारइ विमानिक
नी मृदंग मादलनइ आ
कारइ। नवग्रीवकनी
फूलनी चंगेरीनइ आ
कारि। अ १४ नुत्तरनी
कांचूआ नइ आका

वासाउयकम्मभूमिअगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। असंखिज्जवासाउयकम्मभू
मिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। गो०। संखिज्जवासाउयकम्मभूमियमणुस्साणं।
नो असंखिज्जवासाउयकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। जइ संखिज्जवा
साउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। किं पज्जत्तगसंखिज्जवासाउअक
म्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं अपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअ
गब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। गो०। पज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भ
वक्कंतिअमणुस्साणं। नो अपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअग
ब्भवक्कंतिअमणुस्साणं जइ पज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंति
यमणुस्साणं। किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतिय
मणुस्साणं मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्सा
णं। सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्सा
णं। गो०। सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं
नो मिच्छादिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं। नो

म्मण० तिन क्षवनसा
वासद्द इतहन
इ उप जइ मि
थ्या दृ न इप
णिना क पजइ
मिश्रनइ पणि नऊ
पजइ॥

॥किं संखि० वर्षादि
ना आउषा नानइ अ
संखि० अ संख्याता
वरस ना न इ। किं०
पज्जत्त० आहारादि
क छ पर्याप्ति यपूरी कीधाइ
तेहनइ उपजइ। किं स

नंदीसूत्रबा॥१५

डाक्टरभाऊदाजीइत्याख्यस्यस्मारकम्
DR. BHAU DAJI MEMORIAL

सम्मामिछदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं उ
स्सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं किंसंजय
सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं असंजय
सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं संजयासंज
यसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअ कम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं गो
संजयासम्मदिट्ठिपज्जत्तगसम्मदिट्ठिप ज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भ
वक्कंतिअमणुस्साणं नोअसंजय सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउयक
म्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं नोसंजयासंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखि
ज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंति। अमणुस्साणं जइसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तग
संखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं किंपमत्तसंजयसम्मदिट्ठि
पज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं अपमत्तसंज
यसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं गो
अपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअम
णुस्साणं नोपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भव

किंसंजय० साधुनइ ऊ
पजइ कि असंजतिस
म्यग्दृष्टीनइ ऊपज
इ कि श्रावकनइ
ऊपजइ गौ० तम अप
म० अप्रमत्तसाधुनइ ऊ
पजइ अनेरानइ न ऊपजइ

१५

॥इड्ढीपत्त० बोलो सदी आदि ऋद्धिप्राप्तनइ ऊपजइ अऋद्धिप्राप्तनइ ऊपजइ एतावता सर्वसमासास
करीइछइ मनुष्यनइ गर्भजनइ कर्मभूमिनानइ संख्यातावरसनानइ पर्याप्तानइ सम्यदृष्टिन

इ संजतीनइ अप्रमा
दीनइ ऋद्धिवंतनइ ऊ
पजइ उज्जुमइ० ऋजुम
ती सम चय छइ दिकर
स्नु जांणइ विउलम० वि
स्तारसहितमति पणि ज
रूपिंछइ उ चा तथि उ
नगरमां हि रहइ
सोना न उ फल
इ लखिउ इ च्यादिक
विस्तारसहितं देषइ
तं समास० ते समुच्चय
चिहुं प्रकारि जांणिवउ
दव्वउणं० द्रव्यथकी ऋ
जुमती अनंताअनंतप्रदे
सीया मन पणि प्रणम्या
ऊर्ध्वलातइ नइ समुद्र

क्कंतिअमणुस्साणं जइअपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअक
म्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं किंइड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्ज
त्तगसंखिज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं अणिड्ढीपत्तअप
मत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखि ज्जवासाउअकम्मभूमिअगब्भवक्कंतिअ
मणुस्साणं गो इड्ढीपत्तअपमत्तसं जयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासा
उअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं नो अणिड्ढीपत्तअपमत्तसंजयसम्मदि
ट्ठिपज्जत्तगसंखिज्जवासाउअकम्म भूमिअगब्भवक्कंतिअमणुस्साणं मणप
ज्जवनाणं समुप्पज्जइ तं च दुविहं उप्पज्जति तं उज्जुमई विउलमई अ तं समा
सउ चउव्विहं पण्णत्तं तं दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ तत्थ दव्वउणं उज्जुमईणं अणं
ते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ ते चेव विउलमई अब्भहियतराए वि
उलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ खित्तउणं उज्जुमई अहे

कांतिकप्रकाराजनउ विस्तार पांचमाथी उतरतां रूचकप्रदेशना बिप्रतरप्रकाराजविस्तारतिहांथी
अंगुलनउ असंख्यातमउ भाग वाधतो २ तम तमा नइ वरमांत साताराजउ दलोलाबाप्रतरतिहांथी उप

यजांणिवइ ऊरी सूंदेषइ
खित्तउणं० रत्नप्रभानी ऊ
परला नाम समभूतलाइ
मेरु निमांहि आठ रूचक
प्रादेस छइ तिहां थकी स ब
बुल्लीव्यारिदिसिमंडा
णी तिहांथी बिप्रतरउ
उपरिद उ लिघकु
आदस नी अ वदि
सिवइते बि क्षुल्लुक
प्रतरबोला इतिहांथी उ
बीप्रतरअंगुलनउ असं
ख्यातमउ भाग वाधतो २
ब्रह्मलोकदेवलोकि पांच
राजनउ विस्तार तिहांथी
उपरि अंगुलनउ असंख्या
तमा भाग घटावतां २ लो

अधिक अढी आंगुलि अधिक क्षेत्र देषइ विपुल० ऋजुमती थकी निर्मल देषइ वितिमि० अधिकौ चलति मिर० कचरै रहित बिहुं देषइ ति मति मरवहित ऊंचा इहे ष इ तिरि अंभी ब(hole)उ अढी द्वीप समु इ पन्नर कर्मभूमि ३० अकर्मभूमि ५६ अंतरद्वीप इ पन्नलइ सर्व मिली ४५००००० जोयण देषइ । विपुलमती थी ऋजुमती अढी आंगुल उछउ देषइ काल उ० काल थकी पल्योपम

क्षाइं उतरतां २ क्षुल्लक प्रदेश नाम बिहुं प्रतर एक राज विस्तार तद्वीओ अंगुलनउ असंख्यातमु भाग यावतां २
तमतमा नइं स्वरमांत सातराज पुद्गलो लांबा उतरतां दनी उपहाइं उतरतां २ क्षुल्लक प्रतरा तेहु प्रतरस्तो

जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहिठिल्लखुड्डगपयरे उढुं जाव जोइसस्स उवरिमतले तिरिअं जाव अंतो माणुसखित्ते अढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु सन्नीणं पंचिंदिआणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहिअतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं जाणइ पासइ कालओ णं उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागं उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखिज्जइभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ तं चेव विउलमती अब्भहिअतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अब्भहिअतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ मणपज्जवनाणं पुण जण

नउ असंख्यातमउ भाग आगलि उपाछिल उ मन द्रव्य जाणइ देषइ तं चेव विपुल मति विपुलमती
विशेषइ निर्मलपणि जाणइ देषइ भाव० सर्व वस्तुना अनंता इ भाव पर्याय ते जाणइ देषइ ते विशु

इ । ते दशी १०० जोयणे मध्य प्रतर । ते दशी ९०० जोयण विहल उ प्रतर पतलइ समभूतल थी १००० जोयण देषइ । अधो थामि छ उन इ मनपर्यवज्ञान ऊपजइ । ति ह्रौं थी नीचुं न देषइ १० ० ०जाय णउर्द्धं दे(hole)षइ ज्ञात योतिक च क्रतांइ बइ प्रतर ७ ज्ञात मध्ये दे षिली प्रतर लगइ देषइ इ ह्रौं मनुष्यलोक मांहि उपजइ ते नीचुं १००० जोयण ऊर्द्धं ९०० जोयण जोणइ देषइ

तिम विपुलमती अढी आंगुल

किं तं अणंतर० अथ केहउ ते अणंतरसिद्धाकेवलज्ञान गुरु कहइ छइ । अनंतरकेवलना १५ भेद छइ ते कहीइ छइ । तित्थसिद्धा० तीर्थ प्रवर्त्ताव्या पछी सिद्धा ते तीर्थसिद्धा कहीइं गौतमादिक अ(hole)ति अतीर्थ थयां तीर्थ व्यापहि लाजे सिद्ध ते अतित्थसिद्धा मरुदेव्यादिक तित्थंकर० तीर्थंकर हुइ नइं मोक्ष पहुता ते तीर्थंकरसिद्धा अति० सामान्यकेवली सिद्धा सयंबु० स्वयमेव ज्ञान पामी स्वयं

लमती विशेष थकी देषइ ते मनपर्यवज्ञान समाप्तं से किं तं केवल० ते कहइ ते केवलज्ञान भवस्थ
० मनुष्य नइं भवि वर्त्ततां जे केवल ते भवस्थ केवल कहीइं सिद्ध० सकर्म बालिया ते नणी सिद्ध कहीइं

मणपरिचिंतिअत्थपागडणं माणुसखित्तनिबद्धं गुणपच्चइअं चरित्तवओ से तं मणपज्जवनाणं से किं तं केवलनाणं केवलनाणं दुविहं पन्नत्तं तं जहा भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाणं च से किं तं भवत्थकेवलनाणं भवत्थकेवलनाणं दुविहं पं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पं तं पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च से तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पं तं पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च से तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं से किं तं सिद्धकेवलनाणं २ दुविहं पं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च से किं तं अणंतरसिद्धकेवल०

ते कहइ ते केवलज्ञान सजोगी० जोग मनादिक पुद्गल ग्रहे मन वचन काय प्रवर्त्तावि ते हनउं केवलज्ञान । अजो० १४ मइ गुणठाणे होइ पढमस० अजोगीपणानइ वि(hole)द लइ समय वर्त्ति व(hole)इ चरम० अजोगी पणानइ छेहलइ । समय वर्त्तिवइ अणंतरसिद्ध० प्रथम समय सिद्धपणउं वर्त्तिवइ ते अणंतरसिद्ध कहीइं परं० मोक्ष गया घणा समा थया हुइ । ते कहइ ते केवलज्ञान सि

द्धा जाव अनंतसमय
थया थइ सर्वद्रव्य प
ट्द्रव्य विचार परिणाम
तदनी अतिआदि सकला
व वस्तु ति० वर्णादिक
ज्ञान तेज नीउतपति
आदि अ ने तेनेद न
जाण इ सा सय
० सासू त उतपउ
इ एगविहं ० एकस्व
रूप केवल नइ इंद्रिआ
दिमादिक नदी केवल
नाणेण तेणइ केवलना
णि जिने अर्थ जाण्या ते
मध्ये जे ये पद प्रज्ञापना जो
ग्य होइ ते ना सइ एतक

गणादिकइ हूउ ते नइ सिद्धा पत्तेयबु० कोई एक देखी बूझइ बुद्ध बो० आचार्यादिकनां प्रतिबोध्या थका सीझइ

नाणं। अणंतरसिद्धकेवलनाणं पन्नरसविहं पं० तं तित्थसिद्धा१ अतित्थसिद्धा२
तित्थयरसिद्धा३ अतित्थयरसिद्धा४ सयंबुद्धसिद्धा५ पत्तेयबुद्धसिद्धा६ बुद्धबो
हियसिद्धा७ इत्थिलिंगसिद्धा८ पुरिसलिंगसिद्धा९ नपुंसयलिंगसिद्धा१० सलिंग
सिद्धा११ अन्नलिंगसिद्धा१२ गिहिलिंगसिद्धा१३ एगसिद्धा१४ अणेगसिद्धा१५ से
तं अणंतसिद्धकेवलनाणं से किं तं परंपरसिद्धकेवलनाणं २ अणेगविहं पं० तं
अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव द
ससमयसिद्धा संखिज्जसमयसिद्धा असंखिज्जसमयसिद्धा अणंतस
मयसिद्धा से तं परंपरसिद्धकेवलनाणं से तं सिद्धकेवलनाणं तं समासओ चउ
व्विहं पं० तं दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाण
इ पासइ खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ कालओ णं केवलनाणी सव्वं
कालं जाणइ पासइ भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ अह सव्वदव्वप
रिणाम भावविण्णत्तिकारणमणंतं सासयमप्पडिवाई एगविहं केवलनाणं॥१॥ केव
लनाणेणत्थे नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे ते भासइ तित्थयरो वइजोग सुयं हवइ सेसं॥२॥

टइ तीर्थंकर जाणइ तेह थी अनंतमइ भाग कहइ जिन अर्थ कहइ ते तणी श्रुतज्ञान कहीइ तीर्थंकर नाम

तेबुद्धबोधी कहीइ इत्थि०
स्त्रीपणइ स्त्री नइ विद न
इ स्त्रीवस्त्रकी स्त्री विदनसी
झइ पुरि० पुरुषलिंगि०
सिद्धा नपु० कृत नपुंस
कलिंग सिद्धा सलिंग ०२
ओघारणादि केवल वेने
सिद्धा अ न ० अन्य
तीर्थि न इ वेष इ
उतइसि द्धा गिहिलिं
० गृहस्थनइ लिंगि बति
सिद्धा मरुदेवादिक एक
इ समो एकासात अणेग०
एक समय घणा सीझइ
इ से किं तं ० ते केहवउ प
रंपर पढ ० प्रथम
समयथ यउ थइ सि

आचारांगादिक पूर्वरूप
सइ एण श्रुत नवर्द्धक मति
नज्ञान तस्या मादि जे श्रुत
नणइ थइ पणि मति उपयो
ग विना इत्यत तिसार थाइ
ते मति श्रुत तद्विचार अवि
से० समसुय यमति ते ब
हु मतिज्ञा न मतिअज्ञा
न विसे ० ज दारक
रतो समय गृ दृष्टीनइ
मतिज्ञानमि थ्याद्वीनुम
तिअज्ञान इम श्रुतज्ञान।
श्रुत अज्ञान जाणवउ तद
नुसार पवि ज्ञाय इत्थइ व
इ। से किं तं० ते केहवउ मति
ज्ञान गुरु बोल्या दुविहं०
बिहु प्रकारइ सुयनि० सू

सूत्ररूप ते तणी कहीइ जे अर्थ वयण० वचन कहइ ते गणधरादिकनइ श्रुत होइ परिणमइ ते तणी वचन
जोग ते द्रव्यश्रुत कहीइ ते थकी से किं तं परोक्ख० केहवउं ते परोक्षज्ञान बिहु प्रकारि मतिज्ञान श्रु

से तं केवलनाणं से तं पच्चक्खनाणं से किं तं परुक्खनाणं परुक्खनाणं दुविहं
पं० तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च सुयनाणपरोक्खं च जत्थ आभिणिबोहिय
नाणं तत्थ सुयनाणं जत्थ सुयनाणं तत्थाभिणिबोहियनाणं दो वि एयाइं अन्नम
न्नमणुगयाइं तह वि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पन्नवयंति अभिनिबुज्झइत्ति
आभिणिबोहिअनाणं सुणेइत्ति सुयं मइपुव्वं जेण सुयं न मइ सुयपुव्विआ
अविसेसिआ मई मईनाणं च मइअन्नाणं च विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स
मइ मईनाणं मिच्छादिट्ठिस्स मइ मइअन्नाणं एवं अविसेसिअं सुयं सुयनाणं च
सुअअन्नाणं च विसेसिअं सम्मद्दिट्ठिस्स सुअं सुअनाणं मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअ
नाणं से किं तं आभिणिबोहियनाणं आभिणिबोहियनाणं दुविहं पं० तं सुअनिस्सिअं
च असुअनिस्सियं च से किं तं असुयनिस्सियं असुयनिस्सियं चउव्विहं पं० तं उप्पत्तिआ

त्र निश्री सिद्धांत अर्थ ग्रहण केलवइ मति ते द्रव्य वपइ जे ज्ञान ते निश्रित कहीइ असुअ० सूत्रार्थ विना
बुद्धि विस्तारि जे ज्ञान ते अश्रुत निश्रीत से किं तं असुअ० ते केहवउं अश्रुत निश्रित चउविह० चिहुं प्रकारइ
उप्पत्ति०

तज्ञान जत्थाभि० जिहां म
तिज्ञान तत्थ सुय० तिहां
श्रुतज्ञान जत्थाभि० जिहां
श्रुतज्ञान तत्थ० तिहां मति
ज्ञान तथा आचार्य विशे
ष कहइ छइ अभिनिबु०
मनुष्य स्वयं मेव बुझ
इ ते आभि णि बोहीआ
न कही इं सु णेइ०
सांभली इं ते श्रुत
ज्ञान मइपुव्वं बें० मतिज्ञा
न पहिलूं थइ जे श्रुतज्ञान
न इ पत तल इणि पहिली म
तिलली होइ तउ श्रुत न थ
इ पराया मइ पणि मतिवि
ना श्रुत नहीं तस्या मादि
जे द्रवी मति होइ ते द्रवउ

मऽमजांणीरोदापासिआ
वीकांस्रोस्रानादारोपिता
सुरूपीविरक्तकीधउरो
दउकदऽत्रंमअमृंसमी
कांनवर्त्तइ। स्त्रीइंकहिउं
आउपबी वरतीस। न
उत्रंजा। षि दमकरी
सति म रुं करीस
जिममा द रउपिताउ
स्समउंस मउवर्त्तसइ
नदाकालांनरइवली। अ
नूआलीरात्रिआंगणइ
सूतांधबकदई उबिउंपि
तानइंकदइ।दपिताको
लंपटवुरुषजाइ उबउर
नदाशस्त्राटिकलेईपिता

उत्पत्तिक्यादिकश्चबुद्धि। दृष्टांतदहनउविस्तारकदइबइ। पूर्वमदिठमसुयंपूर्विजेपदार्थनत्रऽन
षीदीवउ। नषीसां [illegible]उ। नषीअनुलवि। तछिणमात्रमांहिविसुरुअर्थस्वरूपअहीउतरबऽते
जाणवउं। अबादयण्दणाईनदीऊणशतमति। तबुद्धिउत्पत्तिकीजांणवी। तिदनाजांणवाना
लिदबुद्धिविस्तारवाधिविवरीनऽदइसदितकथाबंधमांडीकदीबइ। नरदकअउजेणीनगरीने
पासइनटग्रामवसइ। तिहांनरतनो भिनटावउ। तिदनीस्त्रीपरासर। तिदनउपुत्ररोदउ। तेमातायू
इ पिताइयोवाननवंनजांणी। रोदउनादनउ जांणीबीजीस्त्रीआंणी। तेरोदासूंसमीनवर्त्तिदमा।
नारसुरूस्वंसमीनवर्त्तिसमीपिआवीकदि उनउरेजांणीसमानरदामानाबोली। रोदाद

१ वणइआरकम्मयाउ। पारिणा मिआधबुद्दीचउबिदाबुत्ता पंचमाना
वलनइ। १ उग्रमदिठमसुंठं। अव इअतरकाणविसुद्धगादिअडा। अबादय
धसुआपणीबादेषाउडवारर नदापिता इंबालचे फलजोगाकृषीउप्पतिआनाम। २ लनदा

षाजांणीलाउपोवीनमउंएतलादिनस्त्रीथकीविपरीतरूआतविरासपाएदजांणीस्त्रीमिंउसमउ
वर्त्तिवालागउरोदइइसमवीतविउं। एमारहंकामस्तउरषिमेंत्रेऽमारइ। इमजांणीपितासाथिजिम
वाबिइसइ। एकउउ एकदापिताऊजेणीइंआविउं। रोदउपणिसाथिआविउ। वलेणीनीमांडणीनिर
षीपाबावल्यापिताइकोईवीसारिउं। सिपरानदीइंरोदउसूंकी। आपणनगरीमध्येआविउ। रोद
इषेसूआनूंनगरआलिषिउ। राजाकिहांगयुदउ। तएकलउतपाऽपासइआव्यउं। नगरआलषि
उंतिदांआववालागुरोदउंबोलिउ। दाराउपुत्रअनेरेपंषिजाराजाबोलिउसपामाटि। रोदउबोलिउराज

लानूस्रंकरिसि। रोदइ
कहिउंतिमकरीस। जि
ममादइइपगिइपडीस
इमसांस्रलीअणबोली
रदी। तारादउएकदा
कालइ। रात्रइपितासा
थिआगणि सूतोबाप
नइकद इ दीबाप
घरथी नी क लीको
पुरुषना पी जाइउ
इ लिपटन रत्दाबा
लकनउनिःस्टदोश्चन
सांस्रलीस्त्रीउपरिविरक्त
पणइवर्त्तइतोबालादि
कनयइस्त्रीनइनावा
लावइ १८ जांणिउंज
एबालि करोदानांका

उत्रिलाहिठिषणउ। द
विषांलाआरोपीमेंडपनी
पाउ। तलोकनइमनइ
मानीनिमइउलोकिकी
धं। प्रधाननपुरुषइनात
णिराजाप्रतिएदवउनिव
दिउं। स्वां मीनीपायउ
लोकिं क हिउंशिला
दा व ष णीइया
हिकम वं कहिउंएके
दनीबुरु इस्वामीपरो
दानीबुरुइ इमसरनउ
त्ररोदानीकथा। २ काली
नरिराजाइंमींढउमोक
लिउं। जेतलोपलनोत्ली
लिउतेतलोपलतोलीदे
जो। लोकनइचिंतातदेव

लोकनइनथीदषतउ। राजाविस्मयरूतबोलिउ। रूपहिलउंकदीइ। उजेणीआव्यउदतउ। तिवार
इकदइना दवराजआव्यउबउं। तिवारइंराजाइंबुद्धिवंतजाणिउ। राजाबोलिउ। दोबालकनादहं
नांमसूं। किहांरदइबइ। बोलिउस्तूंरोदउ। एनटग्रामिवसउं। एतलिपिताआविउ। ग्रामिगयाराजा
इंचीतविउं। धण्णमुद्दनाबइ। तमध्ये वडउकरीबापदवायोग्यबइ। इमजांणीपारषउजोइ। तिआगलि
कदीसइ। १ प्रथमकथाएदवउप्रधाननदोइनउरराज्यसुषइकीजइ। इमजांणीपारषुंजोइ। तिया
मबाहिरिमोटीसिलाबइ। तिराजाइंकहिउं। उ रूपमोकलीजेविणउपाडीसिरसहितपसादकरी
राअजोग्यमंडपरुठानकरु। तिराजानउ। आदेसप्रमाणकरवासमर्थनदी। गामलोकएक

सिल १ मिंढ २ कु उडध

जिहांरोदउनिहांआविआ। एदवउबोलिउं। द लारोदातातदरइएसाइंपदिलीचिंतास्त्रीवली
नाक्षरीबुरुइएदइचिंतातटलसइनिवारइलो। कूपतिरोदउबोलिउएकवाघआणेउतिवारइवाघआ
णिउसमीपिबांधिउनानपांणीपुराहीइं। तिनणीडर्बलनथाइ। वाघनासयथकीमानउनथाइंकनलउ
कालराषीनतलउजआंणीआपिउ। राजाइंप्रबिउंएकेदनीबुद्धि। स्वामीरोदानीराजाइंचीतव्युंएबुद्धि
वंत। ३ कालांतरइतेणइगामइकुकडउमोकलिउबीजाकुकडाविनाएकुकडोवढावयोएराजानउआ
देशआविउ। गामलोकबाहिरिपसाइवइठा। चिंताकरवालागा। रोदिकहिउंपाषरीवातबइएकमोटउ
आरीसउआणिउनिर्मलकीधउकुकडउसाहामउमोदिउ। कुकडानीपरिशाइकरी। कुकडानइरीसचपा
इंतिर्यंचिजउस्नणीआरीसासूंआफलइ। राजानिपुण्याषदीवउविढनउ। सर्वगामलोकराजापासिआव्या।

वामिलिआ। आलिविंनथ
यानदापितालोकमध्ये
गयुरोदानइक्षुधलां
गी। मंत्रइथीबादनउन
जिमइपितापासिआव्य
उ। दोपितारूंनूष्यउबउं
उस्वेघरिआ वउ रतु
त्रउअनइ जि मवउं।
सोनर इ ब इअ
हनइराजा न उमोट
उआदेशआ वोबइत
निरदवानीसकतिनथी
कोईनइतेतणीदुषीय
उंताकदउआदेशपि
नाइंवातसर्वकिदीशिद
इंकदिउंएवपसणाधरीय
इलोकनइबुद्धिदीधीजा

मोटउ डंड पडस्यइ गाम
बाहिरि मिलिया रोहउ
प्रछिउं रोहउ बोलिउ जा
उ जवाहि कवारु पाउ।
पछइ जिम कह्यउ तिम जा
णी स्यइ प बइ रोहानइ
आदे म इ उवाहि
क वा या तिणिउ
रात्रि मू उं रोहान
इ प्रछिउं लोके राजा प्
तिकहिउं स्वामी हस्तीन
बइसइ नऊवइ काइ घा
इ नवी नीहारन करइ।
सामी सा सनली उइ स्वा
मी घणे सूं कहीइं साच
मनं वेष्या रहित पसु नदा

तिवहिउं राजा आपणउ पुरुष प्रहवा तिणि कहिउं स्वामी बीजा रूकूडा विना विदाहिउ तिबुद्धि सांभली रहि
उ ४ वली कालांतरइ तिलना गाडा मोकलिया कहावीउं जेणइ मापइ लेथइ लरी लिउं तेणइ जमापइ
लरी आपयो निवारि लोकि जाणिउं राजाइ तउ नारी रूडहिउ मांडिउ चिंतावपनी रोहउ तउ वात क
दी रोहइ आरीसउ आणाविउ आरीसउ पाछलिकउं उद्दोइ तेणि पासि लरी लीधा पछइ समइ आरीस
इ लरी आप्या पाछा तिलाघाडा आव्या राजाइ चिंतविउं सविउ किम थोडा आव्या स्वामी रोहइ आरीसा
आणावी जेथइ लरी लीधा समइ लरी दीधा राजा आणबोलिउ रहिउ ५ वली कालांतरइ चीतविउं जे त
णइ गामि निर्मल सूकूमाल पालियानइ विघ इ घेप्रबइ तदना कतला एक दोरडा करी मोकलजो
नदा लोक चिंता रोहानइ प्रछिउं रोह इ कहिउ जाउ राजनउ तिकहयो जन हासूं राजजी

तिल ५ वालुय ६ हत्थि ७ अग ड ८

राजा बोलिउ कांइ रोह स्वामी पूर्णउं तदा लोक बोल्या हे देव तउ पछइ कहवाइ अछे किम कहवाइ
तदा राजा मानमाध्य यत्थि तिलोगाया मागता ७ वली कालांतरइ राजाइं चीतव्यउं जे तणइ ग्रामि
मिष्टोदग सि हस्तउ पात इस्यो वृ मोकलज्यो लोक चिंतापर रोहानइ प्रछिउं रोहइ कहिउं राजा
प्रतिजइ कहुं जे ग्रामनां पसु मनुष्य बीहकपाकइ कूप पणउ रउ इण समरी पउबइ तउ आणिउ कि
म जाइ नगरनो ढोर मनुकूधीरइ कइ अनइ रूंपडा दीकइ अनइ जातिनइ जाति वीससइ तेह
लणी ऊजेणी सुऊ पमो कलयो सहनइ गलइ बांधी ग्रामनउ जउ रूप मोकलोन उाह तिम लोक
कहिउं राजानि हृतर कीधउ तिहां राजाइं सूबिउं पके की बुद्धि स्वामी रोहानी राजा जाणी रहिउ ८

एलां झबइ मोटउ बइस
झारइ हारडा घणा बइ।
पकुरखनउ दोरडउ मो
कलयो जिम तेहनइ अ
णुसारइ हारडा वली मो
कलीइ एहवउ लोक रा
जा अनिकहिउं राजा ला
जिउ अण बोलिउ र
हिउ ६ त वा रय
बीजीर्ण ह स्तीग
गीउ मरवा सरिखउं ते
णि गामि मोकलिउ राय
एहस्तीनइ सूउ कहउ
अनइ चारिपाणी पाधा
ना समाचार देयो विण
कहइम १७ रहस्यो न
वाकह उनउ गामि

कीनइं आश्मसूतउ नथा
मांगलीक रूपान लणी स्ट
नकूपि डआणि उबइ रा
जाइं तिवात सांभली लो
कमेना षीपाछा वाल्या
१० एकदा राजा आपण
इ पासइ रा दानइ लेइ
सूताबइ उ बम उह
रगया रा जा इसा
द्दो बोला वु रोहा जा
गइ कहइ स्व उ स्वामी
जागूं बइ रस्यें वीनवनउ
क्केनउ स्वामी अजा ना पट
मध्ये लीडी कुण बाधइ उ
इ इम वीनवनउ कृत नउ
राहा कस्त निर्णय एवात
स्वामी मेंडली उवाउ बइ।

वली कालांतरइ राजाइं चिंतव्यउं जे ग्राम मध्यका पूर्वदिसि वनखंड अछइ ते पश्चिम दिसि करूजए
मोकलयो लोक सांभली चिंतापर हुआ रोहानी बुद्धि उपजावी वनथी पूर्वइ ग्राम वसउ वन पश्चिम
आणउं राजानइ कहउं राजा सांभली रहिउ ९ कालांतरइ राजाइ पुरुष मोकल्या खीर पाणी मोकल्या क
हिउं जे अग्नि विना षीर राध मोकलयो लोक चिंतापर थया रोहो प्रछिउ बुध्या लई चाउल गाढा
नीज व्या पछइ घास मध्ये सूर्यना पइ तथा घासनइं तापइ खीनां घाली घाली राजानइ आणी आप्या
पूर्व वात कही राजाइ रोहानी बुद्धि निर्मल जाणी तउ तेडावीइ जे आवह रोहा आपणी बुदइ ध्युआ
वइ पणि शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष इम आविन दी दिन नदी रात्रि नदी गाडइ नदी ता तउ नदीन

वणसंड ९ पायस १० अइआ ११ पत्ते १२ खाडहिला १३ पंचपिअरो य १४ ४

तेणी लीडी बंधइ बइ ११ वली बाजइ जामि बोलाविउ रोहा जागइ बइ हासा
मी आरस्ये वीनवइ बइ स्वामी अश्वत्थनांपां नइं चरमो तनां बइ किबीटलां बइ इम वी
नवनउ उ रोहा सुनिर्णय स्वामी यदा अयमान्न तदा बीर अश्व बिस्तं तुल्य पासइ लीकस्तनतिस्
व्यानेक हइ हा स्वामी वली रोहो सूतउ १२ पुनः बीजइ पहरे राजा बोलिउ रे जागइ कइ सूतउ स्वा
मी जागूं बइ रस्ये वीनवइ बइ दव षा ऊहलां शरीर लांबक हि पुबात किवारत उस्त तउ राजा निर्णय
करी न सकइ रोहो प्रछिउ तदनउ मिउ निर्णय दवसमाउ १३ वली सूतउ जागइ प्रलात मांग
लपइ दवांगा राजा जागिउ रोहा निद्रा लरिस्सूतउ जागइ नहीं राजाइं लीलाइं कांबसोनानी इक
रीकु सउ देइ जगाविउ कांइ रे सूतउ तबोलिउ स्वामी जागनउ छुं तउ तउसउ इरस्ये निद्रा स्वरि

वहिउ नपालउ न पंचि
न आनि न अश्वानि तेणइ
राजानउं एक हणजांणी
कं ग स्नान कीधउ मा गर
टवरी मध्यला गि वालि
उ बो कउ इ बइ वउ माब
इ चालणी धरी संधास
समए अ मावस्या
पडि वा न इ अंत
रालइ आ वइ तदा
बालइहा पइ किम
मेटाइइ म अवले वीमा
टी नउ पिंडउ लीधउ राजा
ले दिउ पाणा मकीधउ आ
गलि माटी पिंड मूकिउ
राजा बोलिउ पस्सु रोहो बो
लिउ हे देव पगइ छीइंसूं

व्याख्याणी दस्तस्यशालिणी
रूडउक्त । एणिबीजमात्र
ताद्दरा पिता विना उपरांत
निषेध तदा राजा मातान
इए गिला युरादानी एप
बुध्य आदि जोणीवरउ
ध्मनसु द ताबइते
उपा र घ ध्मन
करीधा पि उ । १४ । ए
णिध्यएको ईयामतवी
नडालई नगरनी पोलि
बाद्दरिमाया । एकधूतार
उनगरनउ आविउ । कद्दि
उताद्दरां चीलडा षाउं तु
मिउं घडाएलडकदिउए
पोलिमध्ये नजाइ त्वउउ

एउस्त नउ स्वामी वीतवतउस्तं नउ । स्युरस्वामीइ स्पउची तवतउस्त नउ । जस्तुष्ट्र कतला ना पुत्र बउ
इमकह्या राजा लाजतउ अणबोलिउ रहिउ रूणाणकरदीसबइ । कहिस्तं क तला नउ जणिउ । तक
द्दइ दवपंचमुक्का । राजा वली पूछइ । कुण रात कद्दइ स्वामी विसमणदा नवेत आश्री १ बीज अ्बेडा
लवइ रीउ पारिक्का पवे ततत णी २ त्रीज उरज कधेबी । तमइ जेकपरि ---- तदुहुंधन धेबी जि
मनीवाडलइ ३ चउथउ वीडीतमइ । जरूंबालिक निजा सरिसू तउस्त नउ । तदा तुष्ट्र लीलाइं कोबइं
करी स्हकलिउ ४ । तत णीआ पणा आचार राजनीत अतिक्रमइ नदी । तद्दलणी पांचसुं निज कपि
ता ५ इमसांभली राजा अणबोलिउ रहिउ ए कोतमाता पूछी । माता लाजी । द्दउत्र एस्पूछइ बइबइ
तेता द्दरा बाप नउ । राद्दानी वात कद्दी दि । मातारी द्दानी वात जूवानकुइ । तेसांझ्कद्दइमा

सरद्दसिल ● पणिय १५

लाइउघउं तदोडनामा पीको ध्म धूर्त्तइस क्वीलउां करस्यां पवइ बोलिउ । जमइ ता द्दरां
सर्व चीलडां षाध्मं थामन उक द्दइन घीषाध २एलउक द्दज्वाल उगाम मध्यांक्वावामांडीइ त्या
हां शण जणजिम कद्दइ तिम सदीवाल्या वस्तटइ मांध्या लाकम ल्ण चीलडां जो इस्यां क्वाता लवाते
चीलडा द्दषी बाल्या रताद्दरा सर्व चीलडां षाध्मं दीस इबइ । लवाद्दीउता स्तंताएणि सर्व षांध्मं स्त्रं
लीजइ । इमकह्यां धूर्त बोलिउ रलाइ । द्दाइक नावीलउं सर्व षाध्मं दाताइ षाध्मं सो सलद्दो थामेत
एल उसमं च्यां तघयउदारि अरूएइ उ आएवाला युतनालइ । एकएक वध्मस्या २ सु १०० ताई आण्या
उद्दइ नलइ एल इंवी तब्ब्रूदाषी मंद्दाथीजलउइ । तदा दिननी अवधिकरी काई कनगर धूर्त्त मेविउ

तानी ली । उदाहेसुवरं
गर्त स्तउ । तदा धूर्त
बाह्रिरवश्रमर्थे रूपसा
साग घं तजां [illegible] शरीर
इहारीरफ [illegible] धीधरें
तिदांधी वाहइ आवतां
रूपवंत । बोडालगु
षीवित द [illegible] र्पस्त
वली [illegible] स ताणी
आवतां धे [illegible] श्रीरूप
नंदेषीउ [illegible] लाघषुं
उ घार आव्या केणाकद्दु
वीढी करी वार वार स्तं
स्पइनि आ करतां विषयउ
पन उ पुत्र निज ताद्दरउ
पिता तत २० उउसि
रु बीजाए मचीत

DR BHAU DAJI

जामार स्यइ ते श्रेणिक
अमर्षधर तउ नी कह्यु
वाटइ वरा गरनु ठउश्रा
छ्वडी जातां वंदणपारखं
रूषबद्दी वद्दत इविनात
टिनगरि गयुं । एकश्रेष्ट
षीणइ युं बइ श्रेष्टिर
वसाणा ए आवइात
द्दन इ द्दा द्दिउइ
विवउ ति णइ श्रेष्टि
रात्रइं स्व प्नांतर दीवउं
द्दउं । जमाइ दरी बेटी रा
जाइं परणी । तिसकइ
तु एद्दज्ञात राजा श्रेणिक
नइ छन्न ए स्ताव इ । त
णइ दिन दिर संव्याना
विमाण विचणादयां

भुद्दिप्रापी तआविउ । तधूर्त्त प्रतिबोलिउ आविलाडूं आवुंलाडूं लेइ पोलिन इबारणइ मूंकिउ । लाडु
उनिकद्दिवे लाडु जाउ जालाडु जाइ नदीत्या द्दारइ युद्दाइ बोलाव्या । जाइमइ किमकह्युं रूत्नंत बोल्या
तकद्दिवरूं तु । जल्ला रूणे लिम धउंजा स्युइ त आपी स्ततउ दुष उत्साइ लाडू नइ स्तवार र जाजा कस्तं
बउं । नजाइ तु मइ सूं चालइ । इमकरीत निराकरिउ १५ रूरक्रे ति ० कोई पंषी आव रूषद्दिम्आ
व्या । आवउ फलि उद्दीवउ । इहांउपनी ऊषाई इं कयुं अवलोक्युं । द्दषइ तउ वानरनां कुल आं वइ
बइ । आंबो लेई नसक्काइ । तदा एकन इबुद्धिकउपनी । वानरसणी लष्टना षीइं रीस वउस इ
उपरि तउ पाषाणादिक नषी आंबा नाष स्यइ । तालस्युं इम चीतवी नाषइ कर्मट नइ ठष

कारक १६ ● खुडग १७

तरीएरन्न आएणारूता । तमसमर्पवइयांते श्रेष्ठि वीतवूं । एघनधाम्र एबुन्यवंतनइ उसादिश
रीरवर्णादि मनो न्यआलोवीकतमज्जो णीद्दा । घंजोडा पूछइ । तुष्ट्रिकेद्दनइ धारूणा । राजाश्रेणिकबा
ल्पातुष्ट्रारइ जइमकद्या । दर्षउघ रलेईगयु । नक्रयुक्रकोधी । तघरिआव्यांधनध्मन्यादिहरूषइ
कालांतरइतदा दीधी । इंडइंद्रणीवत्नागसे गवतां गर्भधरिउ एतलइ राजाउसेनजत कालस्त्रउ
लोके श्रेणिक तेडाविउ राजाश्रेणिक घरजावालणी नंदानइ पूछइ । अम्हेराय गिद्द पंडरकुडा । गाया
लाजइ अम्हे दिक जतो एअदति । एलषी श्रेणिकघरिस्वालिउ । नंदा कह्वि गर्भदिव लोकपिकाआविउ
तदा द्दाथी बइसी अमारि वशविउं । इमित उडोद्दलु उपनुं । तराजाइ जांणिउ स्ततुं जेण पुकष मा द्दरी सं
चालक रस्यइ । कालांतरइ जन्म उ । कल्पवृक्ष जिम ह्लध्म द्दोति अमारिवश्म व्यालणी । तेअलयनाम मा ।

कुपन उ आं वांत्रीडा नाष
इतपंथी लई षाध्मा त
पंथी नी उत्पातकी बुद्धि
१६ । खुडगए । अंगुली आ
सरणराज गद्दी । राजा प्र
सेनजत । तदनइ एएप
पुत्र । तद नुपारिस्ना
युंघर ल गाडिउ
अ लि क इसेना
वजा । वी तघाषीर
जिमताकु नराम्भ्रूका ते
पारस्व २ नब्बाकडीआ
षात्रलाना पाणीनाघडा
घरमध्येघात्या तपारसउ
इमपारस्वेंजोइ राजाश्रेणि
करा उजोध्युजाणीमान
घणांवेनद्दाइं । जाणइवी ।

नेदीसू०वा०२१
वलिवा२इनीकल्पास्ना
नकरियाकांवऽबेस्त
वस्त्रसूंकापऽगाकांब
लिज्ञनीस्तनीतडांडीव
स्त्रपद्विरीवाल्सुपटवा
लिउनी   कलिउपट
नादप   ५   पत्लाकि
डि   धा   य   उकां
दोमा   ह   रापटल
ऽज़ाइब   इपलउक
द्ऽपमादरुजल्सुकद
ऽपमासूरुवदनाराजा
ननीमचाऽगयाका
रणीउरूषऽज्ञारीरमा
छुनायुंकावलानाध
णीनऽज्ञारीरऽऊन्प

स्त्रवंतस्तंमानापूवी। श्लोकदेषाडिउ। मानाच्वालउ। दासुत्रधनपरियणपरवस्या। राजउदी
आव्यावनिउतस्या। कुलयक्कुमारनगरजावानीकजिउ। जातापलिवाडिऽनज्ञेलरूपपा
षतीघणालाकमिल्पाबऽ। कुलयशख्यालाकप्रख्याबाल्या। सुंदरीराज्ञाननीबऽ। ऽमिउआर
सराउनउबऽ। जकांबऽबऽवउकाढऽ। तदनऽघणुधनआपऽ। कुलयराजाननानफरमिउबा
ल्पउस्तेकाढउं। ताबाल्याकाढिनीनौलूंबाणआणुऊपरिनाषिउं। पबऽछडनाषिउंअग्निलगा
डीतस्ररूउपासऽनारूपनापाणीनीकस्युंआणीनरिउंऊपरिआरीबऽगंकांबऽलीधीपट्
रीलाकद्रछाराजानीरऽगयुं। संबिउव   बऊणरूंसुष्टारूसुत्रकिमपाबलुष्टनांतकदिउ
सुत्रजोंणीउबंगलीधउवबतादरीमा   ताकिहांस्वामीवनमाछिबऽ। राज्ञासाष्टोजाडी

पउ। २१। सरउ। २   २काय।

नानारवल्लगादीवा। पबऽवस्त्रबंडावीकां   वलिअणावी। वस्त्रनाधणीनऽवस्त्रअपाविउएका
रणीनीबुद्धि। २१। सरउ०कोऽसुरूषाफरऽ   जातांपककाकोडुनाबउ। तदातणऽसुरूषऽंज्ञाणि
वमाद्वापटमांदिंपवउ। ऽमजोंणिछ्यात्रिकिरऽबऽ। डर्वलषयु। विदरूपचारघणाकीध्मडाद्वाप
कविदमिलिउ। ज्ञारीस्वेष्टाऊड। नंरोगप्रजोंणिउ। पकोतल्लिईहबिउं। त्रंउलावसमां। त्यादरऽष
वल्लीवातसर्वकदी। बुद्धाकल्लवीविरस्वदीधउं। काकीडउ१जापरसस्युंपरडिउं। घडामांद्विषा।
तिउकदिउं। घडामांदफेरजा। रूंपासररूघडामध्येफारगयुकाकीडउदषाडिउ। तसुरूष
सवलषयउ। २२। काय०बनानटनगरऽकाडीसवसुरूल्लकतद्नऽंकणऽंबाध्यऽपबिउं।

आगलिकुलयऊमार
तदानेदाऽंआसरणादि
बंध्याबऽंतारूषीराजा
कद्दऽ। वबनादरीमाऽ
स्पऽआसरणनपद्दिर
ऽस्वामी   सुकलनीउ
पनी।   स्त्री   नरतार
नऽ   वि   ओ   गऽउ
दासी   ज   ऽदसुयुक्त
राज्ञान   नऽपगऽला
गीराऽआसरणआपा
घारउबवस्त्रंआव्याकुल
यध्मनघापा। पकुलय
नीबुद्धि२०। पउ०दोऽसु
रूषापक   २१   नऽउद
सुंपटप   कनऽको

सज्ञाननऽस्वध्मनज्ञो
ऽतउस्तनउ। तनणीद्दा
धीवउवटऽबांछिउ। न
घाघवज्ञाविउजिकोऽ
द्दाघीनऽतोलऽतद्दन
ऽयुणादामआपऽको
ऽंबकसुरू   षऽद्दाघी
अणाविउ   ना   वाघात्प
उंबित   ली   ना   वा
बूडीतन   ल   ऽलीद्
काढीद्दाघा   उनारीणा
घाणादियातीनोल्पानि
रनकरीराजावनिनिवे
द्दिउ। राज्ञाऽबुद्धवंतजा
णीप्रध्मनकीधउ। २५व
यणा०कानेंडराजानऽ

द्दोताद्दराज्ञानीसर्वज्ञाणऽ। तउकाद्दिकेतलाकागंवेनातटनगरबऽ। तबोलिउधर्मज्ञाणीद्द०
०००बऽगणिज्या। उबाऊस्पऽसुगयाउरूण। घणारूस्पऽनउप्राज्ञणाआव्याज्ञाणि। ऽमकरी
नराकरि। तथावल्लीद्दाल्लकनऽलदऽसबिउंकागंजेविष्टापरवलऽति। मिउंत्यादरऽसुषज्ञा
णीवह्नरघऽ। जसुष्टाराज्ञासुमध्येकद्दिउंबऽं। जज्ञालविष्णुषलविष्णु१ऽमसांल्लीकागर
नऽमनिऽमऊपनउंबऽ। जईदांजोउतसुरूषलानऽतउदर्शनकरुं। ऽमकद्दीनिषष्टकीधउ
ऊपिउआणबोलिउरद्दिउ। २३। उज्ञारकद्दऽ   नगरऽकोऽब्राह्मणस्त्रीमाबऽल्लईनीका।
लिंउ। वाद्दिणबऽसीमार्गऊताधर्ममिलिउ   तस्त्रीस्पउंलउउस्तउ। धर्मबोलिउयमादरी

उज्ञार२४गय२५   घयणा२६

समीपवन्नश। पकदाराजाऽवातकीधीमा।   द्दरीस्त्रीनऽरागवीसरऽनद्दी। नांडबोल्सु
स्वामीतधर्मबिऽस्पऽद्दो। स्वामनिधर्मबिऽस्वा   मीयदाकालउष्टारानाकर्णसऽसुष्यादिका।
करऽ। नदाज्ञाणज्यावाकसरऽबऽ। पकदाराज्ञापासऽवर्त्ततावाउअवणावलासुष्याद्दिनाखि
कासमीप्थिकीध्मराजादमिउराणीबोलीकाऽंराजानांडऽवातकद्दीराणीरीस्मावीदसउटउ
दीधउ। नदाषांसडोंमोटबाध्याराणीनीरऽआविउं। राणीऽंसबिउंयमिउंदवीतऽदेसउटउदीधउ
स्तुंज्ञाउबउंणषासडाषास्पऽतांलगऽद्दशानरकीत्रिकिरनउद्दीडीस्पराणीऽंज्ञाणपउवगोसुफ
रस्पऽपबऽराछाउ। पसांडनीबुद्धि। २६। गोल०लाघनीगालीबालकनानाकमध्येपऽवीमाता

स्त्रीब्राह्मणकद्दऽपमा
द्दरीस्त्रीवढनाराव्लि
गयाकारणीएजुदाने
डीष्टबियाब्राह्मण। बा
लिउ। कालऽंसुगजि
मउरूउ   ब्राह्मणीपू
बासुस्र   डि   मीताक
द्दिउं   सुं   ग   द्दर्थिष्
बिउंअ   न   रूंकद्दिउं
विस्वाद   ईउज्ञास्जो
डा। विस्तनाउज्ञारमध्ये
सुगदीवा। धर्मनीउज्ञा
रआनरीउपस्वरूपजो
णीब्राह्मणनऽस्त्रीदाधी
गय०वसेंतसुरनगार

पकरीतिहनीस्त्रीमराषं
वाह्मणिबइसीस्त्रीचिंता
टालीआवतांव्यंतरीबा
लीस्वामीउव्यंतरीआव
इबइआपण नइबल
मपइवाद णि इरउ
तेणइ ह उ ता
वास्त्रीला गी जाणि
उमाहराण रतारनइ
कोइवांतरीआदिलइ
वलीघरवालागी। नत्ता
रनइसंकाऊपनीदलूर
दाकइस्त्रीआवीमिलीते
व्यंतरीउतिनिठुरबोल
इकलइसयुग्यामिश्र्यावि

पिताआंत्रिकिरवालागासीनारनइदषाडी लोहत्रिलालिईतपावी गोलीइऋडाडी। गोलीइऋडाडी
गोलीतपीगलीटालीरूइ। सलीषातीतादीघइपछइघावाकादीपसीनारनीबुद्धि २७ खंभ० राजा
इसेरावरमांहिघंलगोपाविउनगरपउहवजाविपकइबबिउ। राजाउवादणवहुककरुंजांणी
कांगिखीलुरोपिउ। तिहांदारडीनउमिहबांधीस। रावरणषतीहा। रुउलीधइफिरिउ। तषीलानी
रिआविउ। सरउकापापवांधिउ। दोरउणषाव्रवंधणउबुध्यवंतजांणीप्रसनथ्रोधु। २८ खुड्ड
ग०। कहिमगरइकोईखेवाजका। ज्ञानिकौक रइतकरवाऊसल। एकवारदीमंनजाइ
इसीश्रुतजाकरइघणालोकनइजीपइत राजाइसांनलीनगरमध्ये। उदघोषकरावि
गोल। २७। खंभ २८ खुड्डग २९ म ● ग्गिइत्थी ३१
उराउलिग्गातउदषविंतापरउ्यु पबइका रणीउहषइ। तिपुरुषावगलउविसारी। त
स्त्रीनइकहिउजिकोईध्रईनइतेपुरुषनइसप उइतिहनउसरतारइमकस व्यंतरीइहाघला
बुकरीतकालस्पर्शउंस्त्रीसन्नारिनइसोपीव्यंतरीनिराकरीधीपकारणीनीबुद्धि ३० इत्थि० मूलदे
वसंघातइ। कंडरीकमार्गजातां कोस्त्रीसाघइपुरुषध्याइबइ। तिहनइस्त्रीदषीरूपवंत अतिला
षउपनउमूलदेवनइकहिउं एस्त्रीसुंसंजोगमेलइं उजीबुं नदीउमरूउउ। आरकोइमरइबइ। उ।
रूनइजोगमिलीसइ। उतावलाघइआगलिचाल्या। एकोतवनमध्येजालामांहिकंडरीकरायु। आ
पणमाधिआवीरहिउ। तिहनइकाहिउंदामोटापुरुषमादरीस्त्रीआवनमध्येप्रसूतबइ। मुझपीलाज
इबइ उम्हारीस्त्रीमोकलउ त्याहारइमोकली। तिवेरूत्याहांबइगा मस्त्रमात्ररहीआवी। तिहलादेव

उ। तदाकोखुद्रकनथ
घस्तु। तिनउनीणीइंगाघा
इंलोकइसयइ। रूर२
कहीं। तथाकमल। २९।
मउझी०। कोईपुरुष
स्वसार्या लइवाहणि
बइसी चा लिउग्रामां
तर वि चा लइस्त्री
नइत्रा री ● रइचिंता
निवर्ती वकवाहणि
षीऊतरीवगलीगईति
हांपासइव्यंतरीरूतीत
हनइतेपुरुषरूपवंतदे
षीअतिलाषउपनउत
हरूप २२ वंतस्त्रीरुह

जिमाहरनउपुत्रवीवाऊ
कहइमाहरउपुत्रस्त्रा
जकुलमंत्रीजाणीका
इकारणीबोल्याहीबाई
बिरूउहोधनविहवीलि
उआपणापुरुषछउतिक
हिउं। जप बिटउअरू
करउ क रवतनइ
विह वी ● आ एतला
रइमा ना नइउख
ऊपनुंक हिउंमाहरू
नहीएबाईनउपुत्रमाह
रइधनजोइउनषीरूअ
लगीरहीसएबालरमु
षदषीसबीजीनबोलइ
तदाप्रधानइंजांणीपु
त्रमातानइआपउ ३३

छसिबोलीधूर्तिहामाहानवागवधमणीदइ। उपधारइउगउरपसवस्तुन। एबेरूनीबुद्धि ३४ पतिपय
कस्त्रीभरतारबइ। लोकनइविषस्वतरूइ। तिहषउबउ। बिस्तकपरिस्सरिषीषीतिबइ राजाइं
सांचली। विस्मृतरूतउप्रधानइभिउ। पस्तु प्रधानकहइएवातरूइ। स्वामीहृएस्वरूपाविजाउं
बू। तस्त्रीनइमोकलु। जितादरात्रसारिनइपूर्वपश्चिमइमोकलि। मोकल्यासोऊइआव्याराजान
इकहिउंस्वामीजइपूर्विमोकलिउरूनउतिहनइजातांआवतांसूर्यसांहुंतसणी। तिकपरिहीणषी
स्त्रि। बीजाऊपरिघणी। तिराजानमानइवलीलि षमोकलिउतादूराबिपुरुषपश्चिमपूर्वइअमु
कइकइध्याममोकलयो। तिमोकल्याकालां। तरइ। वनफरमोकल्याप्रधानइतादराबझू
पई ३२ पुत्त ३३ महु ३४ सित्थ ● मुद्दि ३५
मरू०कोईकोलीरूनउतिहनीस्त्रीलंपटरू नीअन्यदापुरुषसाथइवनजालमध्येगयामे
थुनवस्त्राभडू मुरवस्तिनाजालाऊपरिमरूआंतु दीठउमाषीउडतीघरआवीबीजइदिननिज
सत्रारिनइमीणलिवाजातानउहीडइबइ। तदास्त्रीबोलीस्वामीमरूआलरूंदषारउवाल्याजल
मध्येगयातदातादषइ। सर्ववितस्त्रतीजालदीउदषाडु। कोलीइतेस्त्री। उःचारणीजाणी। उस्य। कोइ
एकप्रोहितसघलइव्याख्यानजिघांपणाकहनीउलवइनहीं। एकएरदेसीउरबलाहंसांनरजा
ताघांपणिवासणीमूकीगयु। घणिकालिआविउ। मागीजलवीझुमकगहिलुसुपस्तु। वासणीप्रोहि
तआपश्करतउंहीडइ। प्रधानजानउहषीकहइ। प्रोहितवासणीआपिउधानइजाणिउप्रोहित
इणहनाहामराष्यावइ। राजाआगलिकहिउ। प्रोहितातरिउय बिउनहिउ। राजानबोलिउ धणीबबिउ

सत्रारिनइअसमाध्यक
पनीसांसल्युं। तिउपरि
घोडीषीतितिहनइनफ
रनइकहिउंएसदामाह
उंत्याहानगइबीजाती
वइगइप्रधानइराजान
इनिविह्य उंराजाइसा
न्यउए उ धननी
बुद्धि ३२ ● पु त्रि००
कथा। रू षनइबि
स्त्रीएक जपुत्रतिहा
षीपरदेसिगयुतपिता
मुउबिहुस्त्रीधूरषीत
उत्रनीसाभरसंभाल
करतीतपुत्रजांणइउे
माहरीमाताकहीतहाते
मातानबरूवहवालागी

नंदी सूत्र बाला २३
मउजूडजोईइ। पढइछ
रूं धणीनइं अपासूं ०
कारणीनीबुद्धि। ३७ लि
खुण कोडकलिखुनइ
समीपि १००० सोनइआ
मूक्या दि त्रांतरगयु
घणाइ का लइआ।
विउं मा गी दितकें
तलारा ला टालीक
रइतआए इ। तणइमू
आरी समीपायवाकरी
कहिउं एकासतपटइमा
हरी वासणीराषीङडू
अपावि चिंतासकरइ।
जआरीइंकापडीउव
चलीधु। सोनानागोलाले

दिनमस्तइरिखानकदेषणहारासर्ववातरखी। ओदितसाघडरमवातिदिउ। वीटीसंचारतांपोदि
तनीवीटीफिरवी। मसिकरीउठकोसुरूपद्दाधिसर्वसंकेतकहीमोकलिउ। आपीकहिउंपोदि
तइमोकलिउछउं। संकेतकहिउवासणीआपीयणीमाहिमूकीउमकातदिउ। वासणीउला
षीलेइ। तीणइकहिउंस्वामीतादृरापरतीरइं। तादषीहरखुउलाधीओदितनीजीसेवदी। पर
जानीबुध्य। ३५। अंकणकोइकिसुरूपकन्हइंऊणाइसदसस्सोनइआनीवासणीमूकीगयु। घ
णाइकालइआविउपहिलीजदेवाडीवइ। सोनइआकाढीघोटाघातीसिमजसीवीतेथणी
इंमागीआपी। सुहातिमजहीवीवाडीस्नाइत उषाषाटदषीकहिउंमाहराकाछातिकहइ।
नवद्याराजकुलआकारणीयानडछिउमा। हरापदसवउड। तवासणीलरीकांईसी।

अंकेअ। ३६। नाणए। ३७। सिरकु। ३८ खडगनिद्दाणा। ३९।

ईआविउकरूरूजाराजाउठउमाहरूदेम राछउ। तजेषीआपवालायु। तसंघातिसंकेत
करिउरूतउ। असुकीवेलाइआवतआविउ वासणीमागी। तणइसरउडजोणिउ। एवंनही
आपुतउ। एकापडीनहीमूंकइ। पघणंवइआणीलइगयु। पछइतकापडी। सोनानागोलाले
ईजाणीसकहीउवीगयु। ३८। खडगनिदाणा। बिसुरूपडीताएकहाकहीगया। रूता निधान
लाधुं। तमध्येएकमाया। वीजबोल्यो आजरंदेवादिउकालिसुरूशवइ। इमकहीपाबुसंघवउबी
जउसरलभागयु। राविकाढीगउघारघानावीजउदिनआमत्रघाड। रतउघारीमायावीजरोडयी
टइबीलामारूजोइत्याहारइ। तणइंजोणिउपदनोकोमरदिसाईकहिराघिउघरिलेपमइस

वाडनही। ततीरइदा
मअपायां। ३६। नाणए
ऊणाइकोइएपाससोनुं
ईमूकिउवासणीकाः
लघणाइआवउ। सोनुं
मूंकिउ तवासणी
मागी त णइघरू
पसा न उं मूंकि
उंरूतु त काढीवा
नाहीणा। घातिसंसी
वीआपीउछिलीजोइ।
सोनांफिरदेषीवद्यारा
जापासिआणीकारणी
एजोउघणाइदिनसहि
उ जाणुं २३ णहमन
हुंदीम इवडद

रूअनुक्रमइत्तणाखउपो
हितनइजाणरूउ। एकदा
नहीघलइकागइस्वजव
रुडइ। तदनडंकहिउंरष्ट
कीरात्रइबाणानागोला
कीधमांहिधनघातिउ। शि
ड्रमाघिली धरेआउ
अक्षारइ प वीणीवड
स्नाने करी गाला
नहीइना घी जिवाल्या
स्नानकरि उसुकागो
लानाघापलेलीधवास
णाघरिआविउजीणइदि
नवालिउतीणइदिनने
दीलगइइश्यादिसाघ
इलीधसर्वससुदाउवि
घरीदषाडीचालिउंपले

निमाकरावी। तदनइषोलइहाथइमाघइछलइशोटीधनसंकइमांकडानइलीधइआवइष
वरावडबोरीघइ। हिनरत्रतिइइमकरतांहल्यापबइतदनइबरू विरानकृतस्या जिमाव्यासु
गासाऊइबापतिरवाआविउ। तसामइउआवीधनसंकइबोलुरत्नाइताहराबकुपुत्रमाक
राधयायाहारइंतदनइधनसककउपडिउंजोउंचालिदषाडुलपमइघतिमायलीत्याहांत
वइसा। रिवंमांकडाबोरीदीधातजईमुघइइआदिकरइ। दयाहातईउत्रमाकडाघयातउद
इमुजनइउलषइठइ। तबोलिउमतुकमाक डाघाइ। हात्ताईयहांकर्मउफरागफ्रइनहां।
घाइ। क्विवराआपणनइअपदिसाठइतहा। धनफीटीघारीघइ। छिवरापुत्रफीटीमाक

सिरकाय। ४०। अत्यसाठ। ४१।

कहिउंकाइंमारीइंपत्तमीफ्विकांईदीम तंतनषी। ४०। अत्थसत्थ ० अथशास्त्र अर्थविष
यनीतजासनइष्टाननावनीकोइवाणिउरव नायीतिंतहनइउत्र। स्त्री २ वाफि। तपुत्रनीआ
रविंशाघइकरइत। पुत्रवगातिनलहइजेणमाहरीमामा। तवाणिउत्नायपित्रसूंदेशांतरगयउ
जिहांसुमतिनाघनीमाताजनसूमितिहांगयउ। यतलइसुत्युपांमिउताव रूस्त्रीकउहलाग
उ। राउलगइ। कोईजाउउपउइनही। सुमतिजिनगर्भठइ। तमोटउथाइ। तअत्रीकहेभिबइ
वउउहारउत्याउकरस्यइ। तोलगइवाउपीउ। जिम मनमानइतिम विगतिकरस्यइ। वाकिहर
घीजहीछेणगर्भजाउकरवातरिषवामइ। नांघाईस्यइपीइस्यइ। हाजीइमवाफ्र। इमकहइ।

जात्याहारइजाएपुण्दना
कामधनालईगयउसुज
नइजाणिउ। वियाहावि
अणखुधनविहचीआ
पिउ। तीणइवराकाढी
आपणापंविरूनीबुध्य
३९। सिखि त्रि०कोध
नुविंदआ स णस्त
नुछणा इ श्व रा
दिवत्रस ण वइको
ईइसरउ त्रघणुध
नआपइ। वापइचीतसुं
दवरांधनमागस्यइतमा
मारस्यातउत्रआपउ
घास्यइ। पुत्रराहाघाइ
पठइसवलतांमारीस

मारइंतेउअस्सुततेदस
णीतदनाअइयाजणेअमा
ण॥वली विनयकर्मिउ
बेइ इहलोक परलोक फ
लदाई वली विनय थी स
मर्थ बुध्य इ। तेहाहु
नइप्पसा दि निमित
विता ष इ उदाह
रणविकु गा घाएक
दइवइक दसइएक
नगारकोविइंसउत्तव
स्मइ॥ निमित्तशास्त्रअधी
संति तमध्ये १० कथ एमा
नविनयनत्परस्तउ। जगु
रुकदइतसर्वतद्विक
रइ। वेतनासहितसांभली

जाणपुजेपदनुउत्तरदी। नगरी बीजी उत्तरधणी धन घणी करीस्तइ ४१ इहामिदिणकोस्त्रीतुलनारि
मूउं। तदनुजइइत्यवाउआदिइलोकनारइकुंज्ञातनआपइ। तादरस्त्ननारितुमित्रकुंतितारइगइ
नारिनादामलोकलेइरह्याबइतेनआपइउंछअपावउ। तेबोलउअपावउ। जुमादरउलागकरइ
तबालीकइबिन्नतदेउ। त्यादारइतथउगहणीकरीमल्या। बोराम्याआपवालागाउतनल्याइव
ढतादीवाणिगयाकारणीइं। तेडव्याअणाविउ। धणीआणीतुकढणइवी। इत्यनालेखागकीधउ
कमोटउरनादानउ। छल्यज्ञमतेदनइकहंउ किंदनइईंउइवइतल्याइ। मोटालवालागउया
दारइकारणीएकुकराइविचारीयदिछ मिंदन्याकिंदयानइति। नदातस्त्रीनइमोटउ

इआयमहं ४२ सयसहस्से ४३ ॥ भरनित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थ

नइलीइंविचारइंविचारतांगामिनवइसा। इतवलीविनइपरकुउस्वइएवंविनंतरसमर
इपूर्वलाशास्त्रभवितवइ। एज्ञापकर्षसुए उगामहिनीएत्वेतउधींविकलतेविरूशिसएक
दायुगइसोकल्पापामइत्यामबइत्यादवाटइजातांपगदीठा। तदाविनइबोलिउदोराजाइएदस्या
दनापगतदाअविनीतबोलिउएदाघीनुपगतदाविनीतबोल्यइनाहोसाइएदाघणीनुपग। त
पणिडाबीआंषिकाणीबइ। तेउपरिराणीबइतअछिवसूबइगर्लणीबइ। उचवइरस्मांसेब
इ। तदाअविनीतबोल्यु। इमउपसेजांणइत्यारइकहुवालउआगलिजाणिस्यइ। वालीआरपइरउ
दाघणीबइ। सर्वसम्मिली। सरोवरतटिरांणीबइ। इत्यादिदषइतेतलइकालांतरइदासीप्रश्नप

नागअपिउ। तदनइनान
दउ। एकारणीनीबुध्य ४२
सयसहस्से ति० लाषना
कटोरातुधणीएकसंब
उ। अस्यांलखीसंतलाव
इ। तदनइ लाषनउक
टोराअ प इ। तजी
उपइ छे न गणो
ग। ४३ ए उ त्याति
कीसांप्रत वनयस्की
माह। तर० गुरुकायनि
वदितांदोदिला। तनिर्व
हवासमर्थत्रणवर्गध
मअर्थकाम तदर्जनोपा
यप्रतिपा दकंयसू
त्रयअर्थतद र्थसूदीत

श्रीजाणूंएकामगुरुआ
णिगुरुकार्यकरीघार
आव्यागुरुसमीपजेत
लइविनइयंगुरुदीव्वं
तितलइमस्तकइदास
चउआव्यासबहूमानमा
तह्राश्रूआ वितनीख
मोशुरा ए गआव
र्हक र इ मस्त
कइक री घणमइ
बीजोमो नखेरवद
नमनरूदी। काइंरीस
इंधूआउकरइवइत
दायुगइंकहिउं। रउ
गुरुपगइंसपइनयडइ
तबोलिउ। जिहनरूउ
रलणविज्ञवइतदनय

तइबोलीमइनइवधमणीद्यउ। राजानइघरिउत्तरलउ। तदासांभलीविनयवंत। अविनइवंतप्रति
कहिउ। दविह्रोलाइमादार्फकहिउमिल्यु। राजानइपुत्रलउ। दृष्टमइएतलुंस्वरूपनजाणुंतादर्फ
जाणपणुंअधिकदीसइबइ। पबइदस्यादियादषाडी। सरोवरतटवउदेषिवइगविस्यामकरइ।
तदाकोइडोकरीसरोवरथीघडुजलनरीचालीघरनइविषइतदातणीस्त्रीइंबउरुपृषेग
दीठा। तदाअंगिआकांतादषीजाणिउ। काईपंडितबइ। माहरउपुत्रदेशांतरगयउबइ। तदनइ
घणादिनरूआ। वाटजोऊंबइ। एबइनइकहइ आवसइ। इमचीतवीप्रश्नकरइबइ। तना
दरउपुत्रसउंतदामाहंतदुःरवरूपडंतदावि स्यतमीकारणेबोलिउ। मातइइममबोलि

गहिअपेआला। उभउलोकफलवई विणयसमुत्थाहवइबुद्धी ॥ निमित्ते
४४

गलागम्यइस्तुकाइंवाइंगुरुबोल्या। रउश्ननइ मइसमप्रभ्रस्सइनथीतणाविवतदास
वलीवातकही। मइसंपइदाघीनुपगसांधपइजां। एमइलिभिविचारसहितजाएपु। उंकरीनापुत्रनी
वातपदतूंकहिउंमवेमातृघणूंमादस्तूकहिउंचानुवयुं। तदाविमृत्यपइकरीनइगुरुपूंछिउं। एसर्वसत्य
किमजाण्यूं। तबोलिउस्वामीतुम्हारापगनइप्रसादथीजाणिउ। दाघीनउपगउपविरू। दाघणीमइंजां।
णीतइंलघुनीतकीधनणी। काणीजाणी। जिपकइपासइवलणधारणीजांणीजेदाघीवइसइतेस्व
मोमानीवडीरुइ। जारीरचिंताइकुनरीनदाइंदाघाटडीनुलिलमात्रलागउदीबउतनणीअदिवस्तूंजांणी
सूइंदाघवइईकवीतिनणीसगर्भउत्रपतलाजणीजनिमणुपगगाढिरउपरउ। दाघगाढाश्रता। तेनणीप्र
रमासिघडुमाटीएथवीतुतथीनापनउअनइमाधाथीदलउधरतीनइमिलिउ। तिमतकालमातानइउत्रमि

उत्रपदनरघरिआवउव
इ। जांदिमानाघार। उत्र
स्त्रबितोइमकह्यांगादी
आपीसदवालागीदर
पीघरिगइउत्रदीवउ।
आलिंग्युभ्रनपमालाग
उआसीसदे इउत्रप्र
बोलीरउ त्र मरुन
इनिमि त्ती इं कहि
तंस्तउपा त्र नइप
बीश्ववस्तुली धीरूपइ
आकतल्याएकलीधवि
स्मतास्यकारणासमर्थ
यामास। बीजानइरूप
रूपनउ। एदवुवीनवाउम
दीयरूइमुरुनइस्नमउ
नरणाविज [illegible] कूअन्य

आपदारूपसमुद्रन
स्वारीकरइ। तस्वामी
गावध। तदा राजाइ सर्व
कटक मध्ये पडह वजा
वउ। तदा कोइ पुत्र पिता
नवलक्ष स्तंतउनीण
इं पिता न इ राजाग
तुरु ट क साथइ
लीधउ इ। तेणइ क
ह्यिउ माद रउ पिताथइ
ता तेम कउ। तेम कउ इम
बुद्धि दीधी। गाडं दबूटो
मुंकउ तेन जिहां स्पर्शइ
तिहां जाण ज्यो जपाणी
ऊलसइ तिम कीधुं पछ
इरूइ घणी कनावलेपा

लस्यइं इम कह्यां गुरुनइ प्रतिलोचनइ निरयइ जसइ आदिश्य शिष्य विनय करी बुद्धि पामी। ४४ अर्थव
अर्थशास्त्रि कल्पको मंत्री दृष्टांतादि दीकउ गा बुवालावुयइ तिसं विघ्ननके ४५ लेखेति लिखपरि
ज्ञान ४६ गणि० गणितपरिज्ञानं तत्त्वार्थ आदि विनयकी बुद्धि ४७ कूव० खातपरिज्ञान कुशलना
कनइ नीणइं कह्युं इहां जल लहुरि पूतलो कमात्रा इवइ नीणइ तेमलइं पणिउं जल ननी कलइ
तदा ते जाणती रइह आवीउ अहो उक्ष्ये कादि जुउ जलनी कलस्यइ। तेनुं नाक लिगलुं आवीत हां
बोलिउ जण पछे तीइ हां जल लइ इ पदारह लिहिउ। तदा दीधउ पषान परिज्ञान कुशलस्यइ। सोवि
नयकीबुद्धि ४८ अस्स० घाणवाणियइ ऊघो आइ रक्षा आण्या तदा याद वनइ कुमरे स्तु
लामाटा घोडा क्ष्वाता लीधे वासाद वइ नाद नावत्तल ऋण संपन्ना जाई लीक्ष तपाप्या

अत्थसत्थय लेह गणियअ कूव ● अस्से अ गद्दभ

णीनी कल्पि लोक सुखी रूप्या पाणीपीधइ स्यु इंदत्तनी बुद्धि ५० कोइ स्वामी कोइ पाउव
नइ घोडा पालवा आप्या कितला एक कालनी अव धिकीधा जतला घोडा पालइ ताद रह मनमान
इ ते विघोडा लेज। तेपांउवत्ति दिननी बटी सिंगे लहुरूउ पर्वत सर्व घोडामधे २ घोडा २ लाकेद
वइ तीणीइं कहिउं जे घोडानी चारी पाह्या गूणि करी पर्वतइ सूंगिवडा नाषि इम करतां ला घ्या।
डालइ कहनदी तेजा णइउत्तम तिम घारइ कारी बिघोडाउत्तम जाणी मुंक्या। ते कालि आविउ तदा ते
स्वामी बोलिउ ल्यइ साई २ घोडा। तेणइ लक्षणवंत घोडा विस्मा प्या। तदा धणी बोलिउ अने राघणा
पवइ तेम धाइ ल्ये तेनमानइ। धणी स्त्रीकहइ स्यावि कहूं। नआपणइ सघर घोडा वइ ते ल्यइ इवइ।

कार्य निर्वाहि कसमर्थ
रूप्या ४९ गद्दभे वि०
कणइ राजाइ प्रथमे
यस्वादमी कह्यिउ ज
यौवनवंत थी सर्व नीध
ऊइ इमजाणी तेणी ऊ
कटकमध्ये राख्या जो
कराहालइ २ कदा
कटकि को क
टकसिउ। रा जा श्रे
वानजलिमा ह्यिउ ज्ये
ज्या पाणी पावइ स्वादिक
मृत्युतुल्य थया मूटवे तेमो
राजादिक आराजाइ रा
जाइ उतिकह्यिउ वइ को
इडो राहूपरूप
प्रवइ तवइ सारी

मरइ इम चीतवी आमम
घोडा मध्यना विषअण
विकाइ सार २ वत्रिलिम
ण बत्रि पिाउद नइ जेत
लइ तु उतणा तेतलुं आणी
आप एकावद जवाज त
थे आणी आपुं स्वामी
तिघल्यु रा जादषारू
पउ न दा दइवप
सदइ व हाविषव
इ राजाकु ह्यंतिकिम।
स्वामी जीर्णदस्ली आणु
राजाइं आणाविउ सवन3
रोमपकतोडी तिहां विदइ
विषसंचारिउ। जिम २ प
रणामइ तिम २ दस्लीनला
मध्याइ सर्वंगिमृच्छरूप।

आपणि बिटी दीजइ। तस्त्री न मानइ ऊदपियो उजा ताकह्युं तदा स्त्री इमानुं बेटा दीधी घोडा
राखा ५१ पाटलीपुत्र नाम नगर मुरुंड राजा। तदनइ परदेशी राजाइ कुहडा मोकल्या गू
ढसूत्र समा१ यष्टि रलइ सच्छ बार २ समुद्ग काजइत्नाघोलितः३ तीणइं राजाइं आपणा उरूपन
इ दिषाडा पणि को न जाणइं। तदा आचार्य पादलीप्त रज्ञा तेडिउ। तेसबितसगवनात दिवातना।
णि उबउ दाज्ञाए तदा तेणइ सूत्र उन्ह पाणीमां दिधा तिउ लव पलगा डिउ सूत गलनी जु तारनी कलिउ
निमतापणि उह्यां पाणीमां दिधा पुंस्तु लाष गला दाकण कुघारिउ पइइ राजा दषिउ छिकउ आवा
यउतइं कहि। दिलगवर्ता कोइ कोदउउ सूनइ आवउइ वइ। ते राजानइ मोकली इदाजा

लक्खण गंठी अगए रहिए अग ● णिआय ७ सीआसाडी दीहं च तणं

क्षत्रराजा इच्छीत मरवु विह्यउ पतिबोलिउ वइ होसइ एदइकअपथ्य। हा स्वामी बइ तदा विदइ
तयाइ जवांमि अपथ्य संचारिउं। जिम २ पण। सर्व तिम २ तिमदा घी सा वम्वन वइ सुराजा उह्य रचिउं वि
ह्यउ तिमं उष्ट रूउ वह्यनी बुद्धि ५३ दिया यं गणि यायती णसूत्र लसइ कघा नके रक्षिक सूयस्सद
कारफलनंत्रुं वन्नोटनं यच्छ गणिका सर्व पारिसे रूप रिनिर्वते। ते छपा वेन यिकीबुद्धि फल ५४
सी आसाडी दीदं वत तणं अवसव्व कुंचस्स० कादिनगरि कोइ राजा तेहनइ २ पुत्र आचार्यनि पाः
विद्या माट्या ते गुरु प्रति नवकु मरणउ द्य आपवा लागा तदा राजाइ च्यालो ची घकइ परस्तु तनइ
मारवउं ते वडिउ पुत्रेजाणिउं जे राजा माहरा आचार्य नइ मारस्यइ तेन उविद्या दाता परमार्थइ पिता

पुवउ। त्यारइ शंबइ अ
णाविउं रथनं आवइ ते मि
उं कोरिउ उपरि गिरे नै
दनाउ रूष आव्या स्तांत
दनइ दापिमो कल्पइ ज्ञइ
राजानइ आविउं राजा पथ
णाइं उपा यकी प्रनक्ष
उइरा। जा इदारूमां
नरा लि उ ५२ अग
द० क इ कनगर
कोइ राजा २ ते दनइ पर
चक्री सर्व देशमार ते आ
वइ वइ। तदा आवउ जाणी
राजाइं चीन विंपाय नादि
ग्राम मध्ये पाणी रूपादि नाव
ज्ञातमध्ये विषघता विउज
म आवणहारकंणी पीइं

तदनीदासीइकदिनंअ
नइमइसमाम्यागनराअ
इंकोरवालितदासीनिदी
दासीसन्मनबोलइतदा
मारइजिमवातसुईनिम
कदीपदं उपाश्चिकनी
विनयि की बुद्धि ५६
गाणे घो ड गयरांणं
च फरका उ ० कोअक
तमुनीज करइ तविप
रीतथाइ तिवारदा मित्र
नावलदमागीपत्रछेद
इ अन्यदासंध्याकालइ
तिरवलदधणीजिमवाव
इ वनबइ तदनइ पासइ
गयु ताणतांवक्रलआ

कांइत्तिपायकरीजीवउनिस्तारांत जिमवाआविउ नदास्नानवस्त्रमागिउ नदाकुमारइसुकास्या
डीनीलीकदीतणउ हारस्या सूत्रणुकरीबोलइ असो दीर्घत्रिणंशवविक्रवाकय मादेवछदरू।
णाक्रीयतेसांधतंतुसतस्या पसबंसामति ततआचार्यणाज्ञातंसर्वममविरक्तंकेवलामत
कुमारासमवक्रवसानज्ञापर्यंतिभंतोपघानलक्षांत तंतोपलायमानस कुमाराणमाचार्येण
विनयिकीबुद्धि ५५ निाश्चारुपए कावणकलायसिरतारविरकालनउ दशां नगयुबइ ता।
स्त्रीनइविप्रयास्त्रिलाघरूपनउ दासीप्रति। कदिउंकाघुकघआणि तीणीइंआणिउनघाक।
सादिसमास्या स्नानादिकरीजिमाडिउ ग अंइंबीजीस्त्रमिकाइंकीडाकरइ तदनइत्रघा

अवसवयंचकुंचस्स निव्वोदए अ ● गोणे घोडगपडणं च रुक्खाउ ०

पणावलदहिदीवातघरगयुतबल दवाडाघीनीकलीगया चोरलीधा बलदधणी
तघाशिगयुबलदमाग्या दवाअसक्तिंत णाइहदिउं अन्यया मराजाकुलवइतिहांलेइवा
ल्यउ वाटइ जाता कोइअस्वारूढसाम्हु आवता नाघिउ घोडउ नागि तउ कहलणीआवतांअ
सधणी बोलिउ अहो नाइ लागी करी घोडानइ मारइ जतदा सकतनउन्यनादाघ मघेस्लावीजनीने
याइमारिउ मरमइहणिउ सुउ तपणिवलगउमादफ्घडउआपि इम करी राउलिलेइ चालिउ
जातायांमअत्रेतिवइर। दहियाफरदइ त्यादानाटकीधरणा। सूरगाइ याद्रांक्विवइधातीमृत्ताय
त्रइअरूतस्यीचीतविदं जमरूपरिविलागा। रुक्किमबूटम्यु इमबीनवीदरूपरिवडिग।उगल

लागीमिरआविउ परना
लवरनी दघीघाणीपी
वागयउ पीधुं तपरणा
ल मध्येसर्वगिविघइम
धइसूकाउइंदुतणइवि
घइ सर्वपाणीविघयुं
तपीधइ सूतस्त्रीइंज्ञा
तिउ। दा सीपाएक
दा वि उ इसाति
दंडया आ कदीबउ
विचारि उंजनघादि
ताआससामान्यांबइदीसइ
बइ नाबीसर्वतिघा उ
लघउलाईएहनानघ
रूणइसमास्याबइएक
नावीबो लिउ स्वामी
अमुका अहनीस्त्री

उक्काविनयकीबुद्धि कर्म
जायाबुद्धिलक्षणमाहउ
नउत्रैयादि उपयोगविवक्ष
नकर्मणिमनसोअभिनि
वेशः सारस्वाप्यवविवा
क्षितकर्मणउपयोगान
रमार्थदृष्ट साराययं
साउपये रग इष्टिसा
राअ भि नि वेशो
पलअक र्म परमार्था
इत्यर्थः तथा कर्मणिअ
संगाः स्पासपरघोलनंवि
चारस्तास्यां विशाला विस्त
र पृथगतपरघोलनंवि
शाला तथासाधुकृतेसुष्ठु
कृतमितिविद्वद्भिः प्रशंसा
साधुकदइ। ततनयुक्तफ
लं साधुकारउ रसरावतना

इणसीधातीमकंइमकरीरस्वउस्यउगिउजीर्णवस्त्रपात्रासुर्बंधीगलइडालइबांधी दवउपहिउअवस्त्र
पामत्रूटउ नारिकीयासुस्वामीसृउक्तउउ तदनागलाकुपरिपडिउ तघउ नारकीआवलगारपा
णीअक्षारउनाइकमारिउ राउलिलेइगया राजानइअध्यनइरांकरखिउ तणइदानपणइ
दानपणाइसूर्घबोल्यउआपणुरूडन्यसर्वकहिउ नदातकुपरिकृपाकपनी कुमारामतबोल्या
द्दापउरुनइबलदेइगाइपणितारी आंखिलेज्याइ तिर्थ्यंइ जितदानाहराबलदआपानइ।
आषदागतसणीसमर्थवासिगतदीधउक दीकगीगयुर अस्वस्वामीतडिउपउरूनइघोडउदे

उवउगदिठसारा कम्मपसंगपरि घोलणविसाला साहुक्कारफलवई क
म्मसमुत्था हवइ बुद्धी ।८। हेरन्नि ● एकरिसए कोलिअ

हिरण्यरूपतस्याफलमित्यर्थः सा तथा कम्मसमुत्था हवतिबुद्धि अस्याविविनयजनाउ
च्छाथउदाहरणेस्वरूपंदर्शयतिहरणिए त्यादिसुवर्णरूपादिक्षेत्रइपणिपारखूलहइएक
र्मकीबुद्धि अभ्यासकारणीविद्या ५८ इमकर्मकीबुद्धि सघलेवीकोइचोररूतउनीणइकोवाणीयानइ
घरिखात्रदीधुंपद्माकारडंतथात्रघलातइंजोणिउं तदनइघरिलोकमिल्यालोकसर्वप्रसंसाकरवा
लागा दघउरविज्ञानबापडाचारनउंतदा एककिरसणीबोल्योकसिउंवघाणउअभ्यासीसुंदोहि
"कर्मनइविषइ प्रसंग अभ्यास अभ्यास विचारताबडुकरीनइविस्तारपामइ सा प्रसंसा केदी
जेभलुंकरुंकीदउ तेवखाणवाउ आसुविज्ञानी इमजाणइ पणाइ नानइपतलाइ जमाप्सइपदनइक
र्मतणीबुद्धिइउपयउकरीदीवउसारपरमार्थ

स्यइ पणितादरीजिहा
बिहस्यइ जाणिजानइं
कहिउंमारिपणिलागा
इतसणीतादराकसाथी
मारिउ सूउतउमंचाल
इ अनइ घोउअलेस्पइत
उजीनआ पीयइतप
णिगयु २ नारकने
ज्या जि म उष्ट्र
परिग ल इणासधा
नीपरि उतमदेवि
लप सूआरुउष्ट्रदोरडी
नीपासीबोधीमरवाद्द
इहइचडी आपणइदह
उप्रकुपउअपरिपउउ उष्ट्रा
रउमाडवलिउंतलिप
णिघवाडीएकुमाराम
त्यानीविनयकीबुद्धि ५७

अनइ विज्ञान इकरी इम
जांणइ । एदृष्टांत तला विसा
नृत्वं गर्डूंनी एजस्याइ । एत
लुंउक्ललु । एतलउंलोहइ ए
तानुएणइगं मिश्रावस्यइ
दृष्ट ४ाएत्रिं० दर्शावईक
जानातिथ। चादंबमा।
स्यतीति ६२ सुत्रित्रिं०
मणी आ र मोती।
आकास ७ लाली द
विसुधर वालमाउइ।
मोतीदृ हिपडतउ मोती
परीक्षा ६३ घयत्रिं० घीव
नोश्विणाद्वार विज्ञानषा
मरूत्तुवांबइ गाउलाऊ
परिमउ । दिवमांम हूलूइ
मांदिउरूइ ते मध्यिष्टनना

लीनदीश्रुसासकारणी विद्याबइ । इदासत्रआवयतिदामि चोरतिद्दाओ वाश्रायउबइ । द्षीमादृरू
दीधूषात्रकोवषाणइबइकेनदी । तणइचोरइंतऊणा बीनुंकद्दिउंसां नलिउंरी मइथमयमिउद
मुरेश्रा मघला इवषाणइबइ । अनइ एवबुउइबइ । तउएदनानामगकामदेविबं । एकदातकरस
णीषत्रइसुगरावचारयुरुत्तेउ तिर्दांग्रा स्वलिइषत्रगयुकरसणी घतइबोलिउंतु श्रप्रतइंस्मारी
सकरसणी बोलिउ अरेकाइ मारइ चोरबोलिउ । नदीइं तेमादृरूषात्रवसोहिउ । तलणीक्र
रसणी बोलिउ । आरएवातसावीइमकद्दी । जिदृनइ अस्यामतिदृनइ तेदोद्लिानदा नेदेषा
दु । चारकदृइदेषादिकदृइतउमृगवस लीहूईमाञकदृइतउत्रयइमुग्निनाष्ठुंकदृइउ

उवउगदिठसारा । कम्मपसंग परिघोलणविसाला । साहूक्कारफ
लवई । कम्मसमुत्था दवइ बुद्धी। एडोवअमुत्तिघयएवए । उन्नायवदइपू
ईएअघडचित्रकारअ १०

मइजेतन्त्रूकदृइ तेतलंजनामइ जतलू वीनवइते
तन्त्रजनमाइं ६३ रूसगतिं० तस्मात्नकर्मकत्रां नवस्य विज्ञान श्रकर्षप्राप्त स्मामापीवतिय
घाशायोनकेनापिलक्षति ६४ १इयातं० आप्रपिकःपवमिवायष्टतांनांदलस्यमानंजानाति
६५ घडतिं० घटकःस्वविज्ञानप्रकर्षप्राप्तः प्रथमतएवप्रमाणंयुक्तंदृष्टंदृष्टातितिति ६६ चि
करोतिं० चित्रपकःप्रकरःसचरूपकत्रृमिकासमचापिदृपकप्रमाणंजानातितानावन्मात्र
ताबर्णकंविकयाहज्ञातियावन्मात्रेणप्रयोजनं नमिति उक्ताकर्मजाबुद्धिः ६७ सांप्रति

पाधरउभइसुखनाखिउ
नदावस्त्रयाघरइनाष्या
सर्वउभइसुखइ नदा
नचोरअतिआविजल्ह्
तषणुदषतारस्तुजाण
नउजरूविज्ञानी पणि
पमुरुभी अतिविज्ञा
नीदाप इ बइकर
सणी प ति इबो
लपउहो ला ईजउई
जक्रुभइसु षमुंगनना
षइतउ तउस्तेउघ्नतइ
मारतउ एचोरकरस।
णीनी बुद्धिकर्मकी ५५
कोलीयत्रिं० कोलीवस्त्र
नउवणा २७ णहारए
कगता णहूइ।

करतां पेटफाटीनीसम्या
कलंकटलिउं स्त्रीप्रवी
वातकरी । ब्राह्मणनदी
धा ६८ कुमारं० मोद
कप्रायकुमरनइ नवयो
वना स्त्री हुंती रूपवंतम
नोहर ए कदातप्राधि
मोदक षा नानीसरी
गउ ए न उस्त्रीनु
शरीर व र्षिवउ अति
दुर्गंधिउ बलतीउस्मा
सादिपाडुआजाणी वय
रागआणी धिगूरएसंसा
रधिगुशजसुरूषअस्पाश
रीरऊपरिमसनाकरइत
श्रावशरीरअशुईपाएकर
इबइइमकरतां कूडा अधम

परिणामक्यालक्षणमाद । अणुमाणे० आएषीजांणीइ देवपरखी । दिठते दृष्टांतजांणी इसादि० अनुमा
नदेउदृष्टांतनुसाधितुतकदीइंसाधिकतयावयएं वयह्य जिमरकइतिमरबुद्धिहदि वालतसा
इउनीअल्पबुद्धिजइ । हियए लालधनादिइहलोक निसिएमोक्षफलदाइपरलोक । उदाहरणविशे
षकदीए ११ अलगए अलइकुमारदवंइद्धि अयोनरारजानगरीमध्यवाधी आणितातकथा ६७ काष्टश्रे
ष्टनीस्त्री इच्छारणीहुंती । तउणीअेइइ वयराग आणी चारित्रलीधुंतदाकालांतरइ बटइचउमासि
राषण्यामनुस्यघणामिलवा लागा । तिहांतदाधिगजा तीयाश्र्बइ । एकदारुषीश्वरविहारकरतांउ

अणुमाण । हेउदिठंत । साहिआवयवि वागपरिणामादिअनिस्सेयसफल
वईबुद्धीपरिणामिआनाम ११ अभए सिढिकुमार देवीउदिएदए हव
इराया साहूअनंदिसेणे

वसायआवताथलधनकर्मक्षय केवलऊप नउ ३० देवा०
उपफ्रवतीराणीधर्मकरी देवलोकिगइ तिदृनीउ त्राउष्फहलानइ अतिस्नेदइउ तिवोधवा अमूइ
नरगवेदना । देवलोककुसुखदिषाडइ दिषारी समफावी एदेवीनी बुद्धि ७१ उदउदयत्रिं० उदितोदयस्य
राज्ञःश्रीकांतापत्नी उरिमतालपुरि राज्यमनुशासतःश्रीकांतानिमंत्रं वाणारसीवास्तवेन धर्मरुचिपरि
व्राजकावलिनसमागत्य निष्फलस्यव्यक्तजन परिहत्य तस्यतूष्णेन वैश्रमणसुपवासं कृत्वा समाहूत
यस्मनरगस्पालनीऽन्यत्र संक्रामणं भापारिणामिकी बुद्धेः ७२ साहूय नंदिसेणे० नंदिसेनऋषिश्चेत्वा
रिकहेकिवाअसिलाषीकासु तदानंदिषेणउक्तं तःपुरसर्वालरणपहिरी इंद्राणीतुल्यनेणइ अवसर

त्रादिघणालोकसाघइ
हुंता । तदातणइ एक।
स्त्रीसगर्भविरूपाआणी
ऋषिप्रतइबोली स्वामी
एउद्धारउ गर्भबइ । अन
इउद्दिष्टमूकी जाउ बउ । त
उहूंदिवइ किहीघाइ
सतदारू षी स्यरइ
जाणुं सुरू नइ
आलदी ई प्रवचन
नउउद्दाम घाम्यइ वली
बीजउंकोधर्मदीहिलउ
करीसकसइ इमजाणी
अखमन्त्रं आलदी धुंजउ
मादृरउगर्भजइ । तउ
पाधरउ प्रसवज्योनदीउ
पेटफाटी नीसरज्योइम।

आव्या।नलावदीटिउप
गि२आव्यां।राबइंवरू
नपाणीलवागसुअंध
रइपढेउउगढी।नदापां
णीलरनांबउवडाढकर
शनुंजा। णीमाहिउ
मांउस्त्र वीं ०गनबयु
ण ल इ स्तंजां
णीवां हि उपागआ
वा।सम। स्पाकरीरूली
मरूनइसाहइमारइ।न
उरूंबुबपाइ।निवारइना
सातमाउवर्द्धनमाऊीव
नीनजीवनगोलीबांधीम
रूनाप्रमुषआपणुऊटंब
बांधिउंबइ।तबोजाविवा

महावीरस्वामीनइवदवाआवी।तणइहावीधन्यहिमादेगोयुफ्जेणइइस्याअंतःपुरवांग्या रूअलागी
ऊजवलीवाबऊबउ।रमऊांणीइढस्तउ।तदनीयपरिणामिकी बुद्धि ७३ धणद० सुसमापितानीबुद्धि ऊे
बिटीवुमृतशरीरआदारीनगरथ्यमरूआ।७४।सावग०आवकनइपरस्त्रीनूं एचघाणरूतनउ एकदास्व
स्त्रीनीस्त्रीषीरूपवंतादषीतऊपरिअतिलाषतउ।स्त्रीइंजाण्यूं।सरतारनइकहिउं।संध्याकालइस्त
मेलवीस।हक्काउस्त्रावनथी।तरहिउ।संधसइंअंधारइंसिषीनउवसआपकरी।विहांवाइहतरूतनउ
त्याहांआवी।लागसोगव्यापढइतकालपश्चाता। पकरवालागउ।हषउबउरूतेअलागीउ।माह
फंबतलागु।तदास्त्रीबोलीनास्वामीरूंबउ।प। स्त्रीकहइसांतापाणउ।प्रलानयुफकहइंग

धणदत्ते ७४ सावग ७५ आमच्चे ७६। १२ खवग ७७ अमच्चपुत्ते ७८

जेटेटनइराषवादाताबइ।निहांउऊरटजोगीषइ आवउ।ताढटनइहाथिफरकरीसुवर्णध्न
उआपीतरीजिउससमीपिवत्तीराषिउ।एकदावर्द्धन नीस्त्रीनीआंषिउषतइरोतीसांनलीढिटसबिउ
टढकहिउंगोलीआपी।एऊइसुऊतानइआपेकहज्योसधलांआंषघातस्पो।जिमसघलाइनइसमाध
रूइ।तमध्येवोरीस्तंती।ढरूवर्द्धनिआवितबउतुहगोलीघाल्पो।तिमलिइऊाउंतिमकीधुं।हस्तुवतबधा
वर्द्धनइंआगइटेटनइकहिउंबइ।एकमृतकमाहरइऊोइबइ।वीरसाधवातदासर्वमनुष्यमुंआजांणीश
णीढीमवीराणीएकहिउं।ऊस्ठानकनाछत्पो।ताढटइजांण्यूनाषीइंकोइएजोगीनइजोइएबइआविक
हिउंलइमूंकिराऊइमाहरइवीरसांधवाबइतेणेमूक्या।कहिउंदिनपतघाउमाहरीवाटमजोईसिइमकही

यु।धायछिवलीधुंमनग
यालणीपस्त्रीआविका
नीबुद्धि ७५ अमाच्च०बुस
दत्तलाषाधवलहरइमा
इलगाडिउ।त्यारइपहि
लीसुरंग देवारी।वट
उपासइ मू कउकु
अरउ गा रि उ७६
रवमण० को धफल
जांणीऊर गइइंरूषी
स्वरमूंक्या।तअवसुण
नलीधउ।७७।अमच्चउत्ते
०मरूनाबबि।बटउवरू
नातणइआपबुहइउ
सुदत्त २८ कढिउव
नमधारे स्वकस्क

इधनइलीधुएकुमर।८२चक्र
णा०।कोईराजाप्रतिनरू
णाउपुरूषबोल्युकहरूदे
वनरूणाइपामइराषीइ
किंस्ठविरिः।बलरहितली
लयीवलितशरीरपल्या।
स्थिरइलूडा दामइ।एह
वइंकहइ रूं नइराजा
तहरू पा र श्रुत्जा
वानिमित्त बो ल्पउका।
हिबउंजेमाह रइमाथइ
गोकरीनाउइंतेहनइऊ
णहंउबीलएउकहइतेह
नइतिलतिलमात्ररवंड
कीजइ।जावमारीइंएब
इस्थिवरहव्या।तणइक
हिउंहवविमासीनइकरइ

कोईलोलटिबाम्यु।गायउसर्वस्वजननविमूर्छतिकीधा।सावेतबया।तदाबोल्यारवर्द्धनतुईहाकि
हाथीरूं।तेहवाआविउं।वालीकोईमित्रनइस्थाभिमूक्या।आणणउ।हसदत्तनीगाय।षणाइंगयुएतेहनीबु
द्धपरिणामकी ७८ चाणक०चाणऊप्रधाननराजांवंइसुभइकाढिउ।तदाकनलइकालइराजामारि
उ।राजानउबेटउराजस्थापिउ।तहना पाछलाराजासत्तवांणिकांनइनमानइं।नगरवोरोघावालागीको
ट।बाललांचोरीयाप्रयाणाररव्या।पिउ।तदाकाटवालरूडानहीएहवजाणीगानावरहीउइ।नलदा
मकोलीकषानलदामाकाटवालकीधुचोरमा। स्या ७९ शूलसाह०।काइलटपावसइगामादिन७।

चाणक्कवव ७९ थूलभद्दे ८० ना सिक्कसुंदरीनंदे ८१ वयरे ८२ परिणा
मिआ बुद्धी १३ चलणाहण ८३ आ मंडे ८४ मणी ८५

स्तंतस्थिवरएकांतइगया।वांतवबालागा ऊणरदयवद्धसदेवीविनाटवनइमस्तकिता
डीऊणसकइ।अनइतरदयवद्धसदेवी।तउ विचाषइसनमानवी।इमचीनवीतस्थवरराजापासे
जइकहुंदवितेतुविशेषीसत्कारहंइमकहइराजाअतिसंतोषपाम्पउ।कहूकेसंमांमजेस्थवरन
इंबांडीजएवंविधबुद्धिसागलवति।तराजासदाइस्थवरनइपासइराषवालागउ।नवयुरूणानइतिरा
ऊः।स्थविराणांपारिणामिकीबुद्धिः८३।आम्हट०ऊणइकावसुआमहत्वकरीप्रतरूपवर्छिरयवस्तुआ
णिउं।कोइविगमितलहइ।एकइविचारिउं।एकउअकाल।बीजउतउकावउ।नारीसहीकाचसुबइ।८४
मणीथ्य०।सप्पहिद्दचडी२नत्पबालकपंषीनाषाइं।एकदापडिउ।मणिवलूटीपडी।ऊआकावइतेहनाकि
रणाइरूपजलरानउथयु।बालकरमातपाणीधरानुदीवुं।पिताविवरआगलिकहिउंविमासीऊइआचित

तिसंरूलावतउराउनइ
बापमारयुउ।थूलसद्दनइ
राजाइप्रधानकरवा।त
डिउंबापनउस्वरूपजांणी
चारित्रलीधउ।८०।नासि
क०नामिकनगरसुंदरी
नउंसत्ता रनंदणनउ
नाईसा धु मेरुनउम
नवि क ल्प थयउवि
धयउप रि जाणीमेर
लेइदेवत रनालोगाढ
षाडामसवालिउ।८१।वय
रस्वामीनीकथा।बालिक
पणइमाताइंमायु।आव
कीउंउकीधउ।जयकरा
मकउधननउदगकीजइ
एकपाषइरजोहरणवइर

धेकायइनचिा सूवाउवा
लागी। रुक्मिणी। आश्चर्य
रूतखंयो वोलितपमितेस्मा
मीफ्करउबइ। माहरूला
गपतेतुम्हारूवयाव
अघाइ। जावचासिकीधउ
लागलोग वइ। एकदा
कहितै। स्वा मीकार्य
वपा य ब इत्तेवो
आलाया उ इ दावइ
गयउचेडा राउनइमि
लिउचिंता एरघयादषि
कहितेस्वामी मुनिसुव्र
तस्वामीघुलगएउ वउजि
मकूटकलाजइ घूलएण
चिंताकटकपाढुगयुब्य
वागयुपढइचांपीनगर

मणिदेवीलीधी। मध्येयणं वंडकोमाउसमधिणीलोकनइमारतवा। एकदावर्द्धमानजिनआवीतेहनाबिल
समीपिइरह्या। तणइरीसवडीवासाद्धमङ्गजोसुं। आवाधननघइजू खितुपणिविमासीरहीउसलइअध्य
वसायउजातीस्मरणकपनुंया मससमीपिआवी बिलमांहिमूषघातीरूवाहिररागीरहिउलोकेविटवि
उचोषिअधिवसाइदेवथयुच्चवीनइ। ------ खग्गीपआवकवतनंगीघइषग्गीचउपदेघथयुघएा।
मनुष्यमास्यां एकदाजिनआव्या तेथइआव्यो करवालागुनअसवइउदविमासताजातिस्मरणउपनुं
आस्मिआदारलीओ। पूलोदथवेशालानगरीवेउअमहाराजालागठानगरमांहिपइसतुंनगदरोलुंवरसारर
हुउ। कोणीचेडुबहरुवाजिआव्याचिंतापरहुआ कोणीकहिउपकहुहुवइ। वेशालानदीनइकूलत

सप्पेअ ८६ खग्गा ८७ थूभिंदे ८८ परिणामिया बुद्धी एएवमाई उदाहरणा १४
से तं असुअनिस्सिअं से किं तं सुअनिस्सिअं सुअनिस्सिअं चउव्विहं
पण्णत्तं तं जहा उग्गहे ईहा अवाओ धारणा से किं तं उग्गहे उग्गहे दुवि
हे पं० तं अत्थुग्गहे अ वंजणुग्गहे अ से किं तं वंजणुग्गहे वंजणुग्गहे चउव्विहे पं० तं
सोइंदिअवंजणुग्गहे घाणिंदिअवंजणुग्गहे नाजिउ एवरूपानीबुद्धिप्रतिबोधकथा संपूर्णः

॥ ॥सेकिंत०कहइमतिज्ञान सांभल्या अर्थादिकनोणीइ श्रुतकहइ ज्ञानना च्यारिप्रकार ते उ
ग्रह। उग्गहअर्थादिकग्रहण ईहा विचारणा अवाय निश्चइ धारणा धरीराखइ अर्थोपग्रहसंघात
समयरह्या तेचरमसमयज्ञानमुक्तइ जेग्रहइ ते अर्थग्रह विंजण व्यंजनादिग्रहण सेकिं०
तेकहइ विंजणग्रहइ चउविधते सोतेंद्रीयग्रहण घ्राण नासिकाइं गंधग्रहइ॥

आपणइवसइं करउं तउ
तेनाउजादिप्रतदापउदवा
तु। वेज्याभागधकाइएउ
हबबिउ। आविकाथइनि
णीनइवांदवा सपरवारी
आवी। तकहिवांद्यामा
यामांडीध मंघोनलइ
तेरसुत्र न पाणीनमं
घमा दि थी आणइ
एकदाज य पालगोदा
यात्मावाऊ घलेलागी। म
टालथयु। तेमागधगणिका
सारसंभालकरइ स्वामीकू
लवालुकारीनिजाजश्रीवीर
कीमादरीसारकरउ तेसा
रकरइ एकदाकहिनिश्चा
नरिमुतउ आवीआंबुज्झ

तणवीतवइ विमणवि
लजउ। निर्णयरूपवि
शेषा विशेषइ विचारवूं
सकूण तकहुअवाय।
अविरूपसोओदिएका
र्थनिश्चियउपंच पांचना
मअवायना आउधा
रणाईहा इं उअर्थ
ग्रह्या न अ यक
रुंइमवा न वइएव
णविशेषइ। तथामार्ग
णांसदस्तनार्थ विशेषअ
निमुखमव॥

जिपजिव्हारसग्रहण। फासपरसफरसग्रहइ। एविजेइंद्रीइ पुद्गलग्रहण करइ उग्राह्यादिग्रा
जिब्भिंदियवंजणुग्गहे फासिंदिअवंजणुग्गहे से तं वंजणुग्गहे से किं तं अत्थु
ग्गहे २ छव्विहे पं० तं सोइंदिअअत्थुग्गहे चक्खिंदिअअत्थुग्गहे घाणिंदिअअत्थु
ग्गहे जिब्भिंदिअअत्थुग्गहे फासिंदिअअत्थुग्गहे नोइंदिअअत्थुग्गहे
तस्स णं इमे एगट्ठिआ नाणाघोसा नाणावंजणा पंचनामधिज्जा भ
वंति तं ओगिण्हणया उवधारणया सवणया अवलंबणया मे
हा से तं उग्गहे से किं तं ईहा ईहा छव्विहा पण्णत्ता सोइंदिअईहा चक्खिंदि
अईहा घाणिंदिअईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदिअईहा
तीसे णं इमे एगट्ठिआ नाणाघोसा नाणावंजणा पंचनामधिज्जा भवंति तं
आभोगणया मग्गणया गवेसणया चिंता वीमंसा से तं ईहा से किं तं अवा
ए अवाए छव्विहे पं० तं सोइंदिअअवाए चक्खिंदिअअवाए घाणिंदिअअवाए जि
ब्भिंदिअअवाए फासिंदिअअवाए नोइंदिअअवाए तस्स णं इमे एगट्ठिआ नाणा
घोसा नाणावंजणा पंचनामधिज्जा भवंति तं आउट्टणया पच्चाउट्टणया अवा

णाइ वहूं पमतनका
ह्यापतलांलणीजइहे
मनइ पुद्गलग्रहणकी
धातउविंजणथयुं तेज
घल्यापछीजाण्यांकिव
रइतएकार्थनानाघोष
तेअवानीवा समानहना
पनामत गि पउझला
दिय इ व उ अव
धरा रा षइसव
णसमरइ अवलंबणवि
चारइकरइ तथामहति
मेधा एगाथ एकार्थजेवि
चारहं आभोग आहादिइ
हाइपइसइ मगण छिद्र
वइ गवष भगावषइ चिं
आभोगन विशेषआलिमु
षआलोचने

नंदीसू० बा० ३०

उ जाणइ तेहष्टांत तेहके
हपडिबोधिगो। तेहनो जि
मकोउसूतउप्रूतउजाग
इ अमुक१ अमुकदेइ
तेहनो दिष्टांत श्रीनउ
जाणाविछ युक्तिप्रति
बोलिउ। किं ० किम
स्वामी ए क सम
यप्रवेस्या हं आतउ
पयोभगइ वर्तइ किंवा
बे असंख्याता समयनाप
यगा पुद्गल उपयोगइ व
र्तइ गुरु प्राह णो एकनदी
एगसमयना

ए बुद्धी विण्णाणे से तं अवाए से किं तं धारणा धारणा छव्विहा पन्नत्ता तं सोइंदिय
धारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधा
रणा नोइंदियधारणा तीसे णं इमाए एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंचना
मधिज्जा भवंति तंजहा धारणा धारणा ठवणा पइट्ठा कोट्ठे से तं धारणा उग्गहे
इक्कसामाइए अंतोमुहुत्तिआ ईहा अंतोमुहुत्तिए अवाए धारणा संखिज्जं
वा कालं असंखिज्जं वा कालं एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहि
यनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेणं मल्ल
गदिट्ठंतेणय से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं पडिबोहगदिट्ठंतेणं से
जहानामए केइ पुरिसे किंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा अमुगा अमुग त्ति त
त्थ चोअगे पन्नवगं एवं वयासी किं एग समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति दु
समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहण
मागच्छंति जाव संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति असंखिज्जसम
यपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति एवं वदंतं चोअगं पन्नवए एवं वयासी नो एगसम

निश्चयकरइ ते बुद्धी०
मत्यादि इंद्रियना अर्थरइ
विछाछइ जाणइ धारण
निश्चयकर्यु धारणा०रणा
दइ धा० धारइ स्थापइ
प्रतिष्ठा ए० विशेषइ स्था
पइ विज एकी कस
मयथी अ संख्याता
समय ए ० उपइ
दा विस्ते २२ प्रएकंतो
अवा०ति अंतर्मुहूर्त
अतं० धार० संख्याता अ ए
असंख्याता काल ते दस
आछी उत्तरे० ईहा आदि धा
हु सवर्हि लेदंते मधो विज
णो अदते ३० किमतेक
दइबइ। पडिणसत

इ एव० इमपइसतो १ अ
नेनउ फल सराइ जिहा
ताणे विजणे उ फलइ का
नसराइ तदा सू तउनर
होतिणहुंकारो करइ ए
णो न उ न जाणइ कुणए
शब्द तउसे ० उपयोगइ
लिपारा नि श्चइकी
धउत उ ० तदा ध
रइ शब्द रा पइसंख्या
ताकाल ल गइ हिवइ ५
इंद्री नउ समास अव सं०
शब्दणन शब्द प्रथम सां
भलइ णो० पणि न जाण
इ कुण शब्द उव पनि
श्चय करउ।

यपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति नो संखिज्जसमयपविट्ठा
पुग्गला गहणमागच्छंति असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति
से तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेणं से जहा
नामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खिवि
ज्जा से नट्ठे अन्नेवि पक्खित्ते सेवि नट्ठे एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणे
सु होही से उदगबिंदु जे णं तं मल्लगं रावेहिइ होही से उदगबिंदु जे
णं तं मल्लगंसि ठाहिइ होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं भरिहिइ होही
से उदगबिंदू जेणं तं मल्लगं पवाहेहिइ एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खि
प्पमाणेहिं अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ ताहे हुं ति करेइ
नो चेव णं जाणइ केवि एस सद्दाइ तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस स
द्दे तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ तओ णं धारणं पविसइ तओ णं
धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं
सद्दं सुणिज्जा तेणं सद्दो त्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ केवि एस सद्दाइ तओ ईहं

जाव संख्याता समयना अ
संख्याता समयना अन्या
पुद्गल उपयोगइ वर्त्तइ ते
सइबोडाकालना अस्ताउ
पयोगइ आस्मनंदी तस्यइ
उपयोगत उछेंनखुत्तुत्ती
कालातसणीए पडिबोद्धग
दृष्टांत हव इ मल्लग दृष्टां
त कहइ कि इ० कोउ
रूप आवा ० नी माहेम
धोधीको सरावलूं यहा त
क्षेणत माहि एक उदक बिं
दु नाषे पइतेहकनावग
निछ एवो सोस्सी जाइ एवंराइ
आदि नाषे पतासरावलुंभा
तुं प्रवहणा णी झा हरइ सरी
इ पवा० पछइ वदीनी कल

नंदीसू० बा० ३१

से जहा० दव्वस्स मनव
परिक्के पुरिष

पविसइ तउ जाणइ अमुगे एस सद्दे तउणं अवायं पविसइ तउ से उवगयं ह
वइ तउणं धारणं पविसइ तउणं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं
से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा तेणं रूव त्ति उग्गहिए नो चेव णं
जाणइ के वेस रूव त्ति तउ ईहं पविसइ तउ जाणइ अमुगे एस रूवे त्ति तउ अवायं
पविसइ तउ से उवगयं हवइ तउ धारणं पविसइ तउणं धारेइ संखिज्जं वा का
लं असंखिज्जं वा कालं से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा तेणं
गंधउ त्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ के वेस गंधउ त्ति तउ ईहं पविसइ तउ
जाणइ अमुगे एस गंधे तउ अवायं पविसइ तउ से उवगयं हवइ त
उ धारणं पविसइ तउणं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं से ज
हानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा तेणं रसो त्ति उग्गहिए नो चेव णं जा
णइ के वेस रसे त्ति तउ ईहं पविसइ तउ जाणइ अमुगे एस रसे तउ अवायं पविस
इ तउ से उवगयं हवइ तउ धारणं पविसइ तउणं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं
वा कालं से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा तेणं फासे त्ति उग्ग
हिए नो चेव णं जाणइ के वेस फासो त्ति तउ ईहं पविसइ तउ जाणइ अमुगे एस फासे
तउ अवायं पविसइ तउ से उवगयं हवइ तउ धारणं पविसइ तउणं धारेइ संखि

३१

कां नेउ शब्द सांभलइ ते
फर्शमात्रइ किम जिम श
रीरइ रज लागइ तिम शब्द
मात्र शब्द सांभलइ बीजा
इंद्री नी वंपढ्ढोइ बीजाइं
द्री वापीबइ श्रोत्रेंद्री उग्र
बइ स्वाणमात्रइ शब्द वे
यइ ते स्पृ ज्ञिगंधइ
वस्वी श[illegible]ब्द स्वस्वत
घाघंणा न तु कालक
घविणाणइ। फरश्या नव
कालशब्द वेइ रूपं पस्प
नेत्रइ अफरस्यां देषइ
गंध० गंध रस फरश बद्ध
पलो ल्लीभू नफर्शइं जांणि
इ सिअ घाइ ते विषय का न
तउ ११ ज्ञो गंध रसस्पर्शल्प
जोयणा ते शीउ पल्ला श्रावइ

उव० निश्चयरूतउ से जह० दिवइ मनक परिकी पुरुष अकस्मात् स्वप्नदीठूं तम स्वग द्दष्टांतने

ज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा ते
णं सुमिणो त्ति उग्गहिए नो चेव णं जाणइ के वेस सुमिणे त्ति तउ ईहं पविसइ तउ जाण
इ अमुगे एस सुमिणे तउ अवायं पविसइ तउ से उवगयं हवइ तउ धारणं पविसइ त
उ धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं तं समासउ चउ
व्विहं पं तं दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ तत्थ दव्वउ णं आभिणिबोहिअनाणी आएसे
णं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ खित्तउ णं आभिणिबोहिअनाणी आएसेणं सव्वं
खित्तं जाणइ न पासइ कालउ णं आभिणिबोहिअनाणी आएसेणं सव्वं कालं
जाणइ न पासइ भावउ णं आभिणिबोहिअनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ
न पासइ उग्गह ईहा अवाउ अ धारणा एवं हुंति चत्तारि आभिणिबोहियनाणस्स
भेयवत्थू समासेणं ॥१॥ अत्थाणं उग्गहणंमि उग्गहो तह वियालणे ईहा ववसायंमि अ
वायं धरणं पुण धारणं बिंति ॥२॥ उग्गह इक्कं समयं ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु कालमसं
खं संखं च धारणा होइ नायव्वा ॥३॥ पुट्ठं सुणेइ सद्दं रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु गंधं रसं
च फासं च बद्धपुट्ठं वियागरे ॥४॥

तिपुकलमें दबाइ तेनली आलनही ओत्रेंद्रीज अंगुलअ
संख्यात वकृवरविइं वरूप० ऊ० अंगुलनु संख्यातमउ भाग स्पर्शजिणइ वयकण० आव्य आत्मांगुले

ह नो समास हिवइ गाथा
तेय वक्रू० ते दवस्तुनाव
ली अवग्रह हा विनाषार्थ ज्ञा
णवार्थ कहा ॥१॥ अत्था०
अर्थादिय द्दष्टांत धरणा त
हप नथापि ज्ञेत रंग ने विचा
रहिते ईहा ववसा० वस्तु
निर्णय ते अपायध
रणं० वा स नाम्रूय
धरणा बिं ति० नीर्थं
करादिक हइ ॥२॥ विज्ञा
नादिग्रह विशेष सामान्या
वग्रह श्बक रश्रं नरमुहू
र्त्तप्रमाण ज्ञाणवुं ईहा० ई
हा वय मुहूर्त्ता दि० नाव नाअं
तर मुहूर्त्त धांचइ धारणाविष
यगातिलाद कहइ ॥३॥ पुट्ठं०

णिशब्दसंज्ञवीकदी
इयतेस्ट्टांदयाशब्दसर्वे
पियपरमार्थतिलोमतिवा
चकापर्यायशब्दाः परं।
विनयजननञ्जणारार्थ
स्क्राई२विस्तारकदीइ
बइपइ द्वा०बतापदा
र्थ३४ र्या लोचन अ
याप नि श्च यकरखु
वीमं० वि मर्शनिविद
चहूमग पसमुचयधर्म
अवलोकचुं गाव०वितार
कधर्मालोचनसंज्ञाखिंउ
नावग्रहादिबोजकाल।
नउविचारहं सई०स्मर
णापर्वलूपाबल्लं मई०बु
आविशाम इविचारहस्त।

जोजनलक्षणफिरूदेषइ तउकोइकदस्पेस्र्य सुवगलोबइआत्मांयुलइ तकिमदेषइबइ उ
स्र्यनीकांतिश्रमदात्मतेजनुसदज पणिमणिसुवर्णसमुद्रादिदष्टंतलक्षयोजन पणिसूर्य
प्रसादषधूंध्वमुकीइककसंक्रांतिइउऋष्टदिवसइयोजनलक्ष२१प्रमाणादषइफासिकंतिमउश्क
रइतस्र्यनुपलाव उक्तंच लरकोदपगवीसायरगोद्दिपुष्करदंमिउदयपबंतिनरा स्रूरंउक्कोसिए
दिवासे१४ सासाणदिवशजसासासालइशब्दसां सलीइ तनिःककलातदउत्साषादिचीनीकल्पाते
दउनांसांसलीइंतस्वरूपकदइबइजशब्दनीकल्यासमीश्रेणइद दिसइतशब्दजानांश्वराउव्याणी

भासासमसेढीउ सद्दं सुणइ मीसि यं सुणइ वीसेढी पुण सद्दं सुणेइ निअमा
पराघाए ५ ईहाअपोहवीमंसा म ग्गणा य गवेसणा सन्ना सई मई पन्ना।
सव्वं आभिणिबोहियं ६ से त्तं आ भिणिबोहियनाणं परोक्खं से त्तं मइ
नाणं । से किं तं सुयनाणपरोक्खं सु यनाणपरोक्खं चोद्दसविहं प० तं अक्ख
रसुयं १ अणक्खरसुयं २ सन्निसुयं ३ असन्निसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ साइ
यं ७ अणाइयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं

इअधर्मलोचनं पष्ठापञ्ञावित्राष्टहयोपञ्ञामघीकइ प्रस्तुतवस्तुनइविषइयथावस्थितधर्मलोच
नपसर्वालदमतिज्ञाननाउमतिज्ञान सर्वलिंस्वरूपजाणपूवलीसर्वचरणक्रियाधारवाश्रुतज्ञान
स्वरूपजाणिवाशिष्यप्रश्नकरइ सेकिं० अथकिस्तश्रुतज्ञान गुरुनीत्याश्रुतज्ञान १४स्ववेदतयथा
अक्करसुयंइत्यादि१४भेद अक्खरअनक्खरमांदि सर्वसंसवइअनइ१४भेदकस्यातकोईपतलाल।

जउफलरस्याबइ तद
नइशब्दपणइ उणमावा
लोलीसूतवईतउकानइ
राइं तमिश्रकदीइंतसां।
सलइपणिहुरखीजशब्द
फइतउफलनसांसलइ
समिश्रसां सलइ विसेढी
०स्रुत्रा हू समीश्रेणि
नीक ल्या जा तावकोजे
वाटइ पु फलफ्तात
पकइया सइविश्रेणइ।
शब्दपणइ पणमावाघात्या
तक्रुपा दीनाकर्णश्रेणा
तीणइसांसल्यात विश्रेण
शब्दसांललवाकदीइते मू
लगाशब्द ३२ नीवल्याए
वाघातीसां सलइतेश्र

बंभीनइतेशीसूद ए४।
लावपंविशीनइस्करक्ष
क्षरलक्षिणाकंडीनइउप
दिश्रासांसलवुनधी तद
नइक्षयोपशमइअक्षरल
ब्धिउपजइ आदारादिअ
गीकरइ तलणीणकं
डीआ द नइअक्षर
आत क द तांदीषन
दीतद ल दिश्राते जा
वमनश्रो तेडाइं शब्दसां
सलीजांणइ पदशंरवशब्द
इत्यादिच०आम्रफलादि
दिषइतआदरइणाउवं
उइ तिमरसगंधस्पर्शी।
जाणवाप अक्षरश्रुत।
सेकिंतंप तकेस्तुगुरुकदे
आनकसेद

१३ अणंगपविट्ठं १४ से किं तं अक्खरसुयं अक्खरसुयं तिविहं पं तं सन्नक्खरं १
वंजणक्खरं २ लद्धिअक्खरं ३ से किं तं सन्नक्खरं सन्नक्खरं अक्खरस्स संठाणागिई
सस्सरकरं उच्छणं बंभी पलिडलिवी पवत्तइ एवं लिवीए अट्ठारसविहे लक्खणे।
विहाणा । पं तं बंभी १ जमणालिया २ दासऊरिया ३ उअंतरकरा ४ अक्खरपुट्ठिया
५ पोक्खरसारिया ६ पहाराईया ७ पलावईया ८ वावस्सइया ९ णिण्हइया १० अं
कलिवी ११ गणियालिवी १२ आयं सलिवी १३ गंधव्वलिवी १४ कामिली १५
माहेसरी १६ पोलिंदी १७ से त्तं सन्नक्खरं ८ से किं तं वंजणक्खरं वंज
णाभिलावो वंजणक्खरं तं दी हं रहस्सं उयंतं अणुदंता दंतिउदंता
लवं सवियं दिविदिवियं अणु णासियं सञ्चं ब से तं सन्नक्खरं १ से किं
तं वंजणक्खरं वंजणक्खरं अक्ख रस्स वंजणाभिलावो से तं वंजणक्खरं २
से किं तं लद्धिअक्खरं लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धिअस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ
तं सोइंदियलद्धिअक्खरं चक्खिंदियलद्धिअक्खरं घाणिंदियलद्धिअक्खरं रसणिंदिअ
लद्धिअक्खरं फासिंदियलद्धिअक्खरं नोइंदियलद्धिअक्खरं से तं लद्धिअक्खरं ३ से
तं अक्खरसुयं से किं तं अणक्खरसुयं अणेगविहं पं तं

णाजिअल्पसुद्धिमाधणीन
इविशेषइज्ञाणवंबइ
तसणीवलीश्वलटकादि
उ वलीतेसेदइश्वजाणवा
जिसाप्रश्नकरइ सेकिं०
तकेस्तुअक्षरश्रुतगुरु
शब्द त्रिवि धंसरण०अ
क्षरनीसं स्था नआक
नजाण इ० ० जीवस्व
सावइजे उ पयोगस्तं
अक्षरउच रइतलाव
श्रुत सेकिंतंवि०अकारा
दिअचरइलघुदीर्घादिअव
रइ तावयइनउसावश्रुत
लंद्धि०नरसाअक्षरउचर
इतअक्षरल ब्धितमध्यप
कंडीनइउअविरूगादु।

नइ ते मम मनो लब्भइ सर्वा
परनासंसारइ जाणइ ज
स्सनत्थि॰ जेहनइ नथी इ
हापोहादि ते समूर्छिम पं
चेंद्री विगलेंद्री जाणवा तेम
न्यइ मनो लब्धप्राप्तस्क
टतरज्ञा ण इतघामं।
ज्ञादं चं द्री नीउपा
धाइत्र्य त्य जाणइ ते।
थीस्फुट ब्रुरिंद्री तथी।
स्फुटतेंद्री तथी स्फुटबे
द्री तथी एकेंद्री ते सप
केंद्रीनइ प्रायो मनोद्रव्या
भसंनवानतिः केवल अ
व्यक्त सने॰ ते कालीउपदे
सइ संज्ञी जाणी इं सेकिं तके

उस्सासनीसास णि॰ थूंकहं खासहं छीकहं निसघनसी अनुं मणुं॰ वासरहं छेलि॰ सीट
कुस॰ कुणह्लु एक अक्षर सासले तउदेषी॰ द्वहं जाणइ एसदा चिंता उरबइ मणु॰ मीडुं तअन
क्षरकहीइ छेली॰ स्नाती सेकिं॰ तके ही सन्नीश्रुत जसंज्ञाइ स्मरण करइ ते संज्ञीश्रुत त्रि

उस्ससियं नीससियं निछूढं खासियं च छीयं च निस्सिंघियमणुसारं अ
णक्खरं छेलिआईयं २ सेतं अ णक्खरसुयं सेकिंतं सन्निसुयं २ तिविहं
पं तं कालिउवएसेणं हेऊव एसेणं दिट्ठिवाऊवएसेणं सेकिंतं का
लिउवएसेणं कालिउवएसे णं जस्सणं अत्थि ईहा अपोहा मग्गणा
गवेसणा चिंतावीमंसा सेणं सन्नीतिलब्भइ जस्सणं नत्थि ईहा अपोहा
मग्गणा गवेसणा चिंतावीमंसा। सेणं असन्नीतिलब्भइ सेतं कालिउवएसेणं
सेकिंतं हेऊवएसेणं जस्सणं अत्थि अभिसंधारणं उविआ करणसत्ती सेणं स

ज्ञाद् उकपदेस जस्स॰ जेहनइ छइ अत्थि॰ विका: विकआलोचनं तत्पूर्वकरणकारणं आ
शक्ति प्रवर्त्तत संज्ञादि उक: जस्स॰ जेहनइ नथी पूर्वकूं अलिअ्यरह करवानी शक्ति ते किमाबहीआ
दिज्ञाव बतुरिंदी इत्यत्र निवर्त्तविष इ प्रवर्त्तहं निवर्त्तहं चीत इम नो व्यापार विना मन प्रवर्त्ततां पंचेंद्री
नइ छइ बेंद्री आदिनइ नहीं दतइ सन्ना जाणइ एणि बेंद्री आदि चिंता वर्त्तमान कालविषइ नहीं प्रव

विध सेकिं॰ तके हेतु कालि
उवएसे जस्सत्थि॰ जेह
नइ दीर्घकालनउ उपदे
आचिंतनी वयवु छइ ते
किहूं ईहा॰ अतापदार्थनूं
आलोचहं अपो॰ निश्चय
मग्गा॰ अ न्वयमस्तिधर्म
व्यवतार व ॰वितार
कुधर्म स्व द पर्या
लोचनं। विं ताणाक
रूप २ इम। वीतवइ वि॰
इमजयटइ एगलेंजि सम्मी
पइलाल्नइ तथो देवादिम
नःप्रत्यासत्वमात हनी त्रि
कालनी चिंता स्मरणा छइ
ते सन्नी स्यातणी
तिमदीवा थीवस्तुला

स्वत्र सन्नी असन्नीउपरिव
इ हेउ आदिद्रष्टीहूं वालइ
ते असन्नीश्रुत सेकिं तके
तूससमश्रुत युस्फाद जं॰
जिष्पति स्वरि॰ अर्हत का
हिअष्टयातिहारस्तपंतेन
णीकोइकु पल्लादिनइ हे
वतमीस जा छवासक
धतेस द द टालवा
तगा॰स मय गूई आया
दिरूप तेन णी तहनाद
वनइ पणि छइ ते सणी उ
प्पण उपन्नाज्ञानादि तेनेह
नादवनइ पणि छइ तटाल
वायंदह तिलो॰ त्रैलोक्य
नेदीगस्नव्या परोक्षप्रत्यक्ष
नाते हनादवनइ पणि छइ

न कालविंतन न थी प्रथव्यादि एकेंद्री त्रुई इस्थानि तूं जाणइ हिवे तेनवी एणि आहारादि संज्ञा प्रथव्यादिनइ
छइ ते अनंत अव्यक्तरूप ते नणी ए थियादि असन्नी हिनइ करी जाणइ बइंद्री आदि हेतुवयइं नन्हं
पाइ उंतन णी सन्नी हेउ कहीइ जि छूण संचित उमिथ्याण मिसुविसयवत्तुसु विचिंति नियमंति स
हेदपरिपालणा हेउ १ प्रापणा संपयंचिय कालमिन यायादी हकालतूंतं हेउ वायसन्ना न बहु होइ

न्नीतिलब्भइ जस्सणं नत्थि अभिसंधारणं उविआ करणसत्ती सेणं असन्नीतिल
ब्भइ सेतं हेऊवएसेणं सेकिंतं दिट्ठिवा उवएसेणं दिट्ठिवाउवएसेणं सन्निसु
अस्स खउवसमेणं सन्नी लब्भइ अस न्निसुअस्स खउवसमेणं असन्नी ल
ब्भइ सेतं दिट्ठिवाउवएसेणं सेतं स न्निसुअं सेतं असन्निसुअं ४ सेकिं
तं सम्मसुअं २ जं इमं अरहंतेहिं भग वंतेहिं उप्पन्ननाणदंसणधरेहिं तेलु
क्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं तीयपडुप्प न्नमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरि
सीहिं पणीअं दुवालसंगं गणिपिडगं तंजहा आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ
४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्त

तटालवा नीत॰ चकाल हजाणइ तेनेहनादवनइ एणि कृत लूत्र कात कत्र्त जाणि नाप्हवा स
ह॰ सर्वज्ञाता हिं॰ तणइ पणि॰ कस्क द्वादशांगी आचार्यनी पेटी नं आचारादि ते मध्ये आवश्यिका
दिपणि आवां किमजिम इव्यास्तमादिपटइ वत्राआया॥

इ असन्नी २ अन्यत्रापि
हेतूदतोन संज्ञात्वमा
श्रित्याक्षं कल्पकारुप
तेगाया समनस्का जंगमा
वउगर्वदा अमनस्का पंच
विध पृथिवीकायादयो
जीवा सेतं ॰ सोयं हेतू
पदेशात्तु सं जा सेकिं
॰ अथ क्ति स्त इत्थवा
दोपदेस इ संज्ञइ इष्ट
सम्यगृडा थीमुंबहहं
सद्दहणा इं वेद्दहंतइत्थ
वाद सन्नी॰ सम्यगदृष्टी
नू स्वत्रक्षायोपशामइस्त
नइ ते सन्नीश्रुत अवस
मी पत्रूपणा अस्स॰ मि
थ्याश्रुतक्षायोपशामइं सं
ज्ञालानइ तइत्थवाद सर्व

आपणी कल्पना इं करी बु
द्धि मनइं निर्मित्तं भारहं
इत्यादि विशेष विना इतउ
नाइं पद्या॰ भारहादि जो मं
मिथ्यात्वीनइं अभिनिवेश
पणि मिथ्या श्रुतइ परिण
मइ पद्या प परिणता
दिसा म्य ग ज्ञानीसं
बलतो। जो तां समय
कित्त्वलाभ नाम जीयस्य
वस्तभावतां समायइं व
णमइ श्रुत॰ तथा मिथ्या
त्वीनइ पणि भारहादि भा
लतां जो तां सर्वापर विरुद्ध
जाणी सम्यग् जइ परिणमइ
घोटा जाणी सम्यक्त्वि आवइ

रोववाइयदसाउ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिठिवाउ १२ इच्चेइअं
दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुअं अभिन्नदसपुव्विस्स सम्मसुअं
तेण परं भिन्नेसु भयणा। से त्तं सम्मसुयं। से किं तं मिच्छसुअं जं इमं अन्नाणिएहिं
मिच्छादिट्ठीएहिं सच्छंदबुद्धीएहिं मइविगप्पिअं तं जहा भारहं रामायणं भीमा।
सुरुक्कं कोडिल्लयं सगडभद्दिआउ खोडमुहं कप्पासिअं नागसुहुमं कणगसत्तरी
रयणावलि वइसेसिअं बुद्धवयणं ते   सिअं काविलिअं लोगायतं सट्ठितंतं माढरं
पुराणं वागरणं भागवयं पायंजली   पुस्सदेवयं लेहं गणिअं सउणरुअं ना
डयाइं अहवा बावत्तरि कलाउ।   चत्तारि अ वेआ संगोवंगा
एआइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहिआइं   मिच्छसुअं एयाइं चेव सम्म।
दिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहिआइं सम्म।   सुअं अहवा मिच्छदिट्ठिस्स सम्म
सुअं कम्हा सम्मत्तहेउत्तणउ जम्हा ते मिच्छदिट्ठिआ तेहिं चेव समएहिं चोइआ
समाणा केइ सपक्खदिट्ठीउ वमंति। से त्तं मिच्छसुअं। से किं तं साइअं सपज्जवसिअं
अणाइअं अपज्जवसिअं च इच्चेइअं दुवालसंगं गणिपिडगं वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइअं
शिष्यसंबंधानीतो णइ आस्वइ आ पणइ जे पेरवह्न तउ सपक्ष बो इइ विउ॰ विद्रू नइ आ श्रीआदि अंतवइ।

धणी सणणहार श्रुआश्री
सदृंवाद्रूं परिणमइ ते सुकृ
पकट इ चउ॰ १४ पूर्वधर
नीनइं जे तेलण इत सम्यग्
श्रुत १३।१२।११।१० पूर्वनो
धणीनइ सर्व सम्यग्श्रु
तजे इमं॰ अन्नाणिस्यं।
अन्ना॰ अ ज्ञानीना
कीध २ त अज्ञा
नी किम जि मलक्कं
नाधणी आ गलि १० टा
का नाधणी निर्द्व नितिमम
म्यग् विना अज्ञानी अन्य
नत्रां कतलूएक सम्यग्
दृष्टीनइ पणि जइ पणि इ
वा मिथ्या ३४ ॰मिथ्या
दृष्टी मा का ध्या सहं॰

नादि वइ पणि लइ॰न
इ अंत बइ अ सव्यनउ
म नि श्रुत अनादि अ
नंत बइ श्रुत उत्कृष्ट
जघन्य विचार कहइ।
इबइ सव्वा॰ सर्वा
काशना देनाजप
देशम अं ॰पर्या
ण। स॰ श्रा ॰ते
सर्वागि २७ देश
अनंत गु। एकोउ
इत देना प्रदेश ना अ
नंता अगुरुलघु पर्या
जइ ततला। सर्व आ
काश प्रदेश थी अनंत
गुणा जइ वली एकेक
आकाश प्रदेशइ जे

अवि॰ अविरह अनादि अनंत द्रव्य उ॰ एक पुरुष आश्री सम्यग् श्रुत आदि अंत बइ बहु॰ घणा पुरुष आश्री अ
नादि अनंत क्षेत्र ५ भरत ५ ऐरवत ५ एरवत नइ आदि अंत ५ महाविदेह आश्री अनादि अनंत उस॰ त्रीजा आ
रानां अंत थी पांच मा नांइ आदि अंत उसप्पिणीइं त्रिजा आरि उसप्प॰ त्रीजइ आरइ आदि चउथइ अंत णे

सपज्जवसिअं अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइअं अपज्जवसिअं। तं समासउ चउव्वि
हं पं तं दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ तत्थ दव्वउ णं सम्मसुअं एगं पुरिसं पडुच्च सा।
इअं सपज्जवसिअं बहवे पुरिसे य पडुच्च   अणाइअं अपज्जवसिअं खित्तउ णं पं
च भरहाइं पंच एरवयाइं पडुच्च   साइअं सपज्जवसिअं पंच महाविदेहाइं प
डुच्च अणाइअं अपज्जवसिअं का   लउ णं उसप्पिणिं उसप्पिणिं च पडुच्च सा
इअं सपज्जवसिअं नोउसप्पिणिं   नोउसप्पिणिं च पडुच्च अणाइअं अपज्जव
सिअं भावउ णं जे जया जिणपन्नत्ता। भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति
दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति तया ते भावे पडुच्च साइअं सपज्जवसिअं
खउवसमिअं पुण भावं पडुच्च अणाइअं अपज्जवसिअं अहवा भवसिद्धिअस्स सुअं
साइअं सपज्जवसिअं अभवसिद्धिअस्स सुअं अणाइअं अपज्जवसिअं सव्वागासपएस
ते लागु रूपलघु प्रदेश जइ। तत्सर्व सिद्धी रूत कीजइ पतलइ एक अक्षर नी पजइ निगम वली धर्मास्तिकायादि

॰उसप्पिणी उसप्पिणि॰
नथी आदि अनंत सा
स्वत काल महाविदेह
इ तत यउ तत रात्रि।
श्री क्षायोपशमिक भाव
वइ निदोषी आदि अंत
बइ खउ ॰क्षायोप
शमिक श्री नउ अना
दि अ नं उ तस्य
जे क्षायो प शमनउ
सदवर्तइ बइ तवण
जवानइ श्रुत सात आदि
य भव्य मिथ्यात्व आवइ त
दा अंत तथा केवलि स्या
न ऊपजइ तदा श्रुत नउ
आदि बइ पुणअं तनट।
पनायुनदी मिथ्यात्व अ

नंदी स्त्र पत्रा० ३५
ऽगामीकऽदा आदि
मध्ये हेतुमात्परिस्थ
आलापा तथा गाथा
कावस्वाल्याज्ञाऽ तग
मीकाक्षिकउदृष्टवा
दिकऽनं समा० आ
गमंत्र उ पज्ञास
स्तु. ऽ ह ऽत
नणी। प विस्तुक
दऽश्रनं ० अनंगऽ
विष्टकदऽऽविऽश्रा
वशिकविनारकप्रव
चदमादि आवऽ तउ
जूदाकाऽकदीऽ वि
णेघेमनिज्ञानविर्मल
सावाकऽऽअंगप्रविष्ट

नाऽक्षरापक्षमकोऽउडत्कृष्टरयथश्रुहरयंऽनऽस्यउवउत्कृष्टसर्वजघन्यानंतोणऽ अनंताश्रुतज्ञान
नापक्षयाऽऽउत्कृष्टपर्यायकेवलज्ञानस्य सप्तसर्वज्ञानस्यक्षतज्ञानमतिज्ञानंउअनंतमुनाग

गं सव्वागासपएसेहिं अणंतगुणिअं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ सव्वजीवाणंपि अ णं
अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ जइ पुण सोवि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवत्तं
पाविज्जा सुट्ठुवि मेहसमुदए होइ प- भा चंदसूराणं से तं साइअं सपज्जवसिअं से
तं अणाइअं अपज्जवसिअं से किं तं गमिअं गमिअं दिट्ठिवाओ अगमिअं कालि-
अं सुयं से तं गमिअं से तं अगमिअं अहवा तं समासओ दुविहं पं तं अं-
गपविट्ठं अंगबाहिरं च से किं तं अंगबाहिरं अंगबाहिरं दुविहं पं तं आव-
स्सयं च आवस्सयवइरित्तं च से किं तं आवस्सयं आवस्सयं छव्विहं पं तं सामाइयं
चउवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणं से तं आवस्सयं से किं तं आ-
वस्सयवइरित्तं आवस्सयवइरित्तं दुविहं पं तं कालियं उक्कालियं च से किं तं उक्कालि-

ताऽनंतीर्थंकरगणधरनामपदेशास्या अनेरऽविवरअनुसारतोऽस्मात् अंगबाह्यविहीनऽ विनाय।
लीविशेष आवश्यकतमाविनारिक सएते कर्णआवश्यक बहिर्भूत आवश्यकतउअर्थात् अवश्यकर्त्तव्य
तयाश्रुतगणइआत्मानऽस्थापऽ उक्काललक्षारिकालवज्जपठनीइ तदुत्कालिकं तदनेकविधं तंतेऽणाव
ऽआऽ॥

सदा उघाडोउघाडुइ
ऊ ऊउसर्वज्ञानीवर
णादमणारेरणीसर्व
प्रादेशा अनंतामुख
णावीदाणीऽऽ तुंबद
ऽत्ता वास्वामावउखत
न्यपणो। आवृतीन
सकऽ ज ऽवुदउ
तेत लू ऽ जाता
आवर ऽ तज्जीव
पारीअ जीव थाऽ
ऊणानीपरऽजिम्स्य
न्नघनतमसरूपऽऽ
वटऽचंऽसूरऽमेज
रद्दऽ प्रतिनबउकअ
धकार नऽइति
मास। किं पंताक

सुक्ष्मत्रीदिजोऽ वापऽअ
याउ आत्माविशोधकरवा
तुभ्यारुयायक्ष्नतमेद
वायुपसरागीवीतरा
गीयऽ पतंअक्षत आचार
सलेप संलेखनात्रिविधा
ऽऽरर्ष उआउरो
गश्या। वा दिसऽवा।
त्या स्या न कप्पा०
जिना। क ल्पविहरा
रकल्पय उवर्ग अंग
उदिनीचूलिका अरुणदे
वकायऽगातमोवारविव
णिअरुणदेवना उगरु
घाऽआश्रयामविनआग
लिऽत्तोपपर्युपास्तिकरऽ
ऽरुदंथाऽत्तौ पवऽउत्तान्य

कल्प्याकल्प्याऽकल्प्यकंहिदं तथाकल्पनं कल्प्यस्थविरादिकल्पतेदर्ना स्वेदवु लघुत्वं बल घुत्राय
र प्रमादाप्रमादफल नउविपाककादिउक्षय लक्षणो निमध्ये परिहेमनुष्यरूपं महं विषयऽकल्पा

यं उक्कालियं अणेगविहं पं तं दसवेआलिअं कप्पिआकप्पिअं चुल्लकप्पसुयं म-
हाकप्पसुअं उववाइयं रायपसेणियं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा।
पमायप्पमायं नंदी अणुओगदाराइं देविंदत्थओ तंदुलवेआलिअं चंदगविज्झयं
सूरपन्नत्ती पोरिसिमंडलं मंडलपवे- सो विज्जाचरणविणिच्छओ गणिविज्जा झा-
णविभत्ती मरणविभत्ती आयविसो- ही वीअरागसुयं संलेहणासुअं विहा-
रकप्पो चरणविही आउरपच्चक्ख- ाणं महापच्चक्खाणं एवमाइ से तं उक्का-
लिअं से किं तं कालिअं कालिअं अ- णेगविहं पं तं उत्तरज्झयणाइं दसाओ क-
प्पो ववहारो निसीहं महानिसीहं इसि- भासिआइं जंबूदीवपन्नत्ती दीवसागरप-
न्नत्ती चंदपन्नत्ती खुड्डिआविमाणपविभत्ती महल्लिआविमाणपविभत्ती अंगचूलिआ
वग्गचूलिआ विवाहचूलिआ अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए
वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए कदऽउत्थाउत्पादऽपश्चिमौ आमा।
दितरिवार २।३।३ एकाग्रवगऽगुणाऽविषमासणऽ नदानेतोकआऊलनव्याऊलवाऽमऽ समसुपसमुत्त

णयोऽऽ तमाअमिस्तुक्ती
ऊशलीनदीतिमप्रमाद
पत्तेदेनसलत्र अक्षतसूर्य
नूवालंप्रऊऽपोरिसि
प्रमाणविदलऽल्पाड
ऽकाउस्मादपोरिसी
दिमंउपस्त् ध्येविज्ना
माउत्ना नु विचार
विद्या ० वि द्याऽ
नेतमम यु दर्शन
सहिलिवारि बपमज्ज
अमणतिर्षा आगतिवा
लव अज्ञिप्ततउगणीने
दनीविद्या मंत्रपा तमादि
कथिद्यानीणऽकरीआन
सामाऽकादि कार्य उत्त

नंदी ट० पा०३६
लिक कहइ ८४ पइन्ना
सहस्र सम भगवन्त श्री ऋ
षभस्वामीजीवतां ऊमा
क्षिवंत साधु कृता तेणइ
कीधाता पइन्ना कालिक
तथा मध्य० अजितादि
जावपा र्श्व जिनना
इसे ष्या ता पइन्ना
चउ०१ ४ सहस्र प
इन्ना श्री वर्द्धमानवा
रइ ऊधन कपीश्वरे का
ष्य० कआचार्य इम क
हइ उइ जेहनइ जेतला
शिष्य बुद्धिना जाण ज
इ तेकरइ तथा प्रत्ये० प्र
त्येकबुद्ध हुइ तेकरइं।

णकृत सोम इष्टइं गुणइ वार २ तथा उ नदि लोक अनाकुल सूषी थाइ । नाग० जिणइ कृत गुणनइ नाग कुमा
र उणम इ जादे अ मध्ययन मणे निग्रंथ परियाइ इनादे अकयमं कप्पि मारा न छ्या चवसमणं चक रेषि।

नागपरिआवणिआउ निरयावलियाउ कप्पिआउ कप्पवडिंसिआउ पुप्फिआउ पु
प्फचूलिआउ वन्हीदसाउ एवमाइयाइं चउरासीइ पइन्नगसहस्साइं भगवउ अरह
उ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स त हा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं
जिणवराणं चोद्दसपइन्नगसहस्सा णि भगवउ वद्धमाणसामिस्स अहवा जस्स ज
त्तिआ सीसा उप्पत्तिआए वेणइआ ए कम्मिआए पारिणामिआए चउव्विहाए बु
द्धीए उववेआ तस्स तत्तिआइं पइन्नग सहस्साइं पत्तेअबुद्धा वि तत्तिआ चेव से त्तं का
लियं से त्तं आवस्सयवइरित्तं से त्तं अणं गपविट्ठं से किं तं अंगपविट्ठं अंगपविट्ठं दुवाल
सविहं पं तं आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६
उवासगदसाउ ७ अंतगडदसाउ ८ अणुत्तरोववाइयदसाउ ९ पण्हावागरणाइं १० वि
वागसुयं ११ दिट्ठिवाउ १२ से किं तं

गच्छ घणी अलगा विचरइ तु कोई कहइ शिष्य नदी ऋषा
दीनु अनइ प्रत्येक पुं जे दनइ जेतला शिष्य हुइ तेतला करइ ते कृत रजे प्रत्येकबुध नी कलीपक लुरदइ
पणि जिनप्रणीत धर्म आदरइ तत लणी शिष्य उक दीइं । से किं तं० तेह केहउ आचारांग सुयपाद।

सिंगनादितक ऊभेसुय
वरद्दानवेंति निरयज्ञा
वलिका प्रविष्टास्तत्र
नरगावासनुष्पावक्री
ष तेहनइ गंधंतविचार
कप्पि० क ल्पइं कल्पना
कथिवा २ उपक्ष
मादि य २ वासा
प्रंकीव २रि अनेइव
लीणा सव पणइवर्ती
त विशेषार्थ तेउ फइ
ला विष्ण अंधगविण्ह
नासंतानी यादसनीवा
तजिहां तथा १० अध्यय
नजिहां ३६ पचलिका
नामकं ख्यातक।

णाणा० कालेविणए ब
हुमाणे उवहाणे तह य
निह्नवणे विंजण अत्थ
तदुभय अट्ठविहो णाण
मायारो १ दंस० निसं
कीय अट्ठविहिमध्येउ
लाव ताइ गमी कही
इं अइसे स इहिआ
यरि य वा ईअ
म्मकहि स्व वगान
मत्री विद्या रायागण
समयाथनि श्चेवलाव
ति १ चारि० पणिहा ण
जोगजुत्तो पंचहिं समइ
हिं तीहिं गुत्तीहिं एसो च
रित्तायारो अट्ठविहो हो
इ नायव्वो १ तव० बारसे

आयार० आचरण आचार आचार्य नइ ति आचारगोचर सुरु आचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरित्यर्थः
तेआचार कहीइं आचार स्तत तथा आचार आधार सूत आयारेणं० आचारांगइं श्रमण नइ परवा
द कर्मदरू नइं आ० आचार ज्ञानाचारादिक तेह गोयर भिक्षाग्रहणविधि विनयो ज्ञानादि विण०
कर्मक्षय विनयफल सिक्खा० ग्रहणा सेवनद्वय भासा० भासा अभाषा तुम्हार चरण० व्रत ५ समणधम

आयारे आयारेणं समणाणं निग्गंथाणं आयारगोयर विणय वेणइय सिक्खाभा
सा अभासा चरणकरणजायामाया वित्तीउ आघविज्जंति से समासउ पंचविहे प
ण्णत्ते तंजहा नाणायारे १ दंसणा यारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियाया
रे आयारेणं परित्ता वायणा संखि ज्जा अणुउगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा
सिलोया संखिज्जाउ निज्जुत्तीउ संखि ज्जाउ पडिवत्तीउ सेणं अंगट्ठयाए पढमे अंगे दो
सुअक्खंधा पणवीसं अज्झयणा पंचा सीइ उद्देसणकाला पंचासीइ समुद्देसणकाला
अट्ठारस पयसहस्साणि पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता त

८ वीरियाय० अणिगुहय बल वीरिउ परक्कमइ जो ऊद्यम आउ जुंजइ य जहाथामं नायव्वो वीरियायारो १
परत्ता० काल आश्री सांत पणि आचार्यवाचना घा शिष्य नणइ ते आश्री संख्याता काल लगइ आउ पाल गइ
तेह लणी परित्ता संखि० संख्याता पंचवीसा अध्ययन आश्री धसदने तेह लणी अनुयोगद्वार संख्याता वेढा० छंद
गाथादिका निज्जु० निर्युक्ति घणे प्रकारे अर्थ वर्तावइं पडि० पडिवत्ति जावदमवि दाजीवा इत्यादि सेणं० ते अं
गई प्रथमांग दो० विश्रुतस्कंध अध्ययन नाम सूद पय० पदप्रमाण

१० संजम १० वियावचे
च १० बंभ ९ गुत्ती ३ ना
णाइयं तिय० तव १२
कोहनिग्गहाई चर
णमेयं १ पिंडविसोही
समई सावणा पडिमा
इंदिय निग्गहो पडि
लेहण गुत्तीउ अ
भिग्गहा चेव करण
णं तु २० चरणकर
ण जाया० संजम मा
त्रामायाय० संयम निमि
त्त आहार मात्रा लिइं वि
त्त० वितिभि अनियद
विशेषतज्ञानादिआचा
र स्वरूप नइ दिनाव इनी
समास पर्ति दकहइ

नंदीसू०पत्रा०३७
सो०नवपदार्थसद्द
इजीवाजीवआ०पुन्य
हइ ऽपणि एक कहइ
०कलइ कलइ जनीप
न्नु १० कक्कहइ नानी
तिइजक्कइ २० कक्कद
इईश्वरइ ३० कक्क
हइस्व ला वइ ४०
कक द इ आत्म
रसर्वव्य २पी ५०एणं
वतन्पसा सनाउपरि
एपांचपरिउपरिसास
नाउपरि१०हुआतिम५
लावआएणाआश्रीअ
सासताऊपरितिम०५
०रआश्रीअसासताउ

सासय० सासता धर्मास्तिकायादि। कृता० प्रयोगसावी समा ऽउ घटव्या घटसंध्या: ऋनगादय एते भावी। पित्रमादयो निबध्धं सूत्र स्वरूपत उक्ता। निका० निर्युक्ति संग्रहणादेत्रुदाहरणादिभिरनेकधा व्यवस्था पिता। जिण० पदार्थ आख्यायते। आघ० सामान्यवी। अपन्न० उक्ता प्यं तन्नामादि। परू० नामलेदासविशेष। दंस० उपमावी यथा गो तथा गवय। णिदं० दृउ दृष्टांत इकरी दर्षालइ। उव० शिष्यनइ हृदय निश्चइ

सा अणंता थावरा। सासयकडनिबद्धनिकाइआ। जिणपन्नत्ता भावा। आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति। दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया एवं नाया। एवं विन्नाया। एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जंति। से तं आयारे। से किं तं सूअगडे। सूअगडेणं लोए सूइज्जइ अलोए सूइज्जइ लोआलोए सूइज्जंति। जीवा सूइज्जंति अजीवा सूइज्जंति जीवाजीवा सूइज्जंति। ससमए सूइज्जंति परसमए सूइज्जंति ससमयपरसमए सूइज्जंति। सूयगडेणं असीअस्स किरिआवाइसयस्स चउरासीइए अकिरियावाईणं।

परि २० लेद एकपदार्थउपरि तिम १ अजीव सद्दहइ तेपणि २० लेद तिम पुन्यना २० लेद तिम पापना लेद २० आश्रवना लेद २० तिम संवरना २० लेद तिम निर्जराना लेद २० बंध २० मोक्षना २० लेद नवपदार्थ उपरि थई १८० लेद इ क्रियावादी ना उ० ८४ अक्रियावादी तेजीव अजीव सद्दहइ पुन्यपापवर्जी ७ पदार्थ सद्दहइ स्वेक्षिपलेद २ बहु दिशा स्मकरी एकेक पदार्थउपरि दालद आप ७ परितिमबइ पर ७ परि ७ एकेक पदार्थउपरि बिबि लेद सद्दहइ ७ थई ८४ मतधारी॥

श्रो०स्वआचारांगना
णाहूफलकहइछइ
सवपआचारांगथी
श्रद्धीनइ प्रवर्त्तइ तेव
त्पन्नआत्मक्रियावंत
तेवनस्वआचारांग
नाथा० उअआचारां
गना ला वलावइ
त स णी तेद
ऊनर सा ता विचा
०यथानि र्युक्तिसंग्र
हणीहेतूदाहरणादि
लिविधिं प्रहूप्यतातथा
विधेऊतातलवेति।स
किं०तंकेऊसूयगडांग
ऊसूत्र ३७ सनइजी
वादिसू लीइं। अ

त्राविवक्षेतेन न०वंचा
याविकल्पालवंति ६
तथानादेवत्रमसबूंच
यदायुगपदेकेनउा
ष्टेनवकुमिस्यात तदा
तद्भावकः ज्ञाहूकोपि
न विद्यात इतिवाक्य
छंतथा ध लागीव
ली स ल्प पदा
र्थउपरि र मोइतो
६७लेद। जडधयाप
तांहउलेदसर्वथा जीवा
दिस्वरूपन जाणइतउ
जीनमिथंगणइत उजा
नसुंलणीइविनय०।
विनयआचरइते विन
यवादीअनाहइइते।

अना० अज्ञानवादीना ६७ लेद लषीइ छइ। प्रथम अज्ञानवादी अज्ञान श्रेय कहइ ज्ञान लणी अहंकार आवइ कर्मबंधइ अलिनिवेस० गृंथाइ विवाद करइ संसार लमइ तेलणी ज्ञानन लणीइ

सत्तट्ठीए अन्नाणिअवाईणं बत्तीसाए वेणइअवाईणं तिण्हं तेसट्ठीणं पासंडिअसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ। सूयगडेणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। सेणं अंगट्ठयाए बिइए अंगे दो सुअक्खंधा तेवीसं अज्झयणा तित्तीसं उद्देसणकाला तित्तीसं समुद्देसणकाला २ छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जंति से तं सूयगडे २ से किं तं ठाणे ठाणेणं जीवा ठाविज्जंति अजीवा ठाविज्जंति जीवाजीवा ठाविज्जंति ससमए ठाविज्जंति परसमए

लिंगाचारी शास्त्र विनयइ तिपनि लक्षणावदितव्या तद्नात्र ३२ लेद सुर १ नृप २ यती ३ ज्ञाति ४ स्थिवर ५ अधम ६ माता ७ पिता ८ ए आठनउ विनय करइ मनइ १ वचनइ २ कायाइं ३ दानइ ४ इम सर्वमीली ३२ जाणिवा ए विनयवादी तिन्न ३६३ प्रवादी दर्षारी तेहना मत निराकरी कोइ जिनवचनथा

तथानवपदार्थउपरि
सानसालेदसत्त्व१अ
सत्त्व२सदसत्त्व३अवा
च्यत्वं४सदवाच्यत्वं५अ
सदवाच्यत्व६सदसद
वाच्यत्वं७ चवतस्सत्व
स्वरूपेण वद्यमान
त्व १ मस्म त्वं परस्व
रूपेणा ठि छ मान
त्वं २ सद स त्वं स्वरू
पपररूपा स्यांविद्य
माना विद्यमानाविद्य
मानत्वं ३ तत्त्वयद्यपिस
र्ववस्तु स्वपररूपाभ्यां
सर्वदैवसत्तावत एव
सदसत्वे तथाकिंपिकिं
चिकदापि उक्तंतेप्रमा

नंदीसूत्र० पा ३८

समवाए० निर्ण
यक्रियते जीवादि
नु एगा ० एगस
मवा य ० षी ल
गता १० ० ताइ
वर्य० ष्म २णनउ
निर्णयि॥

विज्जइ ससमयपरसमए ठविज्जइ लोए ठविज्जइ अलोए ठविज्जइ लोआलोए ठवि
ज्जइ ठाणेणं टंका कूडा सेला सिहरिणो पब्भारा कुंडाइं गुहाउ आगरा द्दहा नईउ
आघविज्जंति ठाणेणं एगाइआए एगुत्तरिआए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढिआणं प
रूवणा आघविज्जइ ठाणेणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा
संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाउ निज्जु त्तीउ संखिज्जाउ संगहणीउ संखिज्जाउ पडिव
त्तीउ से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे। एगे सुअक्खंधे दस अज्झयणा एगवीसं
उद्देसणकाला एगवीसं समु द्देसणकाला बावत्तरिं पयसहस्सा पय
ग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंता। गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता
थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जं
ति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया
एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ से त्तं ठाणे से किं तं समवाए
समवाए णं जीवा समासिज्जंति अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति स
समए समासिज्जइ परसमए समासिज्जइ ससमयपरसमए समासिज्जइ लोए
समासिज्जइ अलोए समासिज्जइ लोआलोए समासिज्जइ समवाए णं एगाइ

पीइ। से किं० तिष्ठंति
जीवादयपदार्था अ
स्मिन्निति स्थानं जीवा
यस्य स्थापनं निर्यथाव
स्थितस्वरूपप्ररूप
णा। पर्वतोपरि सर्वतोभि
न्न टंका० छिन्नतट
टंककूटा ० शिख
यत ना दि सेला
०दम वं नादिमि
द० ज्ञाप रत्नतपवी
प्रलारा० कुंडजलोध
नीकल्पाज्जडात गुहा
तमस्सगुहादि एगा०
एगयथामांडी १० गा
णाताडी ३८

आणं एगुत्तरिआणं ठाणसयविवड्ढिआणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ दुवालस
विहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गो समासिज्जइ समवायस्स णं परित्ता वायणा सं
खिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाउ निज्जुत्तीउ संखि
ज्जाउ पडिवत्तीउ से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे एगे सुअक्खंधे एगे अज्झयणे एगे उ
द्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोआले पयसयसहस्से पयग्गेणं सं
खिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सास
यकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्न त्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति प
रूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति। उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया एवं
विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आ घविज्जइ से त्तं समवाए ४ से किं तं विवाहे विवा
हे णं जीवा विआहिज्जंति अजीवा विआहिज्जंति जीवाजीवा विआहिज्जइ ससमए विआ
हिज्जइ परसमए विआहिज्जंति ससमयपरसमए विआहिज्जंति लोए विआहिज्जंति
अलोए विआहिज्जइ लोआलोए विआहिज्जइ विवाहस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओ

गहाउ संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाउ निज्जुत्तीउ संखिज्जाउ संगहणीउ संखि-
ज्जाउ पडिवत्तीउ से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगे सुअक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसए
दस उद्देसगसहस्सा दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं दो ल-
क्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा।
परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघवि-
ज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से एवं
आया एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ से तं विवाहे ५ से किं तं
नायाधम्मकहाउ नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणसंडा-
इं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअपरलोइअ
इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ परिआया सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणा-
उ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईउ पुणबोहिलाभा
अंतकिरियाउ आघविज्जंति दस धम्मकहाणं वग्गा तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अ-

॥ से किं त। ते किम ज्ञाता
ज्ञाइं ज्ञातव्यं। उदाहरण
धम्म॰ धर्म्म आदरिअद
बोधइं ते॥

क्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइआए पंच पंच उवक्खाइआसयाइं एगमेगाए उवक्खाइआ-
ए पंच पंच अक्खाइआउवक्खाइआसयाए एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाउ कहाणगकोडीउ हवं-
ति त्ति मक्खायं नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुउगदारा संखिज्जा वेढा संखि-
ज्जा सिलोगा संखिज्जाउ निज्जुत्तीउ संखिज्जाउ संगहणीउ संखिज्जाउ पडिवत्तीउ से णं अंगट्ठया-
ए छट्ठे अंगे दो सुअक्खंधा एगूणवीसं अज्झयणा एगूणवीसं उद्देसणकाला एगूणवीसं
समुद्देसणकाला संखिज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं असंखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अ-
णंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइआ जिणपन्नत्ता भा-
वा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से एवं आ-
या एवं नाया एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणाए आघविज्जंति से तं नायाधम्मकहाउ
६ से किं तं उवासगदसाउ उवासगदसासु णं समणोवासगाणं नगराइं उज्जाणाइं वणसंडा-
इं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअपरलोइआ इड्ढिवि-
सेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ परिआया सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं सीलव्वयगुणवेरमण-

॥ दस॰ दशा धर्म
कथाना वर्ग ते छ
॰ ते साताना दस
अध्ययन तेह अ-
खायादि नही पण
लाने अध्ययन न
इ अवखायादि २१
एक सउ साढी एक
वीस कोडि दस व-
र्गनो अवखायादि
पांच सइ ५०० पांच
सइ करता एक स-
उ पंचवीस कोडि थ
इ पुणरुक्त म
ध्ये कोटि १२१ काढीइ
थाकती ३ कोडि क
थार हइ॥

पच्चक्खाणपोसहोववासगपडिवज्जणया पडिमाउउवसग्गा संलेहणाउभत्तपच्चक्खाणाइं पाउव
गमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाइउ पुणबोहिलाभा अंतकिरिआउ आघविज्जंति उ
वासगदसाणं परित्तावायणा संखिज्जा अणुउगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जा
उ निज्जुत्तीउ संखिज्जाउ संगहणीउ संखिज्जाउप डिवत्तीउ सेणंअंगठयाए सत्तमेअंगएगासुय
रकंधे दसअज्झयणा दसउद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखिज्जाइंपयसहस्साइं
पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंतागमा अ णंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरासा
सयकड निबद्ध निकाइआ जिणपन्नत्ताभा वा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दं
सिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेएवंआ या एवंनाया एवंविन्नाया एवंचरणकरणप
रूवणा आघविज्जंति सेत्तंउवासगदसाउ ७ सेकिंतंअंतगडदसाउ अंतगडदसासुणं अंत
गडाणंणगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्माय
रिया धम्मकहाउ इहलोगपारलोगिया इड्ढीविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ परियागा सुय
परिग्गहाया तवोवहाणाइंसंलेहणाइं भत्तपच्चक्खाणाइंपाउवगमणाइं सुकुलपच्चाइयाउ पुण

॥अंतगड०सालसीकरीसीझइतेहणीनइनइयविलइवर्ग१०अध्ययन॥

बोहिलाभा अंतकिरियाउअ आघविज्जंति अंतगडदसाणं परित्तावायणा संखिज्जा अणुउगदारा
संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाउ निज्जुत्तीउ संखिज्जाउ संगहणीउ संखिज्जाउ पडिवत्तीउ
सेणंअंगठयाए अठमेअंगे एगेसुअक्खंधे अठवग्गा अठउद्देसणकाला अठसमुद्देसणका
ला संखिज्जाइंपयसहस्सा पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसाअ
णंताथावरा सासयकड निबद्ध निकाइया जि णपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परू
विज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जं ति सेएवंआया एवंनाया एवंविन्नाया एवंचर
णकरणकरणपरूवणा आघविज्जंति से त्तंअंतगडदसाणं ८ सेकिंतंअणुत्तरोववा
इअदसाउ अणुत्तरोववाइयदसासुणं अणु त्तरोववाइआणंनगराइं उज्जाणाइं चेइआइं
वणसंडाइं समोसरणाइंरायाणो अम्मापिअ रोधम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइआ पारलो
इआइड्ढीविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउपरिआगा सुयपरिग्गहाआ तवोवहाणाइं पडिमाउ
उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइंपाउवगमणाइं अणुत्तरोववाइत्तिउववन्ना सुकुलपच्चा
याइउ बोहिलाभा अंतकिरिआउआघविज्जंति अणुत्तरोववाइअदसाणं परित्तावायणा संखिज्जा

अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे सुअखंधे तिन्नि वग्गा तिन्नि उद्देसणकाला तिन्नि समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकड निबद्ध निकाइआ जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जंति से त्तं अणुत्तरोववाइअदसाओ ९ से किं तं पण्हावागरणाइं पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं तं जहा अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं अद्दागपसिणाइं अन्नेवि विचित्ता देवाविज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुअखंधे पणयालीसं अज्झयणा पणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसं समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकड निबद्ध निकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया एवं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जंति से त्तं पण्हावागरणाइं १० से किं तं विवागसुअं विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ तत्थ णं दस दुहविवागा दस सुहविवागा से किं तं दुहविवागा दुहविवागा दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइआइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइअपरलोइआ इड्ढिविसेसा निरयगमणाइं संसारभवपवंचा दुहपरंपराओ दुकुलपच्चायाइ दुलहबोहिअत्तं आघविज्जइ से त्तं दुहविवागा से किं तं सुहविवागा सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइआइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिआ धम्मकहाओ इहलोइअपरलोइआ इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ परिआया सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुहपरंपराओ सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरिआओ आघविज्जंति विवागसुअस्स णं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ

निज्जुत्तीउ संखिज्जाउ संगहणीउ संखिज्जाउ पडिवत्तीउ सेणं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे दो सुअखं
धा वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला संखिज्जाइं पयसहस्सा पयग्गेणं सं
खिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनिकाइआ
जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेएवं
आया एवं नाया एवं विन्नाया एवं चरणकरण परूवणा आघविज्जइ सेत्तं विवागसुयं ११ से किं तं
दिट्ठिवाए दिट्ठिवाएणं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ से समासउ पंचविहे पन्नत्ते तं जहा प
रिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुउगे ४ चूलिआ ५ से किं तं परिकम्मे परिकम्मे सत्तविहे
पं तं सिद्धसेणिआपरिकम्मे १ मणुस्ससेणिआपरिकम्मे २ पुट्ठसेणिआपरिकम्मे ३ उगाढसे
णिआपरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणिआपरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे ६ चुआचुअ
सेणिआपरिकम्मे ७ से किं तं सिद्धसेणिआपरिकम्मे २ चउद्दसविहे पन्नत्ते तं जहा माउगापयाइं
१ एगट्ठिअपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआमासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगु
णं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ सेत्तं सिद्धसेणि
आपरिकम्मे से किं तं मणुस्ससेणिआपरिकम्मे २ मणुस्ससेणिआपरिकम्मे चउदसविहे पं तं

॥दिट्ठिवाइ दृष्टिवाद
इष्टइदीसउत
पउइत १ परि
कम्म १ सूत्रार्थ
गणितनया ७

माउयापयाइं एगट्ठिअपयाइं अट्ठपयाइं पाढोआमासपयाइं केउभूअं रासिबद्धं एगगु
णं दुगुणं तिगुणं केउभूअं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं मणुस्सावत्तं सेत्तं मणुस्ससेणि
आपरिकम्मे २ से किं तं पुट्ठसेणिआपरिकम्मे २ इक्कारसविहे पं तं पाढोआमासपयाइं के
उभूअं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूअं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं पुट्ठावत्तं
सेणिआपरिकम्मे ३ से किं तं उगाढसेणिआपरिकम्मे २ एगारसविहे पं तं पाढोआमासप ५
याइं केउभूअं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूअं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो
नंदावत्तं उगाढावत्तं सेत्तं उगाढसेणिआपरिकम्मे ४ से किं तं उवसंपज्जणसेणिआप
रिकम्मे २ इक्कारसविहे पं तं पाढोआमासपयाइं केउभूअं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगु
णं केउभूअं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं उवसंपज्जणावत्तं सेत्तं उवसंपज्जणसेणिआप
रिकम्मे ५ से किं तं विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे २ इक्कारसविहे पं तं पाढोआमासपयाइं केउ
भूअं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूअं पडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं विप्पजहण
वत्तं सेत्तं विप्पजहणसेणिआपरिकम्मे ६ से किं तं चुआचुअसेणिआपरिकम्मे २ इक्कारसविहे
पं तं पाढोआमासपयाइं केउभूअं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूअं पडिग्गहो संसार

विन्नप छिमधम्मोमंगलमुक्कट्ठंइत्यादि धम्मोक० धर्म मंगल० मांगलिक उक्कट्ठं उत्कृष्टं इमसुदा२ विवक्षा करतां सम।
मयसूर्वपाविद्धं संबंधः२ इनदी भिन्नकीजइ२ अभिघसुदार अर्थरहण अकरतां आजीवउ सूत्रपरिवाडी सूताइं० सूत्र।
सूत्रादि२२ सूत्र विछिदनया नसूत्र तेद नालद छिन्नछेयणाईयं२२ सूत्र पदच्छेद तिण० तेरासि जीवाजीव अनइ जीवा
जीवरूक दूइत्यादि सर्वकपरिपाटी बीससूत्र छिकनइ द्रव्यनइ पर्यायनिइ एविच्छन्नइ विचारता तेरासीआ जुमतघाडे।

पडिग्गहो नंदावत्तं चुआचुअवत्तं सेत्तं चुआचुअसेणिआपरिकम्मे ७ छचउक्कनइयाइं सत्त ते
रासियाइं सेत्तं परिकम्मे १ से किं तं सुत्ताइं सुत्ताइं बावीसं पन्नत्ताइं तं उज्जुसुयं १ परिणयापरिण
यं२ बहुभंगिसयं३ विजयचरियं४ अणंतरं५ परंपरं६ सामाणं७ संजूहं८ संभिन्नं९ आ
हच्चायं१० सोवत्थिघंटं११ नंदावत्तं१२ बहुलं१३ पुट्ठापुट्ठं१४ विआवत्तं१५ एवंभूअं
१६ दुआवत्तं१७ वत्तमाणप्पयं१८ समभिरूढं१९ सव्वओभद्दं२० पस्सासं२१ दुप्पडिग्गहं२२ इच्चे
इआइं बावीसं सुत्ताइं छिन्नछेअनइआणि ससमयसुत्तपरिवाडीए इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं अ
छिन्नछेयनयाइं आजीविअसुत्तपरिवाडीए इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइआणि तेरासि
असुत्तपरिवाडीए इच्चेइआइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइआणि ससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेव
सपुव्वावरेणं अट्ठासीइ सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइं सेत्तं सुत्ताइं २ से किं तं पुव्वगए पु० चउद्दसविहे
पं तं उप्पायपुव्वं१ अग्गेणीयं२ वीरिअं३ अत्थिनत्थिप्पवाइं४ नाणप्पवाइं५ सच्चप्पवायं६

नास्तिइतिपदद०लाप्र०५ नाणप्र० ज्ञाननालेद जिनापदकोडि१ घाटि०५ सच्चप्र० संयमरूढद नाम सत्य तानद जि
दांपदकोडि१ पद०६५ अधिक

नंदीसूत्र बाधक
ग्र० सर्व — वात्र
जांणिइं सर्वजाण
दिउ माणण०द्दला
पुमाणपद वरि
य० जीवाजीवन।
इ संजोगइ बाउति
षाबालवीर्य नष
२बालवीर्य पंडि
तवीर्य सिदपद।
३ अस्ति०जेव स्तु
लोकवइ धर्मा।
स्तिकायादिना।
स्ति निघरशृंगा
दि जमध्ये अघस
र्ववस्तु स्वरूपेण
स्ति पररूपेण।

चउपन्नारिनय
जिन२२ सूत्र अव
तारइ तेकहीसं
ग्रह२ विवहार
ऋजुसूत्र४ इम।
अवतारता सम
मयसूत्र परिवा
डी से किं० ताक
हा पूर्वसूत्रादि पू
र्वआचाराघआ
चारांग तेरणी
गणधार पूर्वमा
ह्या उप्पा० सर्व
द्रव्य सर्वपर्याय।
ने मध्ये ते स्फुटं
पणा धर पद
कोडि १ स

॥आ०उमध्येनाअनेकल्पेद्दजीवपद२६कोडि०७ कत्त०ज्ञानावरणादिकस्य नागादि विचार पद१ला४८०
सदस्य ०८ पच्च० पच्चक्खाण मूलगुणादिलक्ष्द पद८४लक्ष सर्व०९ विद्या० विद्यातिशय संपन्ना अत्र

आयप्पवायं७ कम्मप्पवायं८ पच्चक्खाणं९ विज्जाणुप्पवायं१० अवंझं११ पाणाउं१२
किरिआविसालं१३ लोकबिंदुसारं१४ उप्पायपुव्वस्सणं पुव्वस्स दस वत्थू चत्तारि चूलिआ
वत्थू पन्नत्ता अग्गेणीयपुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू दुवालस चूलिआवत्थू पन्नत्ता वीरिअपुव्वस्स णं
अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलिआवत्थू पन्नत्ता अत्थिनत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू दस चूलिआवत्थू
पन्नत्ता नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पन्नत्ता सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोन्नि वत्थू प
न्नत्ता आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पन्नत्ता कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं
वत्थू पन्नत्ता पच्चक्खाणप्पवायपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पन्नत्ता विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं प
न्नरस वत्थू पन्नत्ता अवंझपुव्वस्स णं बारस वत्थू पन्नत्ता पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पन्नत्ता कि
रियाविसालपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पन्नत्ता लोगबिंदुसारपुव्वस्स णं पणवीसं वत्थू पन्नत्ता दस चोद्द
स अट्ठ अट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि सोलस तीसा वीसा पन्नरस अणुप्पवायंमि १ बारस
इक्कारसमे बारसमे तेरसमे वत्थूणि तीसा पुण तेरसमे चोद्दसमे पणवीसा उ २ चत्तारि दुवा
लस अट्ठ चेव दस चेव चुल्लवत्थूणि आइल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिया नत्थि ३ सेत्तं पुव्वगए ३ से
किं तं अणुओगे २ दुविहे पं तं मूलपढमाणुओगे योगः मू० अर्हत्कोयमूलपद्मानुयो० गतीर्थकराणि

दे विशेष से किं० तेस्त
रू अनुजोगे अनु०अनु
रूलो वा वायोग अनु।
योगः सूत्रस्यास्तेनाल
ङ्यनसाकं मनुरूप:सं
बंध: स द्विविध मूलगं
डकानुयो गस्पदस्स
लेधर्मप ण यतानी
र्थक रा [illegible] सो पु
थमंस म काजानि
लक्षण प वेसबादि।
गोचरो नुयोगो मूलप
थमानुयोग पगंडिप्ड
क्षाकादीनां सर्वापरप
र्वपरिठिन्नो मध्यत्यागो
गंडिका गंडिके व गंडि।
का गंडिके व गंडिकानु

पुवदित साधनानुकू।
ल्पेन सिद्धप्रकार्षणव
दतीति पद१०कोडि१
लक्ष१० अवंझं० सर्व
का धनानां फल वइजेम
ध्ये पद२६ कोडि११ पा
णाउ१२ प्रा णआउजी
वनाप। क ३रूप।
णा प [illegible] त्र पद१
कोडि५ ६ लाख१२
किरि०का यक्रादि सं
यमक्रिया पद९ कोडि
१ १३ बिंदु० सर्वशास्त्र
विषयरूप रिबिंदु स
मे प्रधान सर्वक्षर२५
संनिपातं पद१२कोडि
सर्व१४ वस्तु०ग्रंथ विछे

नंदी सू॰ प॰ वा॰ ५४

चूला ४ द्वचूला त्रीयर
सुब्बातयद्धामेरेचूला
तत्रचूला ८ वचूला ३४
वादयो चउपूर्व्वनइ
चूला॥

गंडिआणुओगे य॥ से किं तं मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलो
गगमणाइं आउं चवणाइं जम्मणाणि अ अभिसेआ रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ तवा य उग्गा
केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि अ सीसा गणा गणहरा अज्जापवत्तिणीओ संघस्स चउ
व्विहस्स जं च परिमाणं जिणमणपज्जवओहिनाणी सम्मत्तसुयनाणिणो अ वाई अणुत्तरगइ
इ अणुत्तरविउव्विणो अ मुणिणो जत्ति आ सिद्धा सिद्धिपहे जह देसिओ जच्छिरं च कालं पाओव
गया जे जहिं जत्तिआइं भत्ताइं छेइत्ता अंतगडे मुणिवरुत्तमे तमरओघविप्पमुक्के मु
क्खसुहमणुत्तरं पत्ते एवमाइअ॰ वमाइ भावा मूलपढमाणुओगे कहिआ से तं
मूलपढमाणुओगे ४ से किं तं गंडिआणुओगे गंडिआणुओगे कुलगरगंडिआओ तित्थ
यरगंडिआओ चक्कवट्टिगंडिआओ दसारगंडिआओ वासुदेवगंडिआओ गणधरगंडिआओ भद्द
बाहुगंडिआओ तवोकम्मगंडिआओ हरिवंसगंडिआओ उस्सप्पिणिगंडिआओ चित्तंतरगं
डिआओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविह परियट्टणाणुओगेसु एवमाइआओ आ
घविज्जंति पण्णविज्जंति से तं गंडिआणुओगे से तं अणुओगे ४ से किं तं चूलिआओ चूलिआ
ओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिआ सेसाइं पुव्वाइं अचूलिआइं से तं चूलिआओ ५ दिठ्ठवा

पुव्वभवभवादिआवसा
ह्वविवरणं॥ब॥
अद्ध (कायं गंडिकानु
योग अनु॰ कुलगर
उस्सप्पिणी ओसप्पिणी
मध्यवर्त्तीरतनणीमध्य
वर्णामी चि त्रंतर॰ वि
विज्ञनी ई करकू
पत्र दि मो क्रूर
वंसव (द वलोक
च्या उत्र नीउक्ष्मा
दितऊपाद्याऊवतस
गरउत्रसुबऊलगइज
मोक्षच्या अनुत्तरगया
(तदना विवारणाविवि
क्लाति ५४ से किं तं
चूला॰ तं किंदी

यस्सणं परित्ता वायणा संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ पडि
वत्तीओ संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ से णं अंगठ्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयखं
धे चउद्दसपुव्वाइं संखिज्जा वत्थू संखिज्जा चुल्लीआ वत्थू संखिज्जा पाहुडा संखिज्जा पाहुडपाहुडा
संखिज्जाओ पाहुडिआओ संखिज्जाओ पाहुडपाहुडिआओ संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं सं
खिज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा परित्ता तसा अणंता थावरा सासयकडनिबद्धनि
काइआ जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति प न्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति
उवदंसिज्जंति से एवं आया एवं नाया ए वं विन्नाया एवं चरणकरणपरूवणा आघवि
ज्जंति से तं दिठिवाए १२ इच्चेयंमि दुवाल संगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा
अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा
अणंता भवसिद्धिआ अणंता अभवसिद्धिआ अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पन्नत्ता संगहणिगा
हा भावमभावा हेऊ महेऊ कारणमकारणे चेव जीवाजीवा भविअ मभविअ सिद्धा असिद्धा य
१ इच्चेइअं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतं संसारकं
तारं अणुपरिअट्टिंसु इच्चेइअं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पन्नकाले परित्ता जीवा आणाए विराहि

अनं॰ जीवादि
अनंतभावप
उपेक्षाइं। अन
वि॰ हेउ॰ अर्था
दिग्रहणकारण
॰क्रीडाघटद्भुत
कामयपणिन
दूंमसनद अ
नंतालव्यमनादि
स्वलावीमोरूग
मनयोगप नदा
विपरीताइलच्य

नंदी सूत्र पत्र ४५
सुवर्णस्याप्यत्वता
निश्च० महावर्त्त
त सर्व नाम॥

डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक
DR. BHAU DAJI MEMORIAL

॥आणा० सूत्रं। जिनस्याप्यनंतरा विपरीत जमालीवत्। आज्ञा युक्तप्ररूपणाभी विपरीतता वइते। तिमञ्च वविप
त्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरिअट्टंति इच्चेइअं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणं
ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरिअट्टिस्संति इच्चेइअं दुवालसंगं
गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं वीईवइंसु इच्चेइयं
दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पन्नकाले परि त्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंता
रं वीईवयंति इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपि डगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आरा
हित्ता चाउरंतसंसारकंतारं वीईवइस्सं ति इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कया
इ नासी न कयाइ न भवइ न कयाइ न भवि स्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे निअए
सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे से जहा नामए पंचत्थिकाया न कयाइ नासी न कया
इ नत्थि न कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे निअए सासए अक्खए अव्वए अ
वट्ठिए निच्चे एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि न कयाइ न भवि
स्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे निअए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे से समा
सओ चउव्विहं पन्नत्तं तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ तत्थ दव्वओ णं सुअनाणी सव्व दव्वाइं

रानत्वाद्गोष्ठा
माह्लादिवत् वि
षतइत्यपरि-
-- ध्यानात्रका
लता- नह्रीत।
त्वाीऽकयान्न
वि० ठकुवा पञ्च
ऽत्रकालधुवमे
रवत् सर्वाम
-मिति० निश्चा
ध ३ रव० पञ्च
स्वतत्रसरवयवा
वृतान्तरवावता
पञ्चव० पञ्चवि
ना ४५ सी अ
व० अटा।
द्वी पवाद्दिरस

आस्त्रेतिशिष्यते तेने
नतिशास्त्रं आगमग्र
हणनषष्टं तंतादिक्रु।
शास्त्रविवाहदंतषांय
थावस्थितार्थ प्रकाशना
त्वावतो नागम चात् आ
गमशास्त्र स्यग्रहण
रनागम शास्त्रग्र
हणं य बु द्धि गुणे
र्वक्ष्यमाणे का रणभू
तैरष्टभिर्दृष्टं इष्टं वय
दर्णि श्रुतं ज्ञानस्य लाभं
तु वेत पूर्वेषु विसारदा
विपश्चित धीराः व्रतप
रिपालने स्थिराः कि।
मुक्तं भवति यदेव जि
नप्रणीत प्रवचनार्थ

श्रुतज्ञाननामधणी इत्यर्थी उपयुक्तः सर्वद्रव्याणि जानाति पश्यति तस्य इत्यर्थी सर्वद्रव्यत उपणि श्रुतज्ञाने जाणं सर्वत्तद।
ईदा सर्वा जाणइ क्रतं तांदोषन्दी तत्थाइं शास्त्र इ नरगादि जाणणा तद अयुक्त आलषी दषाउ इत्तदादीग कदीज।
नस्वानरगादिदषइ तलणी नन्नतिदो सर्वद्रव्यादि क्रुणजाणइ १४ पूर्वधरी नत्था १० पूर्वधरी दव्वाउ भाकुइत
जाणइ न जाणाइं आदेसर्मिक्रत्व चारउ पुणजसुयनाणी तस्सद्व दव्वनाणपासणासु तई आनायस्तयणा सई
विमसातीजाणियावत्ति १ सांप्रतिमंग्रहणगाथामाद अस्करत्ता रिगाधार्थ ७ प्रत्यवरूजसपत्तएवं १५० अनु
जाणइ पासइ खित्तओ णं उवउत्ते सुअ नाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ कालओ णं उव
उत्ते सुअनाणी सव्वं कालं जाणइ पास इ भावओ णं सुअनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जा
णइ पासइ अक्खर सन्नी सम्मं साइ अं खलु सपज्जवसिअं च गमिअं अंगप
विट्ठं सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ आगम सत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं बिं
ति सुअनाणलंभं तं पुव्वविसारया धीरा ॥ सुस्सूसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिण्हइ अ ईहए वा वि
परिज्ञानं तद्दवप्रमार्थतः श्रुतज्ञानं तच्चोपमिति बुद्धिगुणयुक्तैरष्टभिरीत्युक्तं ततस्तान् वबुद्धिगुणा
नाह। सुस्सूष० सर्वमिति युक्तं गुरुमुखवाक्यनीकरूपात् तस्मान्निक्षितवीतइ। जस्मां तत्तदातपदि० जिटांग्रांका
उप० उईतवली विनयपरिसांतलितं तस्रवइ गुरुनइ हषितपानत प्रच्छितं त्तत शब्दतासा वर्धन०काग्रइं।
सांतल्लइतम्नुणइ० सांतलितं त गिरह० अर्थादि ग्रहइ अत्थ्याई० पूर्वापर अविरुध पणि आलावइ
वः शाहसमुच्चयार्थः अपि शाहपर्यालोचनसूचवधिड॥

ज्ञाननामस्वंचितिरा
यस्कृतस्कुकारा।
आइइत्युत्पदीलास
तशितुनापुसांपद
त्राज्ञानावत्युलाल
तादष्टादइइ आ०
अनिवि मिनामक
लक्षत वि पयद्या
मिद्र ० ० मर्मा
दायावा या वायगा
वहितन्तर रूपणाक
०गम्यतनपरिविद्यते।
यलपद्ञागमः सवि
वयुतयाअस्य मितेव
लादिलहणाजितवंति
ततलत्रव्रदार्थमा
६ विशाप णार्थ सत्र०।

श्रवणेनुग्रहीतःश्वा
परस्पराद्विशायोमना
कपतिष्ठतोऊर्यावक
थमनदिति वीमंसा॰
क्विारणोकर्मति न
तो॰पृष्टिश्रवणेनउत्त
रोत्तरगुण प्रसंगपा
रा॰पार ग मनेंवा
स्याऊ व ति परि
॰ततः स संमेश्र
वणेपरि निष्टागुरु
वदनुभाषिते एवंसम
मेश्रवणेइतिलावण।
सांलत्वानवविचार
कछितुसांप्रतिव्याख्या
रनविधिमभिधित्सु
राह सुतत्थ॰आनार

ततो॰ततः पर्यालोचनानंतरं अपोहते एवमेतद्यदादिष्टमाचार्येणानान्यथा तत्पश्चात् यतिकारं करोति त्वप

तत्तोअपोहएवा धारइकारइवासम्मं ३ मूअंहुंकारंवा बाढकारपडिपुच्छवीमंसा
तत्तोपसंगपारायणंच परिणिट्ठसत्तमए ४ सुत्तत्थोखलुपढमो बीओनिज्जुत्तिमीसओभण-
िओ तइओयनिरवसेसो एसविहीहोइअणुओगे ५ सेत्तंअंगपविट्ठं सेत्तंसुअनाणं
सेत्तंपरोक्खनाणं ६ सेत्तंनंदीसमत्ता। ७ सेकिंतंअणुन्ना अणुन्नाछव्विहापन्नत्ता तं।
जहा नामाणुन्ना १ ठवणाणुन्ना २ दव्वाणुन्ना ३ खित्ताणुन्ना ४ कालाणुन्ना ५ भावाणु-
न्ना ६ सेकिंतंनामाणुन्ना नामाणुन्ना जस्सणंजीवस्सवा अजीवस्सवाजीवाणं
वा अजीवाणंवा तदुभयस्सवा तदुभयाणंवा अणुन्नत्तिनामंकज्जइ सेत्तंनामा-
णुन्ना सेकिंतंठवणाणुन्ना ठवणाणुन्ना जण्णंकट्ठकम्मेवा पोत्थकम्मेवा लिप्पकम्मेवा
चित्तकम्मेवा गंथिमेवा वेढिमेवा पूरिमेवा संघाइमेवा अक्खेवा वराडएवा एगओवा अणे-
गओवा सब्भावठवणाएवा असब्भावठवणाएवा अणुन्नत्तिठवणाठविज्जइ सेत्तंठवणाणु-

असमर्थऊहतउत्थाद्यार्थउक्तद्विवउ बीयो॰ तिउक्तंकरइ ज्ञाधरणाद्यारजुहउऊहजुतेमिश्रकरोइ तइउ
॰त्रात्तुअनयोगजेसमस्तअर्थनिर्युक्त्यादिकही रसपरमार्थकहइ पपारात्श्रुतज्ञान॥

माकृयथोक्तानुष्टानं।
यथोक्तानुष्टानमपि
श्रुतज्ञानप्राप्तिहेतु
दावरणकर्मक्षया
पशमनिमित्तत्वात् त
दवेयुणाव्याख्याताः
सांप्रतिय तस्युश्रुप
तद्यु क तनश्रु
श्रव ण वि धिमा
हसुये ॰ प्रथम।
सांत्रस। नोसेयन
गाभ्रूत्परणइवइ।
सहहुंकारं॰अथादि
रूं ४६ कारउयइ
वा ढं॰॰छ्रत्प
घानही इमाविचारोक
टइ पडि॰ ततःचतुर्थ

ण्णा नामठवणाणंकोपइविसेसो नामंआवकहियं ठवणाइत्तरिआवाहुज्जा आवकहिआवा
हुज्जा सेकिंतंदव्वाणुण्णा २ दुविहापन्नत्ता तंजहा आगमओअ नोआगमओअ सेकिंतंआगमओद-
व्वाणुण्णा आगमओदव्वाणुण्णा जस्सणंअणुन्नत्तिपयंसिक्खिअंठिअंजिअंमिअं परिजिअं नामसमं
घोससमं अहीणक्खरं अणच्चक्खरं अव्वाइद्धक्खरं अक्खलिअं अमिलिअं अवच्चामेलिअं प-
डिपुन्नघोसं कंठोट्ठविप्पमुक्कं गुरुवायणोवगयं सेणंतत्थवायणाए पुच्छणाए परिअट्टणाए
धम्मकहाए नोअणुप्पेहाए कम्हा अणुवओगो दव्वमितिकट्टु नेगमस्सणंएगोअणुवउत्तो आग-
मओएक्कोदव्वाणुण्णा दुन्निअणुवउत्ता आगमओदुन्निदव्वाणुण्णाओ तिन्निअणुवउत्ता आग-
मओतिन्निदव्वाणुण्णा एवंजावइआअणुवउत्ता तावइआओदव्वाणुण्णाओ एवमेवववहारस्स
वि संगहस्सएगोवा अणेगोवा उवउत्तावा अणुवउत्तावा दव्वाणुण्णावा दव्वाणुण्णाउवा साएगा।
दव्वाणुण्णा उज्जुसुअस्सएगोअणुवउत्तो आगमओएगादव्वाणुण्णा पुहुत्तंनेच्छइ तिण्हंसद्दनयाणं
जाणए अणुवउत्तेअवत्थू कम्हा जइजाणइअणुवउत्तेनभवइ जइअणुवउत्तेजाणएनभवइ से-
त्तंआगमओदव्वाणुण्णा सेकिंतंनोआगमओदव्वाणुण्णा २ तिविहापं॰तं॰ जाणगसरीरदव्वाणुण्णा भवि-

असरीरदव्वाणुन्ना य। जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ता दव्वाणुन्ना। से किं तं जाणगसरीरदव्वाणुन्ना। जाणगसरीरदव्वाणुन्ना अणुन्न त्ति पयत्थाहिगारं जाणगस्स जं सरीरं ववगयचुयं चावियचत्तदेहं जीवविप्पजढं सिज्जागयं वा संथारगयं वा निसीहिआगयं वा सिद्धसिलागयं वा। अहो णं इमेणं सरीरं समुस्सएणं अणुन्न त्ति पयं आघवियं पन्नवियं परूवियं दंसियं निदंसियं उवदंसियं जहा को दिट्ठंतो अयं घयकुंभ आसी अयं महुकुंभ आसी। से तं जाणगसरीरदव्वाणुन्ना। से किं तं भवियसरीरदव्वाणुन्ना। जे जीवे जोणीजम्मणनिक्खंते इमेणं चेव सरीरसमुस्सएणं आइन्नेणं जिणदिट्ठेणं भावेणं अणुन्न त्ति पयं सेयकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ जहा को दिट्ठंतो अयं घयकुंभे भविस्सइ अयं महुकुंभे भविस्सइ। से तं भवियसरीरदव्वाणुन्ना। से किं तं जाणगसरीरभविअसरीरवइरित्ता दव्वाणुन्ना। जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्ता दव्वाणुन्ना तिविहा पन्नत्ता तं जहा लोइआ लोउत्तरिआ कुप्पावयणिआ य। से किं तं लोइआ दव्वाणुन्ना। लोइआ दव्वाणुन्ना तिविहा पं तं सचित्ता अचित्ता मीसिआ। से किं तं सचित्ता। सचित्ता से जहानामए राया ई वा जुवराया ई वा ईसरे वा तलवरे वा माडंबिए इ वा कोडुंबिए इ वा।

इब्भे इ वा सेट्ठी इ वा सत्थवाहे इ वा सेणावई वा कस्सइ कम्मि कारणे तुट्ठे समाणे आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणं वा खरं वा घोडयं वा एलयं वा अयं वा दासं वा दासिं वा अणुजाणिज्जा। से तं सचित्ता। से किं तं अचित्ता। अचित्ता से जहानामए राया इ वा जुवराया ई वा ईसरे इ वा तलवरे इ वा कोडुंबिए इ वा माडंबिए इ वा इब्भे इ वा सत्थवाहे इ वा सेट्ठी इ वा कस्सइ कम्मि कारणे तुट्ठे समाणे आसणं वा सयणं वा छत्तं वा चामरं वा पट्टं वा मउडं वा हिरन्नं वा सुवन्नं वा कंसं वा दूसं वा मणिमुत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाईयं संतसारसावइज्जं अणुजाणिज्जा। से तं अचित्ता दव्वाणुन्ना। से किं तं मीसिआ दव्वाणुन्ना। मीसिआ दव्वाणुन्ना से जहानामए राया इ वा जुवराया इ वा ईसरे इ वा तलवरे इ वा माडंबिए इ वा कोडुंबिए इ वा इब्भे इ वा सेट्ठी इ वा सेणावई इ वा सत्थवाहे इ वा कस्सइ कम्मि कारणे तुट्ठे समाणे हत्थिं वा मुहभंडगमंडियं आसं वा थासगचामरमंडियं सकडयं दासं वा दासिं वा सव्वालंकारविभूसियं अणुजाणिज्जा। से तं मीसिआ दव्वाणुन्ना। से तं लोइआ दव्वाणुन्ना। से किं तं कुप्पावयणिआ दव्वाणुन्ना। कुप्पावयणिआ दव्वाणुन्ना तिविहा पं तं सचित्ता अचित्ता मीसिआ। से किं तं सचित्ता। सचित्ता से जहानाम

ए आयरिए वा उवज्झाए वा कम्हइ कम्मि कारणे तुट्ठ समाणे आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणं वा
खरं वा घोडं वा अयं वा एलगं वा चलयं वा दासं वा दासिं वा अणुजाणिज्जा से त्तं सचित्ता कुप्पाव
णिआ दव्वाणुण्णा से किं तं अचित्ता अचित्ता से जहानामए आयरिए वा उवज्झाए इ वा कम्हइ क
म्मि कारणे तुट्ठ समाणे आसणं वा सयणं वा छत्तं वा चामरं वा पट्टं वा मउडं वा हिरण्णं वा सुवण्णं
वा कंसं वा दूसं वा मणिमुत्तिअसंखसिलप्पवालरत्तरयणमाइअं संतसारसावएज्जं अ
णुजाणिज्जा से त्तं अचित्ता कुप्पावणिआ दव्वाणुण्णा से किं तं मीसिआ कुप्पावणिआ द
व्वाणुण्णा मीसिआ से जहानामए आयरिए इ वा उवज्झाए इ वा कम्हइ कम्मि कारणे तुट्ठस
माणे हत्थिं वा मुहभंडगमंडिअं आसं वा थासगचामरमंडिअं सकडच्छं दासिं वा सव्वालंकारवि
भूसिअं अणुजाणिज्जा से त्तं मीसिआ कुप्पावणिआ दव्वाणुण्णा से त्तं कुप्पावणिआ दव्वाणुण्णा से
किं तं लोउत्तरिआ दव्वाणुण्णा लोउत्तरिआ दव्वाणुण्णा तिविहा पं० तं० सचित्ता अचित्ता मीसिआ से किं
तं सचित्ता सचित्ता से जहानामए आयरिए इ वा उवज्झाए इ वा पवत्तए इ वा थेरे इ वा गणाव
च्छेअए इ वा सीसस्स वा सिस्सिणीए इ वा कम्मि कारणे तुट्ठ समाणे सीसं वा सिस्सिणीइ वा अ

णुजाणिज्जा से त्तं सचित्ता से किं तं अचित्ता अचित्ता से जहानामए आयरिए इ वा उवज्झाए इ वा प
वत्तए इ वा थेरे इ वा वत्थं वा पायं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा अणुजाणिज्जा से त्तं अचि
त्ता से किं तं मीसिआ से जहानामए आयरिए इ वा उवज्झाए इ वा पवत्तए इ वा थेरे वा गणावच्छेयए
इ वा सिस्सस्स वा सिस्सिणीए वा कम्मि कारणे तुट्ठ समाणे सिस्सस्स वा सिस्सिणीअं वा सभंडम
त्तोवगरणे अणुजाणिज्जा से त्तं मीसिअं से त्तं लोगउत्तरिआ से त्तं जाणगसरीरभविअसरी
रवइरित्ता दव्वाणुण्णा से त्तं नोआगमउ दव्वाणुण्णा से त्तं दव्वाणुण्णा खित्ताणुण्णा जो णं जस्स
खित्तं अणुजाणइ जत्तिअं वा खित्तं जम्मि वा खित्ते से त्तं खित्ताणुण्णा से किं तं कालाणुण्णा
जो णं जस्स कालं अणुजाणइ जत्तिअं वा कालं अणुजाणइ जम्मि वा काले अणुजाणइ तं तीतं
पडुप्पन्नं वा अणागतं वा वसंतं हेमंतं पाउसं वा अवत्थाणहेउं से त्तं कालाणुण्णा से किं तं भावा
णुण्णा भावाणुण्णा तिविहा पं० तं० लोइआ कुप्पावणिआ लोगुत्तरिआ से किं तं लोइयं भावाणुण्णा से
जहानामए राया इ वा जुवराया इ वा जाव तुट्ठ समाणे कस्सइ कोहाइ भावं अणुजाणिज्जा से त्तं
लोइआ भावाणुण्णा से किं तं कुप्पावणिआ भावाणुण्णा कुप्पावणिआ से जहानामए केइ आयरिए इ वा

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

B.O. 21

जावकस्स विकोदाइसावंअणुजाणुज्जा । सेतंऊप्पावणिआसावाणुन्ना । सेकिंतंलोयुत्तरिया सावाणु
णा । लोयुत्तरियासावाणुणा । सेजहानामए । आयरिएइवा । जावकुग्घिकारणेइवा । उछसेमाणे । काला
विछनाणगुणे । जोगिणोविणियस्स । खमाइएहाणस्स । सुसीलस्स सिस्सस्स । तिविहेणंतिकरणविस
धेणंसावणं । आयारंवा । सूयगडंवा । ठाणंवा । सम वायंवा । विवाहपन्नतिंवा । णायाधम्मकहाणंवा । उ
वासगदसाओअंतगडदसाओवा । अणुत्तरोव वाइयदसाओवा । पण्हावागरणंवा । विवागसु
वा दिठीवायंवा । सब्बदब्बगुणपज्जावंदि । स ब्वाणुजगदिंवा । अणुजाणिज्जा । सेतंलोगुत्त
रिआसावाणुन्ना । सेतंसावाणुन्ना । ७ । किमणुन्न कस्सणुन्ना । कवइआकालपवत्तिआणुन्ना । आ
इगरपुरिमतालपवत्तिआगसदहसेणस्स । १ । अ णुन्ना १ उन्नमणी २ नमणी ३ नामणी ४ ववगेय ५
सावद्द ६ पभावणं ७ पयारो ८ तदुभयहिअं ९ मज्जाया १० नाउ ११ मग्गोय १२ कप्पोअ १३ य सं
गह १४ संवर १५ निज्जर १६ ठिइकरणंचेव १७ जीववुद्दिपयं १८ पय १९ पवरंचेव २० नदावा
संमणुन्नाइं नामाइं ८ । इतिश्रीनंदीसूत्रंसमाप्तं ॥ ७ ॥ ॥ संवत१६८०वर्षे चैत्रवदि ६ रवौ ॥ ७ ॥ ॥ ण ॥

सा·प्रेमजी मद्धि पालनी प्रति ॥

बाईगंगाई बाईप्रांजी
ली

MEMORIAL
स्मारकम्

२४४०